NIT Raipur Efforts - Magazine_c

जीवन-विद्या विधि से

# शिक्षा में एक अभिनव प्रयोग

(अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन से निष्पन्न)

Technical Education in the Light of Universal Values

2006

# समाधान

## सार्वभौम मूल्यों के प्रकाश में तकनीकी शिक्षा

## Technical Education in the Light of Universal Values

अभ्युदय संस्थान
(मानव में सर्वोतोमुखी समाधान के लिए प्रतिबद्ध)
अठोटी, दुर्ग (छत्तीसगढ़)

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (NIT)
(पूर्व शासकीय इंजी. महाविद्यालय)
रायपुर (छत्तीसगढ़)

महामहिम राष्ट्रपति भारतरत्न ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी संस्थान,रायपुर आगमन पर सादर समर्पित : 7 नवम्बर 2006

# शिक्षा में एक अभिनव प्रयोग

राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी संस्थान के छात्रों का समूह
जीवन विद्या शिविर हेतु सिध्द मसूरी में ।

प्राथमिक शाला, मुरमुंदा (दुर्ग) में
राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी संस्थान के विद्यार्थी

तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश हेतु प्रयोग स्थली
राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी संस्थान, रायपुर

मानव में सर्वतोमुखी समाधान के लिए प्रतिबद्ध
अभ्युदय संस्थान, अछोटी (दुर्ग)

शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय,जगदलपुर के विद्यार्थीयों द्वारा सामाजिक जागरण अभियान।

NIT Raipur Efforts - Magazine_c

Technical Education in the Light of Universal Values

## एक नजरिया - निष्कर्ष

तकनीकी शिक्षा में मूल्य शिक्षा चेतना विकास के अर्थ में उत्साहित एवं प्रयोगशील होती हुई गतिविधियों को देखते हुए मैं प्रसन्नता व्यक्त कर रहा हूँ। यह प्रयास केवल छत्तीसगढ़ अथवा केवल भारत देश की सीमा में ना होकर, धरती पर जीते हुए सर्वमानव के लिये सर्वशुभ मार्ग की ओर दिशा को स्पष्ट करने में समर्थ हैं। इसमें मेरा विश्वास है। इसे किसी भी समुदाय और क्षेत्र की सीमा में ना बांधते हुए सर्वशुभ के अर्थ में उदारता से संपन्न कर तकनीकी शिक्षा संस्थान प्रयोग पूर्वक प्रमाण प्रस्तुत करेगा ऐसा मैं विश्वास करूँगा।

आदिकाल से सर्वमानव शुभ चाहने वाला है। शुभ स्वरूप के संदर्भ में धरती का मानव अनेक प्रकार से सोचा है इसका प्रमाण अनेक समुदायों के रूप में वर्तमान है। अत्याधुनिक विचारों के अनुसार अनेकता में एकता सूत्र आवश्यक होना और प्रमाण प्रकट करने की अपेक्षा व्यक्त हो रही है। यह आशय भले ही दबे स्वर में हो इस आशय के संदर्भ में मेरा ध्यान धरती बीमार होने की ओर अग्रसर हुआ। आगे आने वाली मानव पीढ़ी के लिये धरती को रहने योग्य कैसे बनाये इसके उत्तर में सर्वमानव का अपराध मुक्त (सही समझ) होना ही एक मात्र रास्ता है। इस उद्देश्य के लिए चेतना विकास की आवश्यकता हैं। मैंने जीव चेतना से मानव चेतना को श्रेष्ठ, मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर, देव चेतना से दिव्य चेतना को श्रेष्ठतम रूप में समझा। इन चेतनाओं में अपराध मुक्त, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रूपी परम सत्य सहज परंपरा के रूप में मानव सुरक्षित एवं निरंतर सर्वशुभ उदय होने के रूप मे मैंनें पहचाना। यह आगे पीढ़ी में पूरा हृदयंगम होने, व्यवहार में प्रमाणित होने के लिए ही अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन 'मध्यस्थ दर्शन' सह-अस्तित्ववाद मानव सम्मुख प्रस्तुत हो गई है। इसमें पारंगत होते हुए अग्रिम पीढ़ी निरंतर सुखी हो यही मेरा आर्शीवाद है।

**अग्रहार नागराज**
प्रणेता लेखक
अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन
07629-269407,09425344128
अमरकंटक (म.प्र.)

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## अनुक्रम


**Jeevan Vidya experience** 6
Dr.A.P.J. Abdul kalam

**निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें** 7
प्राध्या.मुकुन्द हम्बर्डे (प्रभारी निदेशक)
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर

**संस्कार की यात्रा** 8
डॉ. डी.एस. बल
पूर्व प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी संस्थान, रायपुर

**मूल्य शिक्षा-हमारी अनिवार्य प्राथमिकता** 10
सच्चिदानंद जोशी (कुलपति)
कु.ठा. पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय

**सार्वभौम मूल्य** 11

**जीवन विद्या शिविर** 13
एक परिचय

**राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर एवं छत्तीसगढ़ तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश हेतु अब तक हुए प्रयास** 16

**राष्ट्रीय शिक्षा नीति और मूल्य शिक्षा** 19

**National Institute of Technology, Raipur** 21

**The Chhattisgarh Swami Vivekanand Technical University, Bhilai** 22

**Role of Value Education in Technical Institute** 24
Ashok Gadewal
Principal, Govt. Eng. College, Bilaspur

**मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग** 25
व्ही. एन. सिंह
पूर्व प्राचार्य, शा.इं. महा. जगदलपुर

**Jeevan Vidya as a part of Academic Curriculum** 26
Dr. Rajeev Sangal
Director, IIIT Hydrabad

**Introducing Value Education in Technical Institutions** 28
Dr. R.R. Gaur
Head NRCVEE, IIT Delhi.

**A self-empowering paradigm shift** 30

**मध्यस्थ दर्शन** 31
वर्तमान शिक्षा के संदर्भ

**अभ्युदय संस्थान** 34
अछोटी (दुर्ग)

**मानवीय शिक्षा संस्कार संस्थान** 37
कानपुर

**सत्यम** 38
रायपुर

**सिद्ध (Sidh)** 39
मसूरी

**वर्तमान संकट और मानवीय व्यवस्था हेतु अभियान** 40
डॉ. रणसिंह आर्य

**Technology for Swarajya** 46
Late Y.S. Satya, IIT Delhi

**Summary of the Meeting with the President at Hyderabad** 52

**चेतना विकास का अध्यन तथा कार्यक्रम** 54

**सह अस्तित्व नित्य प्रभावी** 55

**समाधान** 56
Centre of Education in Universal Values

**ए. नागराज-एक परिचय** 62
प्रणेता एवं लेखक
अस्तित्व मूलक मानव केंद्रित चिंतन

**सम्पर्क सूत्र** 63

**सर्व शुभ के अर्थ में आह्वान** 64




www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

NIT Raipur Efforts - Magazine_c


## समाधान की ओर सतत् यात्रा ...

Technical Education in the Light of Universal Values

एक बच्चे की सपनों की दुनिया, जहाँ परियों की कहानियाँ है, जहाँ उसकी हर चाहत पूरी होती है, लेकिन जैसे-जैसे वह किशोर अवस्था में प्रवेश करता है सपनों के महल टूटना शुरु होते हैं। वह देखता है कि उसके अपने ही पारिवारिक संबंधों में तालमेल बहुत संतोषजनक नहीं है, समाज में बहुत सारी बुराईया है, एक बड़ा भाग बहुत गरीब है, जिन्हें शिक्षा उपलब्ध नहीं है, समाज में भ्रष्टाचार है। कक्षा 11-12वीं में ये कुछ दोस्त आपस में चर्चा करते हैं कि हम बड़े होकर गरीबी, भ्रष्टाचार को कम करने के लिए कुछ जरूर करेंगे और एक बेहतर समाज बनायेंगे। इसके साथ ही सभी उच्च शिक्षा की ओर चल देते हैं। लगभग 10 वर्ष बाद मिलते हैं, सभी शादीशुदा हैं और भिन्न-भिन्न क्षेत्रों जैसे इंजीनियरिंग, मेडिकल, प्रशासनिक, व्यापार, उद्योग आदि में उपलब्धियों सहित है लेकिन जिन समस्याओं को ठीक करने की चर्चा वे करते थे, आज जाने-अनजाने वे भी उसी का हिस्सा हो गये हैं और जो उपलब्धियाँ हासिल की है ये अब उतना सुख नहीं देती है जितना इनकी कल्पनाओं ने दिया था। वे फिर चर्चा करते हैं, किसी ने कहा कुछ नहीं बदल सकता, ये ऐसे ही चलेगा, किसी ने कहा पहले आर्थिक रूप से सुरक्षित हो जाएं फिर सोचेंगे। किसी ने कहा परिवार के साथ यह सब संभव नहीं। इस प्रकार चर्चा ठहर जाती है।

लेकिन एक के मन में अर्न्तद्वन्द जारी है ।

- क्या कुछ धन कमा लेने का नाम ही जिंदगी है? ... क्या हम इन परिस्थितियों में जिन्दा लाश बन कर जीने के लिए मजबूर हैं? ... क्या इस बोझिल यन्त्रवत दिनचर्या का नाम ही जिन्दगी है? ... क्या शादी करना इतना बड़ा अपराध है कि अपनी अर्न्तआत्मा को मारकर जीना होगा? ... क्या पत्नि केवल सुख की ही साथी है?... धन, पद और विशेषता मानव की वास्तविक, स्थायी पहचान नहीं हो सकती।

फिर मानव की अपनी स्थायी पहचान क्या है? उसके जीने का मकसद क्या है? मानव जीवन का मूल्य क्या है? कहाँ है वो खूबसूरत, गरिमामय, उत्सवपूर्ण जिन्दगी का राजमार्ग या यह केवल एक कोरी कल्पना है।

ऐसी स्थिति में अब दो ही विकल्प है या तो जिन्दा लाश बनकर जिया जाए या उस उत्सवपूर्ण जीवन के रास्ते की तलाश हेतु दांव लगाया जाए, तय होने में देर नहीं लगी क्योंकि खोने के लिए कुछ था ही नहीं, जिसके होने का भ्रम था वह टूट चुका था। क्या किया जाए?

मन में कहीं पहले से बसा हुआ था कि हमारा देश गाँवों का देश है, इसकी आत्मा गाँवों में रहती है। अपने भीतर एक आत्मिक तृप्ति की तलाश थी लेकिन आत्मा का पता न था इसीलिए एक विश्वास बना कि शायद देश की आत्मा के लिए काम करने से अपनी आत्मा में तृप्ति की प्यास पूरी हो सके । नौकरी छोड़कर महानगर के पास के गाँवों में काम करना शुरु किया तो पता चला कि गरीबी, भ्रष्टाचार की जड़े लोगों की मानसिकता में हैं। साधनों की कमी नहीं है, समझ में कमी के कारण या तो साधनों का दुरुपयोग है या उपयोग ही नहीं हो पा रहा है। यह भी स्पष्ट हुआ कि विकास के लिए सरकारी धन लेते ही सामाजिक सहयोग घटने लगता हैं। क्या किया जाए? कैसे किया जाए?

निष्कर्ष निकला कि लोगों की आज की मनस्थिति से जूझने की योग्यता हमारे पास नहीं है। गाँवों की गरीबी दूर करने चले थे, खुद ही गरीबी के शिकार हो गये हैं। देश की समस्याओं के समाधान ढूँढ़ने चले थे, पारिवारिक और संस्थागत समस्याओं में उलझ कर रह गये हैं।

फिर एक ऐसे क्षेत्र की तलाश शुरू हुई जहाँ वर्तमान योग्यता के अनुसार सार्थक जीवन जिया जा सके। यह तलाश दिल्ली से बस्तर ले आयी। इसी क्रम में अमरकण्टक में एक अभूतपूर्व व्यक्तित्व आदरणीय श्री ए. नागराज से मिलने का संयोग बना। अभूतपूर्व इस अर्थ में कि उनके द्वारा हुए अनुसंधान -मध्यस्थ दर्शन- से धरती के 700 करोड़ लोगों के समस्त प्रश्नों का व्यवहारिक, सार्वभौम, रहस्यमुक्त एवं तृप्तिदायक उत्तर मिलता है। दर्शन के माध्यम से स्वयं से लेकर सम्पूर्ण प्राकृतिक व्यवस्था को समझने में लगभग 2 वर्ष का समय लगा। स्पष्ट हुआ कि हर मानव का एक निश्चित लक्ष्य है, जीने का एक निश्चित उद्देश्य है, इसे नहीं पहचानने के कारण मानसिक, शारीरिक ऊर्जा का सदुपयोग स्वयं, परिवार, समाज के विकास में नहीं हो पाता है। फलतः मानव में घुटन, परिवार में टूटन, समाज में विघटन, प्रकृति में प्रदूषण दिखाई देता है।



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## शिक्षा में एक अभिनव प्रयोग

स्पष्ट हुआ कि क्यों 20-22 साल शिक्षा में लगाने के बाद भी उत्सवपूर्वक जीने का विश्वास उपलब्ध नहीं होता। यह भी स्पष्ट हुआ क्यों सारी भौतिक उपलब्धियों के बाद भी किसी उम्र में लगभग हर मानव एक खालीपन को महसूस करता है। क्या छूट गया? कैसे मिलेगा? आदि का स्पष्ट उत्तर मिला है।

मानव की स्थायी पहचान, स्थायी सफलता का राजमार्ग स्पष्ट होता है। सार रूप में मानव को स्वयं का मूल्य अर्थात् उसके जीने का मकसद जिसे जीकर वह उस गहरी तृप्ति को पाता है जिसकी तलाश में वह निकला था, स्पष्ट हुआ।

इस प्रकार एक उत्सवपूर्ण जीवन की तलाश पूरी हुई। उपरोक्त वर्णन महज एक काल्पनिक चित्रण नहीं है बल्कि एक चिन्तनशील युवा पीढ़ी की पीड़ा का जीवन्त वर्णन है। हर युवा सुखी और समृद्ध परिवार चाहता है, वह भय मुक्त समाज चाहता है। ऐसे परिवार और समाज को वह साकार कर सके यही-**सोशल इंजीनियरिंग** - है यही उसके जीने का मकसद है, ऐसी योग्यता से सम्पन्न करना ही मूल्य शिक्षा है।

ऐसे ही कुछ युवा साथियों के सपरिवार समूह का नाम अभ्युदय संस्थान है।

संयोग से इनमें से कुछ युवा इंजीनियरिंग विधा से थे अत: तकनीकी शिक्षा की ओर पहले ध्यान गया। उसी समय एक और संयोग बना कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से आई.आई.टी. दिल्ली में राष्ट्रीय मूल्य संसाधन केन्द्र की स्थापना हुई, देश में तकनीकी शिक्षा में मूल्य शिक्षा के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी इस केन्द्र को दी गयी। सन् 2002 में राष्ट्रीय मूल्य संसाधन केन्द्र आई.आई.टी. दिल्ली के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. ऋषिराज गौड़ एवं अभ्युदय संस्थान के कुछ सदस्य मूल्य शिक्षा को समझने के लिए आदरणीय ए. नागराज जी के पास अमरकण्टक में थे। उसी समय प्रेरणा हुई क्यों न शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर में - **मूल्य शिक्षा**- को शुरु किया जाए। महाविद्यालय के ही सिविल विभाग के रीडर श्री समीर बाजपेयी ने तत्कालीन प्राचार्य एवं अतिरिक्त संचालक तकनीकी शिक्षा छत्तीसगढ़, डॉ. राजेश पाठक एवं अभ्युदय संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में कालेज में ही दो घण्टे का सेमीनार आयोजित किया।

समस्याओं को सुलझाने को छोड उनसे भागने का प्रयास करता था। मन में कभी अपने अस्तित्व के प्रति काफी सवाल उठते थे पर उसका जवाब नहीं मिल पा रहा था जीने का मतलब सिर्फ दिखावा था, हर काम, हर बात केवल दिखावे के लिए की जाती थी। शिविर के बाद मैं अपने आपको पहले से काफी संतुष्ट महसूस कर रहा हूँ जीवन में पहले रस नहीं था जीने की इच्छा धीरे-धीरे खत्म हो रही थी, अपनी क्षमता पर से विश्वास उठता जा रहा था वो सारे प्रश्नों का समाधान जीवन विद्या के माध्यम से मिला है।

19.03.2005

● **आकाश ठाकुर** B Tech.-Comp. Science
NIT, Raipur

मैं भविष्य मे रैगिंग के स्वरूप को भी बदलूँगा और मेरे प्रयास इस तरह होंगे कि जूनियर, सीनियर से डरना छोड कर उनका सम्मान करें मैं अपना प्रयास अपने कालेज से ही प्रारंभ करना चाहूँगा।

25.09.2004

● **विक्रांत चन्द्राकर** B Tech.-Electrical
NIT, Raipur

सेमीनार में तकनीकी शिक्षा में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता और सरकार की मंशा को डॉ. गौड़ ने व्यक्त किया। प्रस्ताव सुनकर कुछ प्रोफेसर ने कहा मूल्य शिक्षा पर भाषण देना, लेख लिखना, सुनना आदि अच्छा लगता है लेकिन विद्यार्थियों के साथ कुछ नहीं हो सकता। ये पी.ई.टी. पास कर, मोटी फीस देकर पढ़ने आते है लेकिन क्लास करने में इनकी बहुत अधिक रूचि नहीं है जिससे इनका भविष्य बनेगा। मूल्य शिक्षा से तो नौकरी नहीं मिलेगी अत: ये सुनेगें ही नहीं। इस प्रस्तुति के बाद सभा में खामोशी छा गई और ऐसा लगा कि कुछ नहीं हो सकता है। तभी प्रेरणावश अभ्युदय संस्थान की ओर से प्रस्ताव रखा गया कि जिन 30 छात्रों को आप मानते हैं कि ये किसी की नहीं सुनते उन्हें हमारे साथ पाँच दिवसीय कार्यशाला में भेज दीजिये तथा आर्थिक व्यय हमारा होगा। पाँच दिनों के बाद इन छात्रों के मुँह से ही सुना जाए कि इनको आवश्यकता है या नहीं। कार्यशाला हेतु विद्यार्थियों के चयन के लिए -**स्थायी सफलता**- पर दो घण्टे की खुली चर्चा आयोजित की गयी। स्वेच्छा से 7 छात्राएं और 20 छात्रों ने पूरी बात को समझने का मन बनाया। पाँचवे दिन छात्रों के मूल्याँकन को सुनने प्राचार्य सहित लगभग 10 प्रोफेसर अभ्युदय संस्थान, अछोटी पहुँचे। **छात्रों ने बहुत भावुक होकर कहा मूल्य शिक्षा हमारी जिन्दगी है। यहाँ आकर हम अपने आपसे परिचित हुए। हमने जाना विश्वास क्या है? संबंध, प्यार, दोस्ती केवल शब्द थे, इन्हें एक नया अर्थ मिला जो हमेशा नया ही रहेगा। परिवार और समाज में अपनी भूमिका, अपना मूल्य स्पष्ट हुआ है।**

**एक बार हम 12वीं के बाद चौराहे पर आते हैं, किधर जाएं? अपने में समझ विकसित नहीं होती इसलिए किसी के प्रभाव में किसी एक दिशा में चल देते हैं। कालेज से निकलकर फिर एक चौराहे पर खड़े होंगे संसार का धक्का जिधर ले जाए। और अब पता चला कि 40 अथवा 50 की उम्र में फिर चौराहे पर पहुँचने की संभावना है क्योंकि केवल भौतिक उपलब्धियों से जीवन में परस्पर विश्वास, सम्मान, स्नेह, सहयोग नहीं पाया जा सकता। हमें जीवन में बार-बार अनिश्चितताओं के चौराहे नहीं बल्कि एक सफल जीवन जीने का राजमार्ग चाहिए।**

अत: हमारी इंजीनियरिंग शिक्षा से भी अधिक आवश्यक मूल्य शिक्षा है, इसे पाठ्यक्रम का अंग बनाया जाए। यहाँ से एक नया इतिहास शुरू हुआ। डॉ. राजेश पाठक ने तकनीकी शिक्षा में मूल्य शिक्षा के समावेश हेतु सक्रिय योगदान देना शुरु किया।



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



**इन प्रयासों से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति क्षमता, विश्लेषणात्मक क्षमता, समस्या निवारण कौशल, आपस में तालमेल, कक्षाओं में अनुशासन, जिम्मेदारी, रैगिंग में नियंत्रण आदि में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ होने लगी । छात्रों में आये परिणामों से उत्साहित होकर जगदलपुर एवं बिलासपुर इंजीनियरिंग कालेज में भी बात शुरू हुई।**

इस प्रकार वर्तमान में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर के डॉ. डी.एस.बल, प्राचार्य बिलासपुर इंजीनियरिंग कालेज डॉ. अशोक गढ़ेवाल एवं पूर्व प्राचार्य जगदलपुर इंजीनियरिंग कालेज डॉ. वी.एन.सिंह ने 7 दिवसीय मूल्य शिक्षा कार्यशाला में भाग लेकर छत्तीसगढ़ तकनीकी शिक्षा में मूल्यों के समावेश हेतु अभूतपूर्व प्रयास किया है। अभ्युदय संस्थान में तकनीकी शिक्षा के शिक्षकों एवं छात्रों हेतु लगातार मूल्य शिक्षा कार्यशालाओं का आयोजन जारी है।

छत्तीसगढ़ राज्य शासन द्वारा राज्य के समस्त तकनीकी शिक्षण संस्थाओं में तकनीकी शिक्षण एवं शोध के उच्चतम मापदण्डों की स्थापना के लिए स्थापित छत्तीसगढ़ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय ने भी मानवीय मूल्यों की स्थापना के अभिनव प्रयास के रुप में मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में जीवन विद्या के अध्यापन को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. बी.के. स्थापक एवं कुलसचिव प्रोफेसर के.के. परमार इसके लिए विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने स्वप्रेरणा से मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की पहल की।

इस भागीरथी प्रयास में अभ्युदय परिवार के श्री अंजनी एवं मीना, डॉ. संकेत एवं शुभ्रा, श्री धीरेन एवं अनीता, श्री बी.आर. एवं अंचला, श्री रंजीत एवं अलका, श्री मंजीत एवं डॉली, श्री कल्पेश एवं अनामिका, श्री अरूण एवं सरिता, श्री राजा एवं मधु, श्री अनिल एवं सोनल, श्री दिनेश एवं कुमुद, डॉ. ओम एवं सोनल, श्री संतोष एवं पूजा, डॉ. पूर्णिमा, तथा युवा टीम में हरजिंदर सिंह(सोनू), संदीप, नितिन, हिना, मंजीत कौर बल तथा दीपक का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। श्री विकास एवं ममता, श्री विशाल एवं प्रतिमा, श्री नीरज एवं कामिनी, श्री सतीश एवं नीति, श्री तरूण एवं सुषमा, श्री संजय गुलाटी के साथ, अन्य कई परिवार है जिनके सहयोग के बिना यह अभूतपूर्व प्रयास का निर्बाध संचालन संभव नहीं है। आदरणीय श्री राजन जी अभ्युदय परिवार के मुखिया हैं। आपके जीवन भर के सामाजिक प्रयासों का निचोड़ अभ्युदय संस्थान है।

अभ्युदय संस्थान की टीम को खड़ा करने में डॉ. रण सिंह आर्य एवं डॉ. यशपाल सत्य आई.आई.टी. दिल्ली, श्री गणेश बागड़िया एच.बी.टी.आई कानपुर एवं अर्चना जी, श्री साधन भट्टाचार्य अमरकंटक का अविस्मरणीय योगदान रहा है। अभ्युदय संस्थान के सदस्यों का परिचय जब पहली बार डॉ. रणसिंह आर्य एवं डॉ. यशपाल सत्य के माध्यम से जीवन विद्या से हुआ तो बहुत सी शंकाऐं मन में थी लेकिन जब इनके प्रमाणिक व्यक्तित्व के बारे में पता चला तो सारी शंकाए विश्वास में बदलती चली गयी । कुछ इनके आई.आई.टी. जैसी संस्था के साथ संबद्ध होने ने आश्वस्त किया कि ये व्यक्तिवाद, सम्प्रदायवाद से हटकर कुछ बात है। डॉ. यशपाल सत्या बचपन से ही सत्यानुषंधान में लगे थे । आई.आई.टी. दिल्ली के छात्रों के साथ मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में काफी प्रयोग कर रहे थे । तकनीकी शिक्षा और समाज के बीच व्यवहारिक संबंध को स्थापित करने के प्रयास में थे । डॉ. रण सिंह आर्य आई.आई.टी. दिल्ली में रहते हुए देश के एक बड़े किसान आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे । छत्तीसगढ़ में मध्यस्थ दर्शन को सुदृढ़ आधार देने का काम श्री गणेश बागड़िया ने किया। आप अपने छात्रकाल में आई.आई.टी. कानपुर में जिमखाना के अध्यक्ष रहे । तकनीकी शिक्षा की दिशा समग्र विकास की ओर हो इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही आप ने तकनीकी शिक्षा में अध्यापन का कार्य शुरु किया । छत्तीसगढ़ तकनीकी शिक्षा में मूल्यों के समावेश हेतु प्रेरणा स्त्रोत आई.आई.टी. दिल्ली में स्थापित मूल्य शिक्षा संसाधन केन्द्र के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. ऋषिराज गौड़ बने । रायपुर इंजीनियरिंग कालेज से 1987 में माईनिंग इंजीनियरिंग पूरा कर श्री साधन भट्टाचार्य नौकरी छोड़ मध्यस्थ दर्शन को समझने और जीने के लिये समर्पित हो गये । इस प्रकार यह भागीरथी प्रयास कलकल बहता हुआ युवाओं के हृदय तक जा पहुँचा है। मूल्य है तो वह इसके लोगों में मूल्यों के बीज हैं जिन्हें सदियों से विभिन्न धाराओं के महापुरुषों ने सींचा है। यदि तकनीकी युवा सोशल इंजीनियरिंग के विशेषज्ञ होंगे तो राज्य के समग्र विकास में सक्रिय भूमिका निभा सकेंगे । भारत में प्राकृतिक संसाधन पर्याप्त हैं आज आवश्यकता है ऐसे युवाओं की जो उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन एवं मानव क्षमता का समग्र विकास की दिशा में प्रबंधन करने में सक्षम हैं यही मूल्य शिक्षा का लक्ष्य है आइये इसे साकार करें ।

माता पिता अपने बच्चों को इंजीनियर, डॉक्टर, वकील बनाने के साथ ही उन्हें एक अच्छा इंसान बनाने के लिए भी प्रोत्साहित करें। जिससे उनमें सही समझ विकसित हो। मैं चाहती हूं लोग मुझे मेरे इंजीनियर के पद से सम्मानित न करें बल्कि मैं अपने आपको एक ऐसे इंसान के रूप में देखना चाहती हूँ कि इंजीनियर पद मुझसे सम्मानित हो।

02.04.2005

● **उर्वशी देवांगन**, B-Tech. Civil
NIT, Raipur

बचपन में मातापिता ने चलाया , जवानी दोस्तों के हिसाब से चल रहा था और इसके बाद ना जाने किसके हिसाब से चलता शिविर करते हुए अधंकार का दीपक जो मेरे मन में जल रहा था उसने अपनी पूरी ताकत झोंक दी कि इसे मानना नहीं है लेकिन जो सही है वह सर्वमान्य है ऐसा मैं महसूस करने लगा हुँ- ज्ञान का दीपक भले ही मेरे मन में प्रज्वलित न हुआ हो किंतु अधंकार का दीपक बुझ चुका है।

4.7.2004

● **सत्यम पांडे**, BE-IT
GEC Jagdalpur

**सोम एवं निताशा त्यागी**
अभ्युदय संस्थान 09301700400



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## Jeevan Vidya experience

## Part of President's Independence Day Address to Nation : 14 Aug. 2006

Jeevan Vidya is being practiced by Prof Ganesh Bagaria, IIT, Kanpur, Prof Rajeev Sangal, Director IIIT (Hyderabad) and their teams. This scheme is concerned about addressing the basic causes of major problems of violence, corruption, exploitation, domination, terrorism and war. It has been found that violent and anti-social behaviour, unless dealt with care and with professionalism, could aggravate the extreme behaviour.

Jeevan Vidya develops tolerance for ambiguity and uncertainty in human conduct by enabling self-knowledge that understands harmony in the self and in the entire existence. The academicians could bring about marked change even among the inmates of jails through the use of these techniques.

Jeevan Vidya is a 'teachable human value based skill' that can address inherent conflicts within the mind of the individual, within families, in organizations and in public life. Inner conflict is the very essence of violence. For example, with the skills imparted, it would be possible to reduce the overall period of secondary education from 25,000 hours of teaching to 20,000 hours, since the children become more responsible and productivity conscious. These experiments can be outreached to influence many people by developing networks using ICT through our educational system, that needs to pay increasing attention to this aspect of human development.

This process of imparting self-knowledge would promote a learning atmosphere, where this whole movement of inquiry into knowledge, into oneself, into the possibility of something beyond knowledge would bring about naturally a psychological revolution. From this comes inevitably a totally different order in human relationship and therefore society as a whole. The intelligent understanding of this process itself can bring about a profound change in the consciousness of mankind.

## निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र न भूले।।

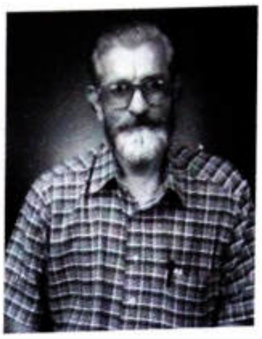

Technical Education in the Light of Universal Values

औद्योगिक क्रान्ति के पश्चात मनुष्य जाति का भौतिक विकास अतिशीघ्र तीव्र गति से हुआ। विज्ञाननिष्ठ तथा वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण के कारण जहाँ एक ओर सृष्टि के रहस्यों का तथा अनेकानेक तथ्यों का उद्घाटन हुआ वहीं उसी दृष्टिकोण के कारण प्रत्येक बात को प्रश्नांकित करने के नाम पर 'जो भी था' वह त्याज्य हो गया। 'छोड़ो कल की बांते कल की बात पुरानी' एक नारा बन गया किन्तु 'नये खून से लिखेंगे हम मिलकर नई कहानी का अधिष्ठान क्या होगा ? इस प्रश्न का उत्तर हमारे पास नहीं रहा। जिन्होने विज्ञान और प्रौद्योगिकी का विकास किया उस यूरोप, अमेरिका में यह समस्या जितनी विकराल बन गई उसकी तुलना में भारत जैसे देशों में भौतिक विकास के माध्यम के रूप में अचानक प्रकटी अभियांत्रिकी तथा प्रौद्योगिकी की आंधी में सनातन काल से चले आए जीवन मूल्य लुप्त होते जा रहें है। केवल भौतिक विकास, व्यक्ति का , व्यक्ति - व्यक्ति का केवल भौतिक विकास के लिए धन और धन प्राप्ति की लालसा में साध्य -साधन विवेक का अभाव - ऐसा एक परिदृश्य दिखाई देने लगा।

इसके परिणाम स्वरूप यदि वास्तविक भौतिक आत्म विकास हुआ होता तो भी सुसह्य होता किन्तु ऐसा नहीं हुआ जो भी निर्माण हुआ वह सर्व हितकारक नहीं बना इतना ही नहीं तो निर्मित साधनों की विपुलता होते हुए भी जीवन सुखकर हुआ, ऐसा दिखाई नहीं देता। साधनों की प्रचुरता के साथ तनाव बढ़ा, लालसा बढ़ी, रोग बढ़े, अशांति बढ़ी, युद्ध बढ़े।

दोष अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी के विकास का नहीं तो उसका विकास करने वाले और उसका क्रियान्वयन करने वाले प्रौद्योजकों की मानसिकता का है, उनकी सोच का है। सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पर्यावरणीय घटकों का विचार न करने वाली, उसकी समझ न रखने वाली मानसीकता का है, जीवन मूल्यों के विकास के अभाव का है। इसलिए आवश्यक है कि आगामी अभियंताओं और प्रौद्योजकों में जीवन मूल्यों की समझ बढ़ाई जावे जीवन मूल्य कुछ और नहीं तो केवल इतना विचार, ऐसा स्वाभाव जो सोचें, समझे, जाने और फिर माने कि मैं कौन ? मेरी जीवन भूमिका क्या है? मेरे चारों ओर का समष्टिगत परिवेश क्या है? मेरा और मेरे परिवेश का संबंध क्या है ? परस्पर अंतः क्रिया, प्रक्रिया क्या है? मेरा और मेरे परिवेश का अस्तित्व बना रहे, हम परस्पर पोषित, वर्धित हों, संरक्षित हों इसकी सृष्टि में जो व्यवस्था है उस व्यवस्था से सुसंगत ऐसी मानव निर्मित व्यवस्था बनाने में मेरी भूमिका क्या है।

इस प्रकार का समग्र दृष्टिकोण रखकर कार्य करने वाले लोग होंगे तभी विकास सर्वव्यापी होगा, सर्वस्पृशी होगा, समग्र होगा केवल कुछ लोगों का अधिक विकास नहीं, अधिकतम लोगों का अधिकतम विकास भी नहीं तो -

''सर्वे :पि सुखिनः सन्तु, सर्वे : सन्तु निरामया।
सर्वे : भद्राणी पश्यन्तु, मा कश्चिद दुःख भाग्भवेत्।

यह हमारा सनातन जीवन मूल्य साकार होगा। ऐसी समग्र सोच रखने वाला और विशेष रूप से अभियंता भी समग्र के लिए काम करेगा केवल स्वयं तक संकीर्ण नहीं रहेगा। अतः जीवन मूल्यों की शिक्षा उसे उसके छात्र जीवन से ही मिलना आवश्यक है। वस्तुतः इस जीवन मूल्यों की केवल शिक्षा नहीं तो इसके संस्कार उसे अपने घर से अत्यंत बाल काल से ही प्राप्त होने चाहिए।

इसी का नाम व्यक्तित्व निर्माण, यही है चरित्र निर्माण। इसके अनेक मार्ग हो सकते हैं किन्तु केवल उपदेशमय शिक्षा के स्थान पर प्रशिक्षणाधारित परस्पर चिंतन मंथन की प्रक्रिया से यदि यह शिक्षा दी जाये तो वह मात्र शिक्षा की नहीं तो संस्कार प्रदान करने की प्रक्रिया बन जावेगी। इसको पाठ्यक्रम में स्थान देने से उसकी अनिवार्यता का बोध भी जागृत होगा।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर और अभ्युदय संस्थान, अछोटी के परस्पर प्रोत्साहन तथा सहयोग से इसी दिशा में हो रहा मार्ग क्रमशः मार्गदर्शन निश्चित रूप से सभी के लिए स्वीकार्य होगा। परिणाम में प्रभावी भी होगा।

**प्राध्यापक मुकुन्द हर्म्बडें**
प्रभारी निदेशक
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर
Tel:-0771-2254200



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

NIT Raipur Efforts - Magazine_c

## संस्कार की यात्रा

मेरे कई मित्र मुझसे पूछते हैं कि आपको कभी गुरूद्वारे जाते हुए नहीं देखा है। कई परिचित मेरे साथ जब धर्म की चर्चा करते हैं तो सिख धर्म, उसकी विशेषताएँ और बलिदानों की बाते करते हैं। मैं समझ नहीं पाता कि वे मेरे सिख स्वरूप को ही देखकर ऐसा करते हैं या वास्तव में उन्हें सिख धर्म के बारे में उतनी ही रूचि है जितना वे मेरे समक्ष प्रदर्शन करते हैं।

मैं एक सिख परिवार में पैदा हुआ हूँ, किसी का किसी परिवार में पैदा होना या न होना, मैं मानता हूँ किसी के बस में नहीं है। इसके बाद जिस परिवार में व्यक्ति पलता-बढ़ता है, उसके संस्कार की छाप व्यक्ति में दिखाई देना स्वाभाविक है परिवर्तन की चाह में कई अपने उस स्वरूप को बदल भी लेते हैं, मैं नहीं जानता कितना संस्कार बदलता है।

लेकिन मेरा विश्वास है कि हर व्यक्ति का स्वयं का संस्कार होता है। यह संस्कार न तो उसके किसी परिवार में जन्म लेने से या किसी समुदाय, सम्प्रदाय, जाति विशेष में पलने-बढ़ने से प्रभावित होता है। यही संस्कार व्यक्ति की व्यक्तिगत पूँजी है जो उसे अद्वितीय प्रमाणित करता है। व्यक्ति अपने आस-पास के वातावरण से प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष अस्थाई रूप से प्रभावित होतो रहता है लेकिन समय और परिस्थितियाँ उसे अपने मूल संस्कार के अनुरूप जीवन जीने के लिए बाध्य कर देते हैं। संक्षेप में कहें तो व्यक्ति दूसरों के लिए ढोंग कर ले पर स्वयं के सामने वह स्वयं ही होता है।

किशोर उम्र के आते-आते, मुझे याद है मैंने आरोपित संस्कारों से मुक्त होने के लिए छटपटाना प्रारंभ कर दिया था। धर्म, साहित्य, दर्शन, आदि का विधिवत अध्ययन तो मैंने कभी नहीं किया लेकिन टुकड़ों में जो कुछ भी सीखा, जाना, उसका कुल निष्कर्ष यही पाया कि कोई व्यक्ति, कोई संगठन या कोई धर्म मुझे कुछ भी नहीं दे सकता, मेरा व्यक्तिगत संस्कार ही मुझे मेरे लक्ष्य तक ले जाएगा। इसी व्यक्तिगत संस्कार की खोज ने मुझे **मध्यस्थ दर्शन** से जोड़ दिया। यह भी एक आकस्मिक घटना थी।

यह सन् 2003 की घटना है। शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय (अब राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान) रायपुर में **समाज के समग्र विकास हेतु तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश** विषय पर 1 व 2 मार्च 2003 को दो-दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था जिसमें आई.आई.टी. दिल्ली के प्रो. आर.आर. गौड़ भी आए हुए थे। तब मैं शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय जगदलपुर में प्रभारी प्राचार्य के रूप में पदस्थ था। 1 मार्च को रायपुर में आयोजित कार्यशाला के एक सत्र का मुझे अध्यक्ष (सम्भवतया प्राचार्य पद पर कार्यरत होने के कारण) बनाया गया था। तब मैंने अपने उद्‌बोधन में एक शंका जाहिर

जब मैं IIT में आया तो ये स्पष्ट ही नहीं था कि क्यों पढ़ रहे हैं, जीवन का लक्ष्य क्या है, समाज के लिए अगर कुछ सार्थक करना चाहें तो वह क्या है। जीवन विद्या से जुड़कर लक्ष्य स्पष्ट हुआ और आज जो मैं स्वयं में विश्वास अनुभव करता हूँ वही सच्चा आत्म विश्वास है।

● श्याम कुमार B.Tech.-Electrical
IIT, Kanpur

रोजगार के लिए शिक्षा, इस सिद्वांत पर दी जाने वाली शिक्षा से वर्तमान में रोजगार उपलब्ध नहीं हो पा रहें हैं और इसलिए शिक्षक होने के नाते स्वयं में जिम्मेदारी का भाव पूरा ना हो पाने के कारण दबाव हर पल था। खुशी इस बात की है एक ही पल में मेरे सभी प्रश्नों के उत्तर इस जीवन विद्या के प्रकाश में मिले। देवी-देवता, ईश्वर, भूत-प्रेत एवं बहुत सारी मान्यताओं के बारे में सही स्थिति स्पष्ट हुई। सभी मनुष्यों का लक्ष्य एक ही है यह जानना भी एक बहुत बड़ी उपलब्धि रही है।
12.6.2004

● डॅा. सुभाशीष सान्याल
NIT, Raipur

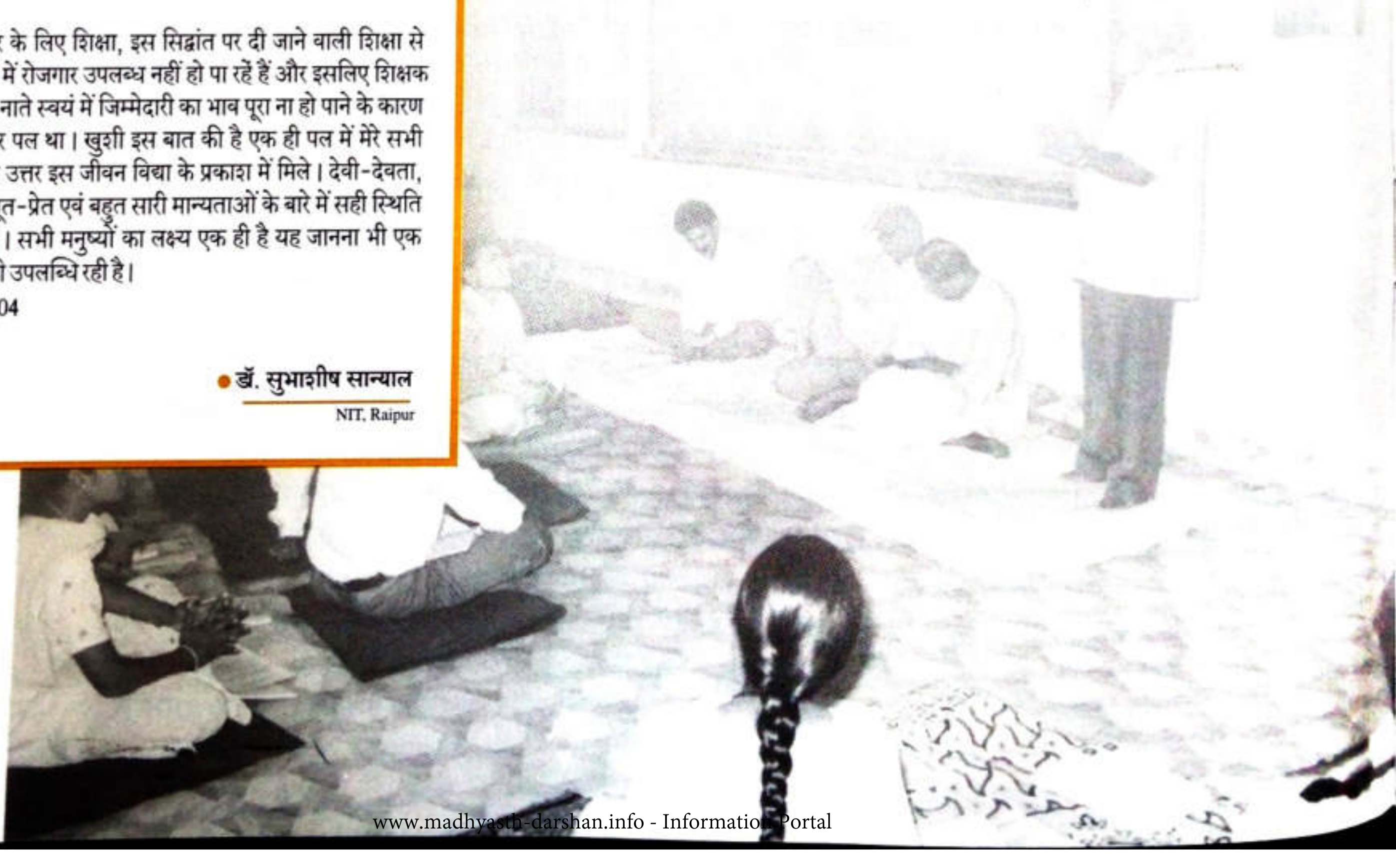


www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

NIT Raipur Efforts - Magazine_c

Technical Education in the Light of Universal Values

की थी कि, **क्या अध्ययन-अध्यापन कर क्या मनुष्य के चरित्र में जीवन मूल्य स्थापित किए जा सकते हैं** ? मुझे यह शंका इसलिए हुई थी कि मनुष्य के व्यवहार में, उसके आचरण में ही मूल्यों का प्रमाणीकरण हो सकता है। आज की शिक्षा परम्परा में अध्ययन-अध्यापन से व्यक्ति का शिक्षित होना प्रमाणित होता हुआ दिखाई नहीं पड़ता। यह सूचनात्मक ज्ञान-पढ़ना, लिखना, कौशल, आदि की शिक्षा तो देती है लेकिन विवेकात्मक ज्ञान-मूल्यों के साथ जीना, निर्णय लेने का साहस, उद्यमिता, आदि की समझ देने में असहाय दिखाई देती है। ऐसी स्थिति में जीवन-मूल्यों का अध्ययन-अध्यापन, वह भी तकनीकी शिक्षा में कितना सार्थक हो पाएगा यह प्रश्न अनुत्तरित-सा रह गया।

2 मार्च के समापन समारोह में मुझे अभ्युदय संस्थान, अछोटी जाने का सौभाग्य मिला। इसके पूर्व एक बार मैं कुछ मित्रों के आग्रह पर फार्म-हाऊस के रूप में देखने के लिए वहाँ अवश्य गया था। तब राजन महाराज से भेंट हुई थी और वह भी बहुत संक्षिप्त। एक प्रकार के सामान्य परिचय की औपचारिकता। तब मुझे कहाँ पता था कि **मूल्य आधारित शिक्षा** की यह प्रयोग स्थली है।

जीवन-विद्या शिविर और जीवन-विद्या के प्रयोग, व्यक्ति के व्यक्तिगत संस्कार के खोज की यात्रा है। जीवन-विद्या से जुड़ने के बाद मुझे ऐसा लगा मानो मैं इसी मार्ग की खोज में था। मेरा व्यक्तिगत संस्कार मुझे यहाँ तक पहुँचा गया है।

शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय, जगदलपुर एवं रायपुर के शिक्षकों एवं छात्र-छात्राओं के लिए अभ्युदय संस्थान, अछोटी में जीवन-विद्या शिविरों का आयोजन प्रदेश में ही नहीं वरन् देश की तकनीकी शिक्षा में एक अनूठा प्रयोग रहा है। शिविर में छात्र-छात्राओं की रूचि एवं उनका अनुशासन सराहनीय रहा है। शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय जगदलपुर के प्राचार्य, छत्तीसगढ़ तकनीकी शिक्षा के आचरण को मुझे देखने, सुनने और परखने का अवसर प्राप्त हुआ है। मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि जीवन-विद्या की समझ ने उन्हें स्वयं को, समाज को और व्यक्ति को जानने, समझने के लिए नई दिशा दी है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के निर्देशानुसार शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं चेतना विकास को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, में एक केन्द्र **'समाधान'** (Center for Education in Human Values) की स्थापना की गई है जिसके माध्यम से तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्य एवं चेतना विकास से संबंधित गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं।

**डॉ. डी.एस. बल**
पूर्व प्रभारी निदेशक
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर
Tel : 0771-2255721(R)

*The task of education would be, first and foremost, the trans-mission of ideas of value, of what do with our lives. There is no doubt also the need to transmit know-how but this must take second place.*

www.madhyasth-dar... ...tion Portal

## मूल्य शिक्षा -हमारी अनिवार्य प्राथमिकता

भौतिक और यांत्रिक दृष्टि से हमारा विकास इस समय अपने उत्कर्ष पर है। उन्नति, अनुसंधान और नवोन्मेषों की अब कोई सीमायें ही नहीं बची है। मनुष्य की कल्पना शक्ति उसके द्वारा प्राप्त भौतिक लक्ष्यों के आगे बौनी पड़ती दिखाई दे रही है।

लेकिन इन सबके बीच जो बात सबसे ज्यादा खटकती है, वह यह कि जिस गति से हमारा भौतिक और यांत्रिक विकास हो रहा है, उस गति से हमारा आत्मिक और मानसिक विकास नहीं हो पा रहा है। यही कारण है कि जीवन मूल्यों के प्रति हमारा दृष्टिकोण निरंतर उदासीन और अधोगतिपरक होता जा रहा है। हमारी चेतना के मूल तत्वों को भूलकर हम निरंतर भौतिक लक्ष्यों के पीछे भाग रहे है। ऐसे में हम यंत्र के रूप में तो अपरिमित आकार पा जायेंगे परंतु मानव के रूप में हम बहुत बौने होकर रह जायेंगे।

जीवन मूल्यों के प्रति चेतना जागृत करना और उनके प्रति हमारी युवा पीढ़ी को सजग करना हमारी शिक्षा की अनिवार्य प्राथमिकता है। बेहतर मनुष्य ही बेहतर वृत्तिज्ञ (प्रोफेशनल्स) साबित होंगे। यह बात सभी व्यावसायिक क्षेत्रों में बिना किसी विभेद के लागू है फिर चाहे वह तकनीकी शिक्षा का क्षेत्र हो या मीडीया शिक्षा का। अभ्युदय संस्थान द्वारा तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में जीवन विद्या और मानव मूल्यों को लेकर निरंतर किये जा रहे प्रयोगों के आशाजनक परिणाम प्राप्त हुए हैं। मीडिया शिक्षा में बेहतर वृत्तिज्ञ तैयार करने की दृष्टि से हम हमारे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को इस शिक्षा के लिये अभिप्रेरित कर रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि **अभ्युदय संस्थान** के सहयोग से हमारा विश्वविद्यालय मीडिया के क्षेत्र में मूल्य आधारित शिक्षा के नये आयाम स्थापित करेगा।

**शिक्षा का प्रयोजन व्यक्ति मेंसमाधान, परिवार में समृद्धि, समाज में परस्पर विश्वास(अभय) तथा सभी अवस्थाओं में तालमेल (सह अस्तित्व) स्थापित करने हेतु प्रत्येक मानव को सक्षम बनाना है।**

मध्यस्थ दर्शन

**सच्चिदानंद जोशी**
कुलपति
कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय
फोन: 07771-2575217
ई-मेल: kulpati@ktujm.ac.in

## सार्वभौम मूल्य ( Universal value )

मूल्य शिक्षा की बात शुरू होते ही वाद विवाद शुरू हो जाता है। कभी सुनने में आता है, कि इस भौतिकवादी युग में मानवीय मूल्यों का ह्रास तेजी से हो रहा है। शिक्षा में मानवीय मूल्यों का पतन तेजी से हो रहा है। शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश की आवश्यकता भी महसूस की जाती रही है। साथ ही अधिकांश लोगों का यह भी मानना हैं कि मूल्य सबके लिए अलग होते है। मूल्य, धर्म, जाति, देश, समय, परिस्थिति के आधार पर बदलते रहते हैं। इसलिए मूल्यों का शिक्षण, शिक्षा में संभव नहीं है। मूल्यों की शिक्षा पारिवारिक मामला है। दूसरी ओर मूल्य शिक्षा के बारे में जनमानस में नकारात्मक स्वीकृतियाँ हैं। जैसे मूल्य शिक्षा का अर्थ किसी धर्म, समुदाय, मान्यता के आधार पर ये करो अथवा ये ना करो से है। **मूल्य शिक्षा के बारे में सामान्य स्वीकृतियाँ व्यवहार में ना आने वाले उपदेशों से है। मूल्यों के प्रति भारतीय जनमानस में आस्था है लेकिन स्वयं जीने का आत्मविश्वास नहीं है एक ओर हम अपने-अपने महापुरूषों को साष्टांग प्रणाम करते हैं दूसरी ओर यह भी ध्यान रखते है कि अपना बच्चा उस रास्ते पर ना जाये। परंपरागत मूल्यों को बताकर लोग महापुरूष बने लेकिन स्वस्थ परिवार परंपरा प्रमाणित नहीं हुई। यही द्वन्द हमारी जीवन शैली में दिखता है। हमारी आस्थायें अध्यात्म में है एवं जीने की विवशता भौतिकवाद में है। उपरोक्त सारी विषमताओं का एक ही कारण है सार्वभौम मूल्यों को ना पहचान पाना।** मूल्यों के लेकर सारी चर्चाऐं इसलिए है कि अधिकतम आधुनिक शिक्षा के बाद भी मानव, मानव और प्रकृति के साथ तालमेल पूर्वक नहीं जी पा रहा है और धरती के साथ किये जा रहे अपराधों का यही क्रम जारी रहा तो मानव का अस्तित्व धरती पर 100 वर्षों से ज्यादा नहीं रहेगा। ऐसा विश्व विख्यात वैज्ञानिक स्टीफन हॉकिन्स ने भी स्वीकारा **(11th July Times of India)** और उपाय के रूप में कहा कि कोई दूसरी धरती मानव को अपने जीने के लिए तलाश लेनी चाहिए। आदिकाल के खानाबदोश मानव की जीवनशैली है कि एक स्थान के संसाधनों का विनाश कर आगे बढ़ गया। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि आदिकाल से वर्तमान तक मानव ने मात्रात्मक सुविधाओं को विकास माना है, गुणात्मक विकास होना आदिकाल से शेष है। वर्तमान शिक्षा भी केवल सुविधा प्रदान करने कराने में सहायक है। इसलिए अति आवश्यक है कि शिक्षा मानव में गुणात्मक परिवर्तन अर्थात चेतना विकास को पहचाने, ताकि मानव, मानव और प्रकृति के साथ तालमेल पूर्वक जीने की योग्यता को अर्जित कर सके और यही धरती आने वाली पीढ़ियो के लिए अनंतकाल तक समृद्ध बनी रहे। शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश हेतू आवश्यक है उनका स्वरूप सार्वभौम हो, अर्थ सभी को समान रूप से स्वीकार्य, तर्कपूर्ण हो रहस्य वाद एवं संप्रदायवाद से मुक्त हो। ऐसे मूल्यों के आधार पर सभी का जीना सुखमय हो और 'वसुधैव कुटुम्बकम' को साकार करने के लिए सही अर्थो में **ग्लोबल सिटीजन** तैयार हो सकें। यही मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्व वाद का कार्यक्रम हैं।

यहाँ की सबसे अच्छी बात मुझे यह लगी कि हर बात जांचना है, परख कर मानना है। किसी भी संस्थान में अपने विचारों को सामने वालों के ऊपर थोपा जाता है लेकिन यहाँ ऐसा नहीं है। जिससे यहाँ के लोगों का आत्मविश्वास झलकता है। यहाँ आकर मुझमें यह परिवर्तन आया कि बचपन से कुछ बातें मुझे सिखाई गयी थी उन्हें मैंने बगैर विचार किये स्वीकार किया। जो कि गलत है कम से कम भविष्य में तो ऐसा बिल्कुल नहीं करूँगी।

30.10.2004

**लीना नायक,** B.Tech. Comp. Science
NIT, Raipur

शिविर में आने के बाद मुझे पता चला कि यहाँ कोई धर्म, मजहब या कोई आध्यात्मिक चर्चा नहीं हो रही है। यहाँ तो स्वयं को पहचानने तथा स्वयं को समझने में जोर दिया जा रहा है। मुझमें जितना परिर्वतन इन सात दिनों में हुआ है शायद उतना परिवर्तन पूरे अठारह साल में नहीं हुआ है। आज अपने आप में बहुत सुधार और समझ का अनुभव हो रहा है।

17.04.2005

**बी.एम.निशा**, B.Tech. Biotech.
NIT, Raipur

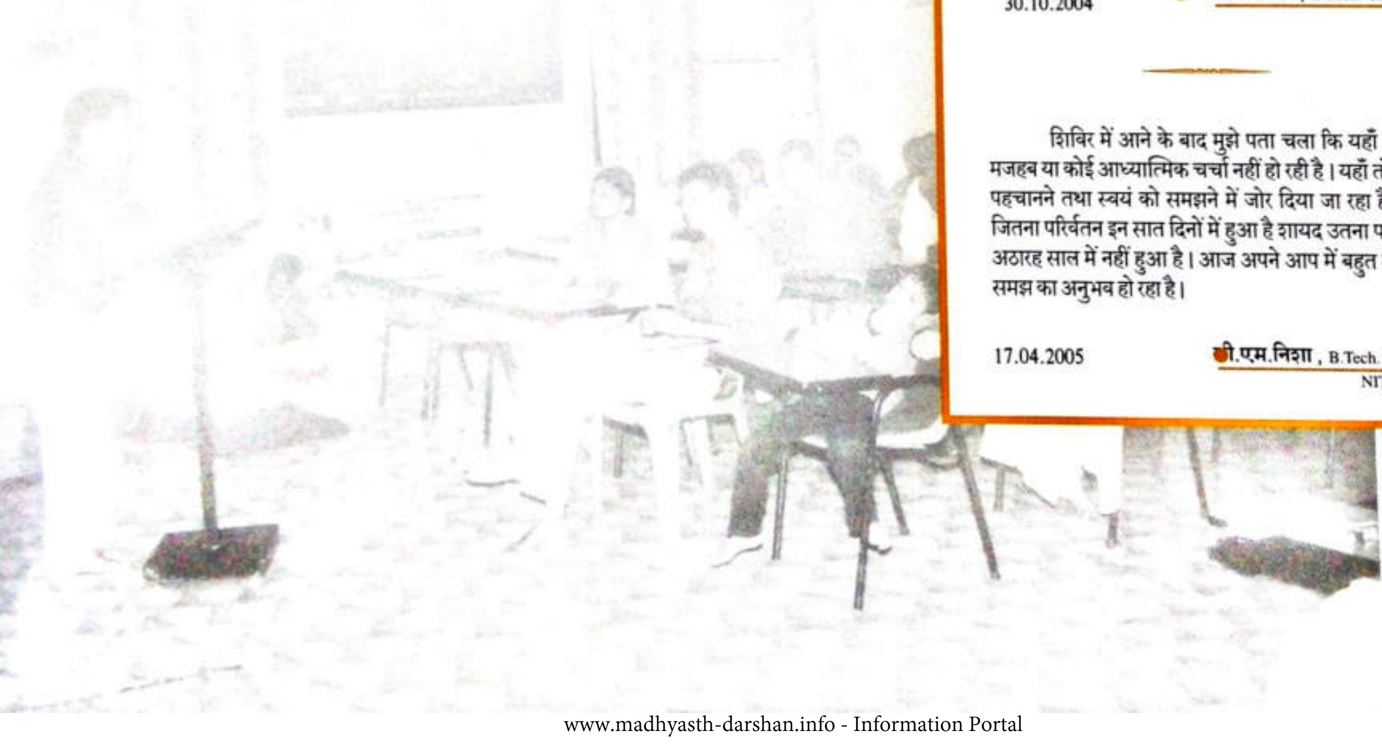



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

**मूल्य :**

इकाई की उपियोगिता ही उसका मूल्य है। जैसे एक निश्चित मात्रा के चावल की पोषण क्षमता निश्चित है वही उसका मूल्य है। भ्रमवश मानव ने प्रतीक मुद्रा जिसके माध्यम से वह वस्तु क्रय करता है उसे मूल्य मान लिया है इसी कारण यह भी मान लिया कि वस्तु का मूल्य बढ़ता घटता रहता है। जबकि वस्तु मूल्य निश्चित होता है।

भ्रम वश मानव ने प्रकृति/प्राकृतिक ऐश्वर्य का मूल्य (उपयोगिता) समझने में चूक की है। मानव ने प्रकृति को केवल अपने संग्रह-सुविधा अधिकारों के रूप में पहचाना है। जिसके कारण उसका दुरूपयोग किया है। सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में जब प्रकृति को देखते है तब शाश्वत मूल्य समझ में आता है कि प्राकृतिक वस्तुओं का मूल्य मानव के उपयोग के साथ-साथ प्रकृति को संतुलित एवं स्वस्थ बनाये रखने के लिए है। यदि उसका अंसतुलित, अंसयत विधि से उपयोग किया गया यह मानव जाति के लिए धरती बीमार होने के रूप में दुभार्ग्यपूर्ण प्रमाणित हुआ है।

**धरती में हजारों सालों में प्राकृतिक विधि से बने लोहे की कीमत क्या हो सकती है इस प्रकार हर प्राकृतिक संसाधन अमूल्य है**

**मानव जीवन ही नहीं प्राकृतिक संसाधन भी अमूल्य है।**

कुछ दशक पहले तक मानव भी खरीदा बेचा जाता था जिसे हम दास प्रथा के नाम से जानते है। खरीदने का प्रचलित अर्थ उस वस्तु के उपयोग या -दुरूपयोग करने का अधिकार प्राप्त करना है। आज धरती के अधिकांश भाग में स्वीकृती है कि मानव खरीदने बेचने की चीज नहीं है। जैसे-जैसे मानव के प्रति समझ बढ़ी है वैसे वैसे मानवाधिकार और न्याय एवं स्वतंत्रता की बात उठने लगी है। निश्चित रूप से आगे आने वाले समय में जैस जैसे जड़ प्रकृति के प्रति हमारी समझ विकसित होगी तो स्पष्ट होगा कि प्रकृति भी अमूल्य है। हम वस्तु नहीं खरीदते केवल कुछ समय तक निशचित विधि से उसका उपयोग करने का अधिकार पाते हैं। ऐसा स्पष्ट होने के बाद प्रकृति का शोषण एवं संग्रह करने की प्रवृति नही होगी ।

**सार्वभौम मूल्य**

**वस्तु मूल्य** - उपयोगिता मूल्य, कला मूल्य

**मानव मूल्य** - धीरता, वीरता, उदारता, दया, कृपा, करूणा

**शिष्ट मूल्य** - विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, वात्सल्य, कृतज्ञता, गौरव, श्रद्धा, प्रेम

**स्थापित मूल्य** - सौजन्यता, सौहार्द, निष्ठा, उदारता, सहजता, सौम्यता, सरलता, पूज्यता, अनन्यता

**जीवन मूल्य** - सुख, शान्ति, सन्तोष, आनन्द

**मानव मूल्य**

मानव का मूल्य मानवत्व सहित समग्र व्यवस्था में भागीदारी है, यही मानव की उपयोगिता है, यही मानव मूल्य है। यही मानव की पहचान है जिसको वह जानना चाहता है, जीना चाहता है।

अत: मानव का मानव एवं प्रकृति के साथ तालमेल (सामजस्य) पूर्वक जीना ही मानव की उपयोगिता है एवं मानव मूल्यों का सार्वभौम स्वरूप है।

इसका प्रमाण यह है कि जन्म से ही हर बालक - न्याय को चाहने वाला, सत्य वक्ता एवंसही कार्यव्यवहार को चाहने वाला होता है। हर वास्तविकता जैसी है वैसी समझ में आने से ही मानव उस ईकाई के साथ अपना संबंध पहचान पाता है संबंध पहचाने पर ही उपरोक्त चाहना को व्यवहार में जी पाता है भाषा पर पकड़ बनते ही हर बालक क्यों/क्या/कैसे जैसे - अनंत सवालों के उत्तर पाना चाहता है लेकिन परिवार, समाज एवंशिक्षा परंपरा इन प्रश्नों का सही उत्तर नहीं दे पाती। जिसके फलस्वरूप मानव, मानव और प्रकृति के साथ तालमेल पूर्वक जीने की योग्यता से सम्पन्न नहीं हो सका है।

इस प्रकार प्रकृति में समस्त इकाईयों के होने का अर्थ ही सार्वभौम मूल्य (Universal Values) है। हर इकाई के होने का अर्थ जानने के लिए वास्तविकता को जैसी है वैसी जानने की आवश्यकता है। इस हेतु सात दिवसीय 'जीवन विद्या' शिविरों का आयोजन देश-विदेश में समय-समय पर होता रहता है। जीवन विद्या शिविर मध्यस्थ दर्शन की परिचयात्मक प्रस्तुति है।

अंचला अग्रवाल
अभ्युदय संस्थान
Tel : 0771-2254002

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



## जीवन विद्या शिविर - एक परिचय

Technical Education in the Light of Universal Values

आज इस वैज्ञानिक युग में एक ओर जहाँ मानव की पहुँच चाँद, मंगल और प्लूटो तक हो गई है, दूरसंचार एवं यातायात से दुनिया सिकुड़ कर एक गाँव सी हो गई है, वहीं दूसरी ओर आज भी मानव, मानव के लिये एक अबूझ पहेली बना ही हुआ है। आज मानव को सबसे अधिक भय मानव से ही है। दो देशों के बीच युध्द की संभावना, आतंकवाद , भ्रष्टाचार आदि से हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में जो परेशानी हैं उससे अधिक परेशानी खून के रिश्तों से जुड़ी एक छत के नीचे रहने वाले लोगों में आपसी व्यवहार को लेकर हैं। परिवार एवं कार्यक्षेत्र में मानव में परस्पर तालमेल न होने के कारण मानव की क्षमताओं एवं उपलब्ध भौतिक-संसाधनों का दुरूपयोग हो रहा है।

मानव-मानव के बीच परस्पर तालमेल ना हो पाने के कारण संबंधों में नीरसता,जीवन में अवसाद, खालीपन और असुरक्षा की स्थिति बनी हुई है। इसी खालीपन और असुरक्षा को दूर करने के लिये भोग और संग्रह की प्रवृति, भोग के लिये साधनों का दुरुपयोग एवं शोषण की प्रवृत्ति से समाज में गरीबी, और अव्यवस्था का मंजर इस धरती पर व्याप्त है।

**एक सतही सोच**

एक प्रचलित सोच है कि सभी अमीर हो जायें तो सुख शांति की स्थिति बन जायेगी ,सोचने में अच्छा लगता है लेकिन अच्छा लगना और अच्छा होना दो अलग-अलग स्थितियाँ है जमीनी सच्चाई को देखें तो गरीबी-अमीरी तुलनात्मक स्थितियाँ है। छोटे शहर का अमीर बड़े शहर में जाकर स्वंय को गरीब महसूस करता है। अमीर दिखना और अमीर होने में जमीन आसमान जैसी दूरी है। ऐसा कोई आंकड़ा नही बना है, ना ही बनेगा कि इतना धन होने से व्यक्ति - स्वंय को अमीर महसूस करने लगेगा ,उसमें असुरक्षा का भाव और दूसरों को देखकर कम-अधिक का भाव नहीं आयेगा।

**क्या सभी अमीर हो सकते है।**

साधनों की स्थिति को देखे तो वर्तमान में धरती पर अमीर कहे जाने वाले 15 % लोग धरती के 85 % साधनो का उपयोग कर रहे है। शेष 85 % लोग 15 % साधनों में जीने के लिये बाध्य है।इतना भोगने के बाद भी ये तृप्त नहीं है और परस्पर अंर्तविरोध बना ही है। यदि कल्पना करे इन 85 % लोगों को भी इन अमीर कहे जाने वाले - 15 % के बराबर साधन उपलब्ध हो जाये। तब भी यह संभव नही है क्योंकि धरती में उपलब्ध साधन सीमित है। इस प्रकार एक ओर अमीरी जिसकी कोई सीमा निर्धारित नही हो सकती तथा सभी अमीर होना चाहते है, दूसरी ओर धरती पर सीमित साधन है इसी द्वन्द में हम जी रहे है। द्वन्द की यही चादर व्यक्ति, परिवार, समाज और विश्व में फैली है तथा सारा अपराध, शोषण, युध्द इसी में पनपता है।

वार्तालाप को किसी लक्ष्य या प्रयोजन के सिल-सिले में नियंत्रित करने पर संवाद कहलाता है। लक्ष्य और प्रयजनों से जुड़ा ना हो, ऐसे वार्तालाप को गप-शप कहते है । अत: सार्थकता संवाद का आधार होना गम्यस्थली होना स्पष्ट हो जाता है।

मध्यस्थ दर्शन

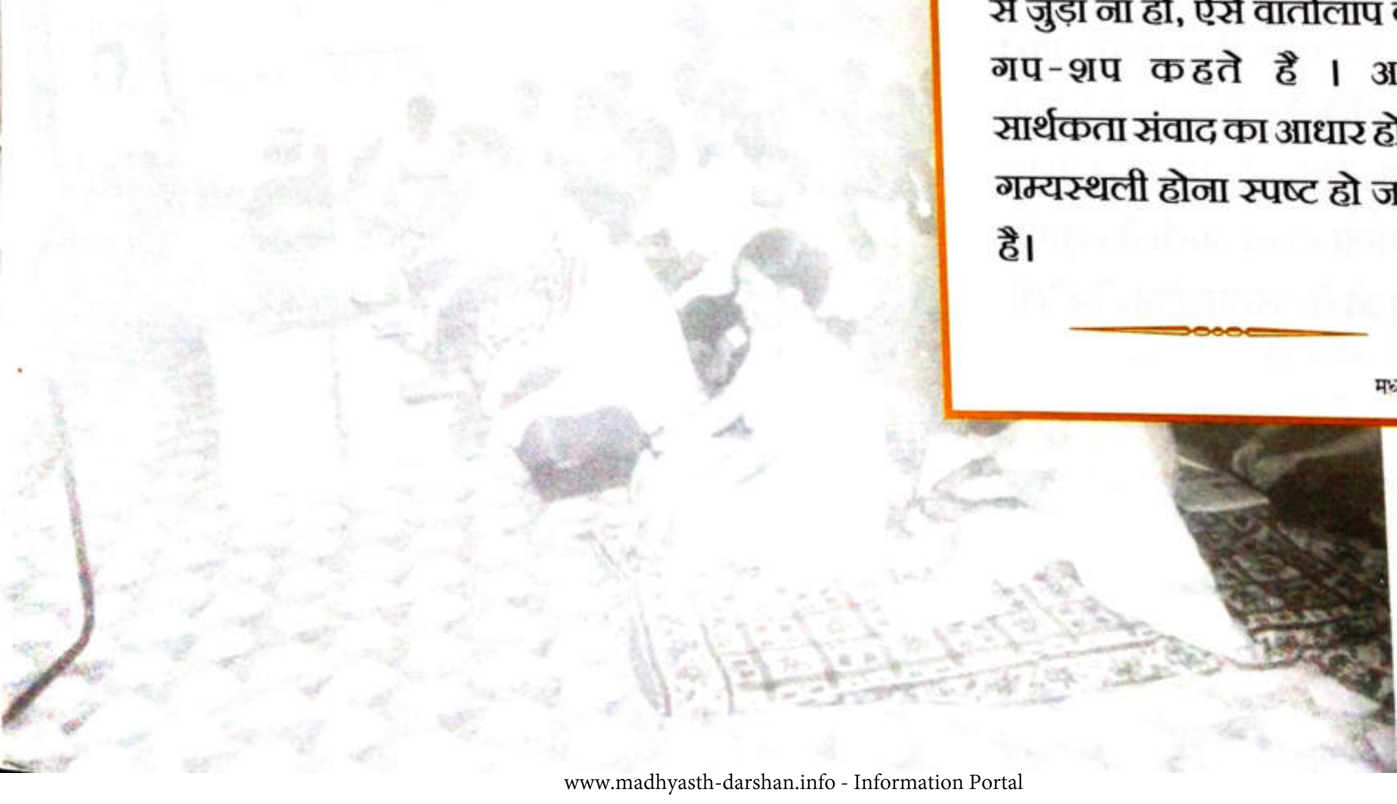



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



**वर्तमान स्थिति**

उपरोक्त चर्चा में उठाये गये प्रश्न नये नहीं है लेकिन इनका कोई व्यवहारिक समाधान भी उपलब्ध नहीं हुआ। हमने चाहे इंजीनियार, डॉक्टर, वकील, आई.ए.एस., नेता, व्यापारी आदि को बड़ी उपलब्धि मान सकते हैं। लेकिन परिवार में तालमेल पूर्वक जीना तथा सही मायने में समृध्दि (असुरक्षा के भाव से मुक्ति) होना संभव नही हुआ।

स्थायी समाधान के अभाव में दो प्रकार की जीवन शैलियाँ विकसित हुई पहली जिसमें सही गलत को कोई विशेष स्थान नहीं है , किसी भी तरह धन,पद, सम्मान पाया जाए यही सफलता है। इसको भौतिकवाद कहा गया है। दूसरी ओर धार्मिक उपदेश परंपरा रही जिसके अनुसार आवश्यकता सीमित रखनी चाहिए,साथ कुछ नहीं जाएगा,सारा सुख ईश्वर प्राप्ति में है, इसको अध्यात्मवाद कहा गया। भौतिकवाद ने भोग एवं अध्यात्मवाद ने त्याग की प्रवृति दी, दोनों ही विधाओं में जीकर मानव जाति समस्याओं से मुक्त नहीं हुई।

**समस्या है तो समाधान है ही**

मानव एक प्राकृतिक ईकाई है। प्रकृति में स्वंय स्फूर्त विधि से बनी इकाईयां अपने आप में सम्पूर्ण और पूर्ण है। आवश्यकता है मानव को जैसा है वैसा समझने की। मध्यस्थ दर्शन के माध्यम से मानव सहित प्रकृति की समस्त इकाईयां एवं उनके परस्पर संबंधों का तर्कपूर्ण विधि से अध्ययन संपन्न हो पाया है। इसी आधार पर मानव एवं प्रकृति तथा उनके अंर्तसंबंधों को शिक्षा विधि से समझना एवं व्यवहार में जीकर प्रमाणित करना संभव हो पाया है।

संपूर्ण प्रकृति में चार अवस्थायें हैं जो क्रमश:

1. पदार्थावस्था (मिट्टी, पत्थर, मणि, धातु )
2. प्राणावस्था (वनस्पति, कीट, पतंग )
3. जीवावस्था (पशु - पक्षी )
4. ज्ञानावस्था (मानव)

> मुद्रा संग्रह में तृप्ति बिन्दु इसलिए नहीं है कि एक संख्या के बाद दूसरी संख्या बनी हुई है, गणितीय विधि से। जब हम एक संख्या को प्राप्त कर लेते है, तो अगली किसी भी संख्या को प्राप्त करने की कल्पना हो ही जाती है। तृप्ति वस्तुओं के सदुपयोग से होती है।
>
> मध्यस्थ दर्शन

उपरोक्त चारों अवस्थाओं में मानव को छोड़कर शेष सभी इकाईयां परस्पर पूरक एवं प्रकृति सहज व्यवस्था में है। मानव के अलावा शेष सभी इकाईयों का आचरण निश्चित है। इनके निश्चित गुण धर्म के आधार पर मानव इनके प्रति आश्वस्त होकर जीता है। लेकिन मानव-मानव के साथ विश्वास पूर्वक नहीं जी पा रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि मानव का आचरण अनिश्चित है। इस अनिश्चित आचरण का दुष्प्रभाव शेष तीनों अवस्थाओं पर असंतुलन, प्रदूषण के रूप में दिखाई देता है।

लेकिन हर मानव निश्चित आचरण के साथ ही जीना चाहता है तथा दूसरे से भी यही अपेक्षा रखता है। आदिकाल से मानव को भय, प्रलोभन, आस्था के माध्यम से नियंत्रित करने की कोशिश हुई परंतु अंतत: संघर्ष ही हाथ लगा। मानव समझ के आधार पर स्वनियंत्रित हो सकता है। वर्तमान शिक्षा से यह अपेक्षा थी कि इससे मानव में समझ सुनिश्चित होगी, वह सभ्य बनेगा, आचरण निश्चित होगा। **लेकिन पिछले 50 वर्षो को देखते हैं तो स्पष्ट होता है कि शिक्षा के प्रचार प्रसार के साथ प्रकृति में प्रदूषण तथा संबधों में टूटन बढ़ा है। अत: वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मानव के समझदार बनने की कोई व्यवस्था नही हैं। फिर समझ क्या हैं?**

अस्तित्व में हर इकाई किसी नियम से नियंत्रित है। अस्तित्व स्वयं में व्यवस्था है। मानव भी अस्तित्व में एक इकाई है इसलिए मानव भी किन्हीं नियमों से नियंत्रित है। ये नियम सार्वभौम है, शाश्वत है, देश काल दिशा से मुक्त है अपरिवर्तनीय है। इन्हीं नियमों के आधार पर समस्त इकाईयों का होना तथा मानव - मानव एवं शेष इकाईयों में अंर्तसंबंध स्पष्ट होता

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Technical Education in the Light of Universal Values

### वर्तमान व्यवस्था या अत्यवस्था ?

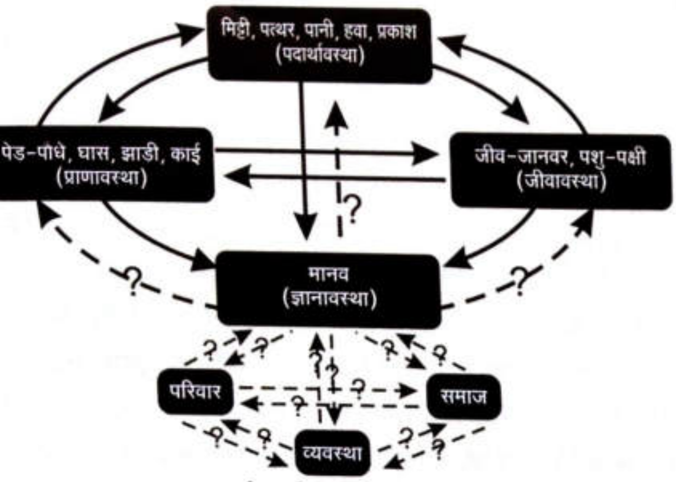


फलतः ईर्ष्या, द्वेष, युद्ध, संघर्ष, शोषण

### सार्वभौम व्यवस्था (समग्र विकास) का स्वरूप

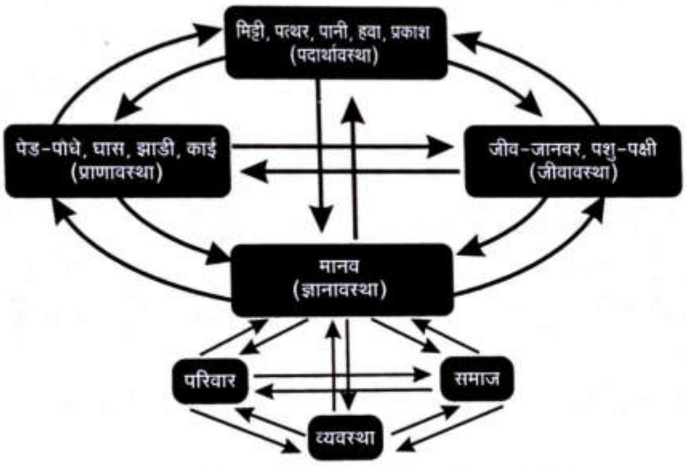


फलतः तालमेल परस्पर पूरकता पूर्ण व्यवस्था, उभय तृप्ति

है। अंर्तसंबंध समझ में आने से स्पष्ट होता है कि हर इकाई की अस्तित्व में निश्चित भागीदारी है। अस्तित्व ही सह-अस्तित्व है अर्थात हर ईकाई स्वयं में व्यवस्था है तथा समग्र व्यवस्था में भागीदार है। मानव समझ के आधार पर व्यवस्थित होता है व्यवस्थित होने का प्रमाण मानव का, मानव एवं शेष प्रकृति के साथ संबंधो में तालमेल पूर्वक जीने के रूप में मिलता है।

समाधान से हर मानव स्वयं में विश्वास एवं हर परिवार समृद्धि पूर्वक जी सकता है । जीवन विद्या शिविर सार्वभौम मूल्यों का व्यवस्थित शिक्षण है। सही समझ के आधार पर सर्वमानव लक्ष्य **मानव में समाधान, परिवार में समृद्धि, समाज में अभय एवं प्रकृति के साथ सहअस्तित्व** पूर्ण जीने के रूप मे स्पष्ट होता है । मानव लक्ष्य स्पष्ट होते ही शरीर का प्रयोजन स्पष्ट होता है । शरीर का प्रयोजन स्पष्ट होने से भौतिक आवश्यकतायें निश्चित है यह पहचान में आता है । साथ ही परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादन की क्षमता है यह भी समझ में आता है । इस प्रकार हर मानव एवं परिवार के समाधान एवं समृद्धिपूवर्क जीने का मार्ग प्रशस्त होता है।

भौतिकवाद ने सुविधा संग्रह के लिए शिक्षा दी , जो अव्यवस्था का कारण बना । अध्यात्मवाद ने भक्ति विरक्ति दी, जिससे व्यवस्था नहीं निकली। मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) से समाधान समृद्धिपूर्वक जीने का स्वरूप स्पष्ट हुआ, जिससे सभी आयामों में विश्वास पूर्वक जीने का मार्ग प्रशस्त होता है । इसे भले प्रकार से हम अध्ययन पूर्वक समझ चुके हैं

**बी.आर.अग्रवाल**
अभ्युदय संस्थान 09425202989

जो जिसका मूल्यांकन नहीं कर सकेगा,
वह उसका सदुपयोग नहीं कर सकेगा।

दुरुपयोग ही दुख है।
सदुपयोग ही सुख है।

सदव्यय ही कमाई है।
और अपव्यय ही गंवाई है।

जो जिसका अपव्यय करेगा,
वह उससे वंचित हो जायेगा।

मध्यस्थ दर्शन

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



## राष्ट्रीय प्रोद्योगिकी संस्थान रायपुर एवं छत्तीसगढ़ तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश हेतु अब तक हुए प्रयास (2002-06)

भारत सरकार की उच्चशिक्षा नीति के अनुसार मानवीय मूल्य शिक्षा के समावेश हेतु तकनीकी शिक्षा में किये गये प्रयासों को गति देने के लिए केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आई.आई.टी. दिल्ली में इंजीनियरिंग में मूल्य शिक्षा के लिए राष्ट्रीय स्रोत केन्द्र "National Resource Centre for Value Education in Engineering" (NRCVEE) की वर्ष 2002 में स्थापना के पश्चात् इस दिशा में उल्लेखनीय गति आई है। NRCVEE के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को जीवन ज्ञान, मानव के साथ संबंध एवं प्रकृति के साथ संबंध के बारे में दक्ष बनाने हेतु एवं उनमें सम्पूर्ण श्रेष्ठता को विकसित करने का एक अभिनव प्रयास शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर में **मध्यस्थ दर्शन** के प्रकाश में **जीवन विद्या** शिविरों के माध्यम से सन् 2002 से चल रहा है। इस प्रयास के अंतर्गत शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर द्वारा संचालनालय, तकनीकी शिक्षा, छत्तीसगढ़ शासन के सहयोग से अभ्युदय संस्थान, अछोटी (मानव के सर्वतोमुखी विकास को समर्पित संस्था) के माध्यम से छत्तीसगढ़ राज्य की तकनीकी शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों के लिए मानवीय मूल्य प्रशिक्षण कार्यशालाओं एवं कार्य गोष्ठियों का आयोजन विगत तीन वर्षों से निरंतर किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों का प्रभाव अत्यंत ही सकारात्मक रहा है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण प्रयास निम्नानुसार है :-

✦ शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर के अध्यापकों ने NRCVEE, आई.आई.टी. दिल्ली में 14 मार्च से 16मार्च 2002 तक "Integrating Human Values in Technical Education" पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया। इस कार्यशाला में तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश की पद्धति एवं प्रक्रिया पर विस्तार से विचार विमर्श कर इस हेतु दिशा निर्देशों पर सहमति हुई।

✦ उच्च शिक्षा में मानवीय मूल्यों की आवश्यकता- पर एक दिन की गोष्ठी 12 फरवरी 2002 को शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर में NRCVEE के सहअध्यक्ष प्रो. ऋषिराज गौड़ की अध्यक्षता में मेडिकल कालेज रायपुर, इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय रायपुर, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर एवं शासकीय विज्ञान महाविद्यालय रायपुर के अध्यापकों की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। उच्च शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश को अनिवार्य मानते हुए इस हेतु तत्काल प्रयासों एवं प्रयोगों की आवश्यकता - इस गोष्ठी का निष्कर्ष रहा।

✦ दिनांक 2 जुलाई 2002 को शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर में NRCVEE के अध्यक्ष प्रो. पी.एल. धर, सह अध्यक्ष प्रो. ऋषिराज गौड़, महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगिकीकरण संस्थान के अध्यक्ष प्रो. राजेन्द्र प्रसाद एवं प्रो. संतोष सत्या, विभागाध्यक्ष, रूरल टेक्नॉलाजी, आई.आई.टी. दिल्ली की उपस्थिति में -तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश से लाभ- विषय पर गोष्ठी सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी में लगभग 102 छात्रों एवं शिक्षकों ने भाग लिया।

मैं खुद अपने आप को इतना ज्यादा दुःखी करती थी कि मेरी height बहुत कम है। मैं औरों की तरह सुन्दर नहीं हूं और Inferiority complex से घिरी हुई रहती थी जिसके कारण मैं अपने गुणों को भी ठीक से नहीं पहचान पाती थी। जिसके कारण मैं हर क्षेत्र में पीछे होती चली जा रही थी और शायद इस शिविर में मेरा आना नहीं हो पाता तो मैं और कितने अंधकार में खुद को डाल दी होती। शिविर के बाद मैंने अपने जीने का मतलब समझ लिया है। खुद के बारे में विचार बदल जाने से वाकई बहुत खुशी है, मैंने जान लिया है कि जीवन बहुत सुन्दर है। इस जीवन विद्या शिविर ने तो मेरी जिन्दगी को देखने के नजरिये को बदल डाला।

05.12.2003

● **प्रीति नेताम** B.Tech., Mechanical
NIT, Raipur

मुझे लग रहा था कि हम सब शिविर में आने के बाद हरे रामा हरे कृष्णा का जाप तो नहीं कर रहे होंगे पर यहां आने के बाद ऐसा कुछ माहौल नहीं मिला, यहां कोई अध्यात्मिकता की बात नही थी यहां खुली चर्चा भी इसे सरल , सहज भाषा में किया गया। यहां भाव को शब्द मिला और शब्द को अर्थ मिला।

● **विकास स्वर्णकार,** B.E.ET&T
Jagdalpur

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

✦ वर्ष 2002 एवं 2003 में मानवीय मूल्य शिक्षा के समावेश हेतु प्रयोगों के रूप में विद्यार्थियों के लिए मध्यस्थ दर्शन आधारित 04 जीवन विद्या शिविरों का अनौपचारिक आयोजन किया गया। इनमें 93 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

राज्य के इंजीनियरिंग कॉलेजों के शिक्षकों का प्रथम सात दिवसीय जीवन विद्या शिविर अभ्युदय संस्थान में किया गया जिसका उद्घाटन प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री अजय चन्द्राकर ने किया एवं समापन ए.जे.वी. प्रसाद, सचिव उच्च शिक्षा छ.ग. शासन की उपस्थिति में हुआ

✦ सत्र 2003-04 से राज्य के समस्त इंजीनियरिंग महाविद्यालयों में अभातशिप (AICTE) का आदर्श पाठ्यक्रम लागू किया गया। पूर्व के प्रयासों की सफलता को देखते हुए शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर, बिलासपुर एवं जगदलपुर ने इस पाठ्यक्रम में सभी सत्रों में अनिवार्य जनरल प्रोफिसिएंशी (General Proficiency) विषय की कक्षाएँ अभ्युदय संस्थान, अछोटी के सहयोग से मध्यस्थ दर्शन आधारित कक्षाओं एवं जीवन विद्या शिविरों द्वारा करवाने का निर्णय लिया। इस हेतु शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर ने अभ्युदय संस्थान, अछोटी के साथ 3 नवंबर 2003 को एक आपसी समझौता पत्र (Memorandum of Understanding) पर हस्ताक्षर किये। इस MoU के तहत जनरल प्रोफिसिएंशी की सभी कक्षाएं अभ्युदय संस्थान, अछोटी के विशेषज्ञों द्वारा ली जावेंगी एवं प्रत्येक वर्ष के विद्यार्थियों का एक जीवन विद्या शिविर अभ्युदय संस्थान, अछोटी में आयोजित होगा। इस MoU के तहत नवंबर 2003 से अक्टूबर 2005 तक लगातार आयोजित जीवन विद्या शिविरों से 1332 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। इसी प्रकार शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय बिलासपुर के 210 एवं शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय जगदलपुर के 230 विद्यार्थी जनरल प्रोफिशिएंशी पाठ्यक्रम के अंतर्गत मूल्य शिक्षा से मानव चेतना विकास की मध्यस्थ दर्शन आधारित कक्षाओं एवं शिविरों से लाभान्वित हुए हैं।

**इन प्रयासों से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, अभिव्यक्ति क्षमता, विश्लेषणात्मक क्षमता, समस्या निवारण कौशल, आपस में तालमेल, कक्षाओं में अनुशासन, जिम्मेदारी, रैगिंग में नियंत्रण आदि में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गयी है।**

आज तक मैं अपने अस्तित्व को समझ नहीं पाया था। शायद मुझे कोई समझाने वाला ही नहीं था। इसलिए मैं इन सब संस्थाओं को एक ढकोसला मानता था। परन्तु जब यहां के लोगों से मिला और यहां जो शांति व विश्वास की मिली जुली व्यवस्था देखी तो मेरे मन में नए-नए सवाल उठने लगे क्या ये दिखावा है ? अगर नहीं तो बाकि सब क्या है ? मैं उस रात ठीक से सो नहीं पाया और जब दूसरे दिन से मेरी शिविर की यात्रा आगे बढ़ी तो मेरे सारे सवालों का जवाब मुझे मिलने लगा। यहां आकर मैंने अपने अस्तित्व को जाना मुझे एक नई दिशा और एक नई ऊर्जा यहां से मिली जिसके बारे में जितना भी कहो वह कम है।

अब पैसा कमाना ही मेरा लक्ष्य नहीं है मेरा लक्ष्य है ऐसी व्यवस्था करना जिससे कम से कम दस लोगों को नौकरी मिल सके। मैं एक अच्छा इंसान बनना चाहता हूं और एक इंजीनियर के नाते पैसा कमाने की बजाय लोगों के लिए नौकरी उपलब्ध कराने को ज्यादा महत्व दूंगा।

आज मेरे शिविर का अंतिम दिन है और आज हमें वापिस घर जाना है पर मुझे ऐसा लग रहा है मैं इस घर को छोड़कर कहीं और जा रहा हूं मुझे यहांसे जितना कुछ मिला है वह असीम है जिसे मैं बयान नहीं कर सकता।

30.10.2004

● **विवेक सोनी** B.Tech. I.T.
NIT, Raipur



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

# शिक्षा में एक अभिनव प्रयोग

✦ मानवीय मूल्य शिक्षा के समायोजन हेतु किये गये प्रयासों से छत्तीसगढ़ के समस्त तकनीकी शिक्षा संस्थानों को अवगत कराने के उद्देश्य से संचालनालय तकनीकी शिक्षा द्वारा प्रायोजित एक दो-दिवसीय कार्यशाला "Inclusion of Human Values in Technical Education for Sustainable Development of Society" का आयोजन शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर में दिनांक 1 व 2 मार्च 2004 को किया गया। इस कार्यशाला में मूल्य शिक्षा केन्द्र, आई.आई.टी. दिल्लीं के निदेशक प्रो. आर.आर. गौड़, रविशंकर विवि के कुलपति डॉ. बी.पी. चन्द्रा एवं एच.बी.टी.आई. कानपुर के श्री गणेश बागड़िया एवं साधना भट्टाचार्य साथ ही इसमें 196 अन्य प्रतिनिधियों, जिनमें तकनीकी शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्य, संचालक, प्रशासक एवं अध्यापक शामिल थे, ने सक्रिय भाग लिया। कार्यशाला के निष्कर्षों में प्रमुख – अब तक किए गए प्रयासों की प्रशंसा के साथ समर्थन, एवं समस्त अध्यापकों द्वारा अनिवार्य रूप से मानवीय मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भागीदारी को सुनिश्चित करने हेतु प्रयासों की आवश्यकता को महसूस किया ।

घर की आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण बचपन से मुझे यही सिखाया जाता रहा है कि मुझे बहुत पैसा कमाना है और शायद इसी कारण मेरे मन में बचपन से ही बोझ था जिसके कारण मैं अपने बचपन का आनंद न ले सका। और मेरा व्यक्तित्व घट गया जब मैं अपने नगर से रायपुर शहर अध्ययन करने आया तो मैं हमेशा बड़े-बड़े घरों और इमारतों को देखकर ये सोचता था कि एक दिन मैं भी इससे बडी इमारत खडी करूँगा और आराम तलब वस्तुओं से ही अपने सुखी होने का अंदाजा लगाता था। शिविर में आने के बाद मेरी सोच में जमीन आसमान का फर्क आया मैं मानव की वास्तविक आवश्यकता एवं लक्ष्य को समझ पाया और स्वयं मानव को जान गया।

15.04.2004

● कमलेश रात्रे B.Tech., Mechanical
NIT, Raipur

मैं सोचता था कि अभ्युदय संस्थान प्रकृति प्रेमी लोगों की कोई संस्था है जिसमें शहरी जीवन से उबे हुए लोग आकर अपनी समस्याओं के समाधान के लिए कुछ करते हैं। कुछ लोगों से यह भी सुन रखा था कि यह एक स्वयंसेवी संस्था है जो कृषि से जुड़ी शासकीय योजनाओं को लोगों तक पहुंचाती है।

शिविर करने के बाद ये दोनों ही बातें बिल्कुल गलत साबित हुई यहां की वास्तविकता कुछ अलग है। मनुष्य और मनुष्य प्रकृति तुल्य समरसता में कैसे जीवित रह सकेगा। उसका समाधान पूर्वक उत्तर मौजूद है।

● केशव राम साहू प्रधान पाठक
शा.पू.माध्य. शाला मुरमुंदा (दुर्ग)

✦ कार्यशाला के निष्कर्षों को लागू करने के क्रम में संचालनालय तकनीकी शिक्षा एवं शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर द्वारा अभ्युदय संस्थान, अछोटी के सहयोग से गुणवत्ता विकास कार्यक्रमों के अंतर्गत अब तक आयोजित पाँच प्रशिक्षण शिविरों में 97 अध्यापक एवं कर्मचारी लाभान्वित हुए हैं।

✦ छत्तीसगढ स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा (Value Education) को सन् 2006 जुलाई से पाठ्यक्रम में शामिल किया गया।

✦ राज्य के 13 इंजीनियरिंग कालेजों के 26 शिक्षकों ने दिनांक 26 जून 2006 से 2 जुलाई 2006 तक मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण के रुप में सात दिवसीय जीवन विद्या शिविर में भाग लिया।

इस प्रकार मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में मानवीय मूल्य शिक्षा द्वारा मानवीय मूल्य शिक्षा द्वारा मानव चेतना के विकास हेतु सन् 2002 से अभ्युदय संस्थान, अछोटी के सहयोग से निरंतर आयोजित कार्यक्रमों में छत्तीसगढ़ के इंजीनियरिंग कालेजों के लगभग 3500 विद्यार्थी एवं अध्यापक लाभान्वित हो चुके हैं। इस प्रकार अब तक के प्रयासों से छत्तीसगढ़ में तकनीकी शिक्षा के लिए मानवीय मूल्य शिक्षा द्वारा मानव चेतना के विकास हेतु एक मजबूत आधार रखा जा चुका है। आवश्यकता अब इन प्रयासों के आधार पर, इंजीनियरिंग छात्रों में मानव चेतना के विकास हेतु, तकनीकी शिक्षा में एक नियमित पाठ्यक्रम के समावेश की है ताकि सभी विद्यार्थियों को इसका लाभ मिल सके।

संदीप शर्मा
समाधान
मूल्य शिक्षा केन्द्र
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर
Tel : 0771-2255261
093294-91123

NIT Raipur Efforts - Magazine_c

# राष्ट्रीय शिक्षा नीति और मूल्य शिक्षा

Technical Education in the Light of Universal Values

वर्तमान शिक्षा व्यक्ति को सुविधा एवं भोग के संसाधन उपलब्ध करने में सक्षम बनाती है। इससे व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्रों में लाभोन्माद एवं भोगोन्माद की प्रवृत्ति हावी होने से निरन्तर संघर्ष एवं समस्याओं में वृद्धि हुई है । वास्तव में आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षा मात्र रोजगारोन्मुखी न होकर समग्र विकासोन्मुखी हो। ऐसा तभी सम्भव है जब मानव चेतना का विकास हो सके। स्वतंत्रता पश्चात विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1948–49) से लेकर दसवीं पंचवर्षीय योजना तक अनेक आयोगों, समितियों एवं नीतियों में शिक्षा को मूल्य आधारित कर मानवचेतना विकासोन्मुख करने की आवश्यकता पर बल दिया है। वर्तमान शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश पर जोर देते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में समाज में मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए शिक्षा को एक प्रभावकारी माध्यम स्वीकार किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा द्वारा हमारे सांस्कृतिक बहुआयामी समाज में सार्वभौम एवं सार्वकालिक मूल्यों द्वारा देश एवं समाज में एकता एवं अखंडता की स्थापना की आवश्यकता पर जोर दिया गया है। शिक्षा नीति के अनुसार मानवीय मूल्यों की शिक्षा रहस्यवाद, धर्मान्धता, हिंसा एवं अंधविश्वास से पूर्णतया मुक्त करने वाली तथा वैज्ञानिक, दर्शन आधारित, व्यवहारिक तथा अनिवार्य प्रयोग एवं परिणाम द्वारा मूल्यांकन आधारित होनी चाहिए।

मानवीय मूल्यों की स्थापना राष्ट्रीय शिक्षा नीति की क्रियान्वयन योजना (1992) की महत्वपूर्ण दिशा है। पार्लियामेंट्री स्टैंडिंग कमिटी ऑन वैल्यू एजुकेशन ने 1999 में शिक्षा में मूल्यों के समावेश पर पिछले चार दशकों में हुई प्रगति पर असंतोष जाहिर करते हुए शिक्षा को सार्वभौम मानवीय मूल्यों के सापेक्ष तथा मूल्य आधारित बनाने पर बल दिया था। शिक्षा को मूल्य सापेक्ष बनाने को प्राथमिकता देते हुए मानव संसाधन मंत्रालय में "मानवीय मूल्य शिक्षा" का विभाग अलग से बनाया गयौ। दसवीं पंचवर्षीय योजना में शिक्षा में आवश्यक महत्वपूर्ण परिवर्तन के रुप में देखते हुए इसके लिए आर्थिक प्रावधान भी किए गए हैं। स्कूली शिक्षा के लिए एन.सी.ई.आर.टी. उच्च शिक्षा के लिए यू.जी.सी. तकनीकी शिक्षा के लिए आई.आई.टी. दिल्ली इत्यादि विभिन्न संस्थाओं में "मूल्य शिक्षा संसाधन केंद्रों" की स्थापना की गयी है।

छत्तीसगढ़ शासन के तकनीकी शिक्षा विभाग ने इसके महत्व को स्वीकारते हुए विभाग के वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन (2004–2005) में मूल्य शिक्षा को तकनीकी शिक्षा के साथ समायोजन कर आगामी वर्ष से सभी संस्थाओं में लागू करने की योजना प्रस्तुत की है। ए.आई.सी.टी.ई. तकनीकी शिक्षा के उद्देश्य के रुप में इंजीनियरिंग छात्रों के संर्वागीण विकास का लक्ष्य रखती है जो मूल्य शिक्षा के बिना सम्भव नहीं है। छत्तीसगढ़ स्वामी

> इंजिनियरिंग कॉलेजों में जो शिक्षा दी जा रही है वह सिर्फ सूचनायें ही है, चीजों के वास्तविक अर्थ से विद्यार्थी अनभिज्ञ है इंजीनियरिंग शिक्षा में यदि मानव मूल्यों की शिक्षा दी जायेगी तो वह सचमुच बेहद लाभकारी होगी क्योंकि छात्र exinting realitig को समझकर मान्यताओं से मुक्त होकर उत्पादकता ,शोध आदि को बढ़ावा देंगे जो कि देश के भविष्य के लिए बेहद लाभकारी होगा।
>
> 15.04.2004 — बेनडिक्ट थॉमस Lect.- Mech. Deptt. MPCC Engg. & Tech. Bhilai
>
> शिविर में बहुत ही सरल तरीके से बहुत ही जटिल विषयों को समझाने का प्रयास प्रश्नोत्तर माध्यम से किया गया जो काफी सराहनीय रहा। यहाँ परमाणु से लेकर सम्पूर्ण ब्रह्मांड तक की यात्रा की।
>
> — टी.सी. मोहनानी Lect.- Chem. Deptt. R.I.T. Durg

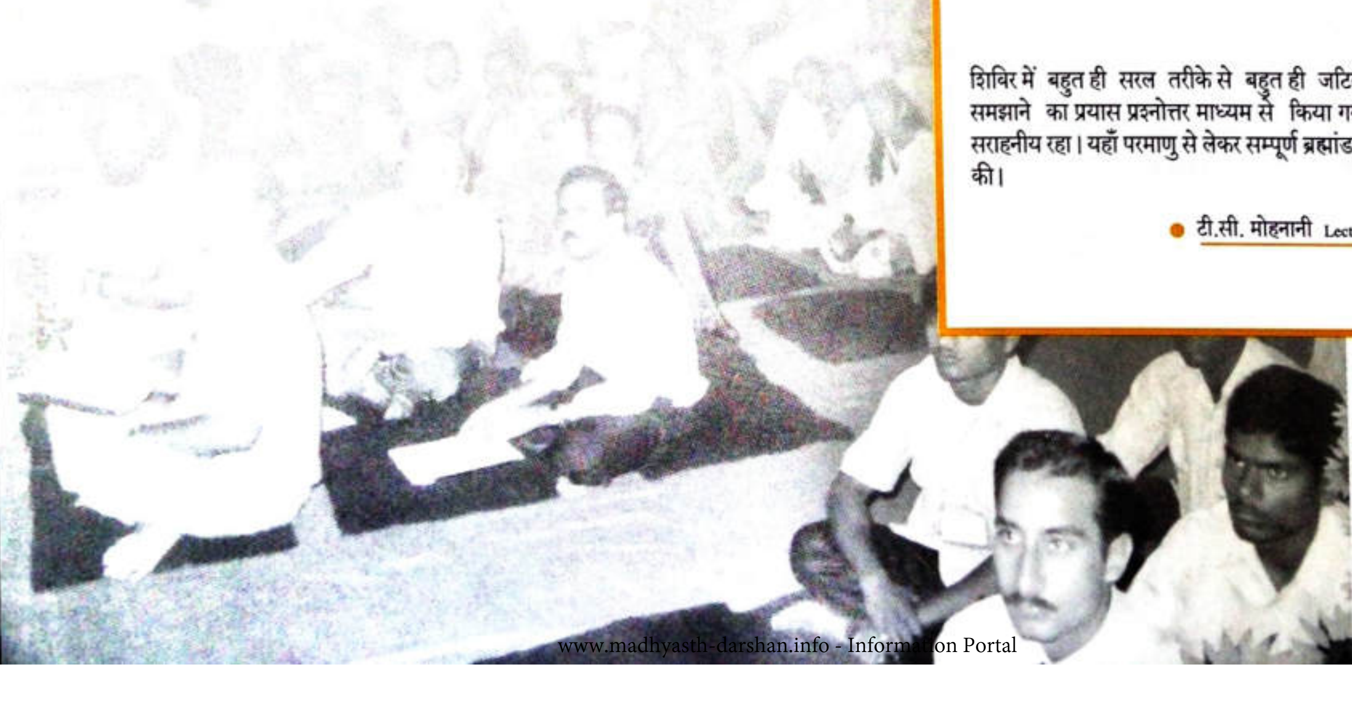



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

# शिक्षा में एक अभिनव प्रयोग

विवेकानन्द तकनीकी विश्वविद्यालय ने भविष्य के अभियंताओं के व्यक्तित्व विकास में मानवीय मूल्यों के समावेश की आवश्यकता को ध्यान में रख इंजीनियरिंग शिक्षा के पाठ्यक्रम में मानवीय मूल्य शिक्षा को शामिल किया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा मानवीय शिक्षा के लिए अपेक्षित मापदण्डों के अनुसार इस तरह की शिक्षा रहस्यवाद एवं सम्प्रदायवाद से पूर्णतया मुक्त, ठोस तार्किक एवं दार्शनिक आधार युक्त, सार्वभौम, तथा ऐसे तथ्यों व सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए जिनका प्रयोग एवं सत्यापन किया जा सके। ''मध्यस्थ दर्शन'' इन सभी मापदण्डों को पूरा करता है। जीवन विद्या शिविरों द्वारा ''मध्यस्थ दर्शन'' आधारित मानवीय मूल्यों की शिक्षा पूर्णतया वैज्ञानिक, दर्शन आधारित, व्यवहारिक तथा अनिवार्य प्रयोग एवं परिणाम द्वारा मूल्यांकन आधारित शिक्षा है।

मानवीय मूल्य शिक्षा के अपने प्रयासों, उनके परिणामों एवं लाभान्वित वर्ग के मूल्यांकन से हमारा यह विश्वास बना है कि तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्य शिक्षा को ''मध्यस्थ दर्शन'' आधारित मानव चेतना विकास के एक औपचारिक पाठ्यक्रम के रुप में अनिवार्य करने से इसके निम्नलिखित दूरगामी परिणाम होंगे:

1. इंजीनियर विकास के धारक–वाहक हैं, मूल्यों के आलोक में, विकास की यात्रा संतुलित होगी।
2. मानव चेतना विकास से स्वयं में विश्वास प्राप्त अभियंता केवल नौकरी की दौड़ में न रह कर उद्यमिता के रास्ते से प्रदेश एवं सम्पूर्ण देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।
3. मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत युवा बेहतर सामाजिक व्यवस्था हेतु अपने योगदान को समझ कर स्वस्फूर्त प्रयास करेंगे। इससे विभिन्न स्रोतों का लाभ समाज में अंतिम व्यक्ति तक पहुंच पाएगा।
4. महाविद्यालयों में स्वानुशासन एवं सृजनात्मक उत्साह का माहौल रहेगा। महाविद्यालय देश में इस अभिनव प्रयोग से उच्च प्रतिष्ठा को प्राप्त करेंगे।

अब तक उच्चशिक्षित युवा रोजगार, धन, पद आदि की चूहा दौड़ में शामिल होते रहे हैं। प्रकृति और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी एवं भूमिका के प्रति वे प्रायः उदासीन रहते हैं। ''मध्यस्थ दर्शन'' आधारित मानव चेतना विकासोन्मुख मूल्य शिक्षा उन्हें जीने के प्रत्येक स्तर – जैसे परिवार, समाज, एवं प्रकृति में वर्तमान अंतर्सम्बन्धों से अत्यंत तार्किक, प्रयोगधर्मी व स्वमूल्यांकन आधारित तरीके से परिचित कराती है। इससे युवा में मानव चेतना का विकास होता है एवं मानव चेतना विकसित युवा ही परिवार, समाज, एवं प्रकृति से अपने सरोकार को समझ कर दोनों की उभयतृप्ति एवं उभय समृद्धि हेतु कार्य–व्यवहार कर पाता है। मानव चेतना जागृति के पूर्व ऐसा सम्भव नहीं है। इसलिए आज महती आवश्यकता शिक्षा को मानव चेतना विकास से सीधे जोड़ने की है।

**समीर बाजपेयी**
समन्वयक
समाधान
मूल्य शिक्षा केन्द्र
राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर
Tel : 0771-2255261
09826167065

What technical education is able to serve is increasing the facilities in an exponential form without being aptly concerned for ecological balance . Human values have palyed and will play a key role in the time to come.

The camp no doubt was an eye opener and help us to know the things as they are The real picture is much different & beautiful than I originally thought .

● **Ajay Tiwari** Mech. Deptt
B.I.T. Durg

तकनीकी शिक्षा ने बढ़ती हुई आवश्यकताओं को पूर्ण करने में एक असफल प्रयास किया जबकि पूर्ण आवश्यकता समाधान पूर्वक जीने में थी, जिसकी पूर्ति हेतु मानवीय मूल्यों की तकनीकी शिक्षा में आवश्यकता आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।

● डॉ. आर.एन. खरे Civil. Deptt.
B.I.T. Durg

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



## National Institute of Technology Raipur (Formerly Govt. Engg. college)

Technical Education in the Light of Universal Values

The foundation stone of the institute was laid by our first President Honorable Late Dr. Rajendra Prasad on 14th September 1956. The magnificent and beautiful building of the college was inaugurated by our first Prime Minister Honorable Late Pt. Jawaharlal Nehru on 14th March 1963. The pass-outs of this college are very well placed and are working in responsible positions in the government, multinational companies, defence, public sectors, research laboratories, universities and colleges in India & abroad.

Government Engineering College was started in 1956 with two branches namely, Metallurgical and Mining Engineering with an intake of 15 each. Since then, the institute has grown into the biggest and most reputed technical institution in the state of Chhattisgarh. The institute offers 12 Under Graduate and 6 Post Graduate Programmes.

**UNDER GRADUATE LEVEL**

| S.No. | Courses Offered | Intake | Commenced |
|---|---|---|---|
| 1. | Metallurgical Engineering | 60 | 1956 |
| 2. | Mining Engineering | 50 | 1956 |
| 3. | Civil Engineering | 50 | 1958 |
| 4. | Mechanical Engineering | 60 | 1958 |
| 5. | Electrical Engineering | 60 | 1958 |
| 6. | Chemical Engineering | 40 | 1963 |
| 7. | Architecture | 40 | 1984 |
| 8. | Electronics & Telecommunication | 60 | 1985 |
| 9. | Information Technology | 60 | 2000 |
| 10. | Computer Science & Engineering | 60 | 2000 |
| 11. | Bio Technology | 40 | 2003 |
| 12. | Bio Medical Engineering | 40 | 2003 |

**POSTGRADUATE LEVEL**

| S.No. | Courses Offered | Intake | Commenced |
|---|---|---|---|
| 1. | M. Tech. In Applied Geology | 10 | 1960 |
| 2. | M.E.Civil in Water Resources Development & Irrigation Engineering | 13 | 1986 |
| 3. | Master of Computer Application | 60 | 1988 |
| 4. | M.E. Mechanical in Energy System & Pollution | 13 | 1988 |
| 5. | M.E. Chemical in Chemical Process & Design | 18 | 1955 |
| 6. | M. Tech. Computer Technology | 18 | 2000 |

प्राकृतिक एवंमानवीय संतुलन एवंअसंतुलन का प्रधान कारण मानव ही है। मनुष्य को अपने विकास एवंजागृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए नियम त्रय (प्राकृतिक, सामाजिक, बौद्धिक) का अनुसरण एक अनिवार्य प्रक्रिया है। ऋतु संतुलन को बनाये रखने के लिए भूमि में आवश्यकीय मात्रा में खनिज, वनस्पति को सुरक्षित रखते हुए उपयोग करना, साथ ही उसकी उत्पादन प्रक्रिया में विध्न उत्पन्न नहीं करना और सहायक होना ही प्राकृतिक नियम का तात्पर्य है।

असंग्रह (समृद्धि), स्नेह, विद्या, सरलता एवंअभय (वर्तमान में विश्वास) के रूप में बौद्धक नियम है।

स्वधन, स्वनारी / स्वपुरूष एवंदयापूर्ण कार्य व्यवहार के रूप में सामाजिक नियम है।

In view of its great past with 50- year-old record of excellence and several strengths, the institute has been recently declared as NIT (National Institute of Technology). Now with this NIT, the students of the state will be able to get the best possible technical education in central India.

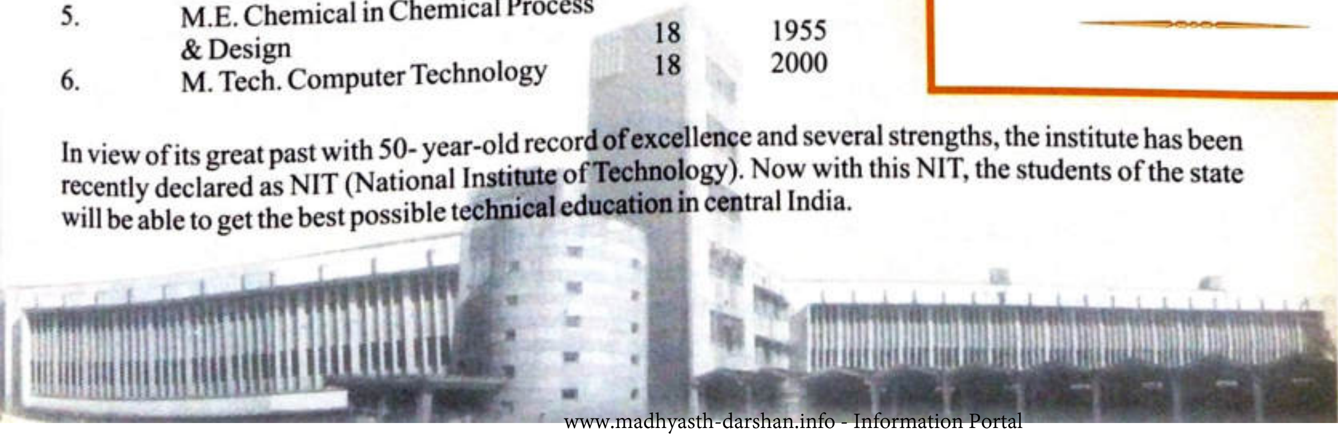



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## The Chhattisgarh Swami Vivekanand Technical University

# Mission CSVTU

To provide education, research and service in a rich intellectual environment sensitive to local, national and global aspirations, so as to prepare the students possessing knowledge, creative ability and entrepreneurial attitude for becoming successful in globally challenging atmosphere.

Chhattisgarh Swami Vivekanand Technical University (CSVTU) has been established by an Act(No.25 0f 2004) of Legislature passed by the Chhattisgarh State Govt. Assembly, wide notification No.639/21-A/Prarupan/2004 date 21st Jan 2005 and published in the State Govt. gazette 24th January, 2005. The University incorporates the purpose of ensuring systematic, efficient and qualitative education in engineering and technological subjects including Architecture and Pharmacy at Research, Postgraduate, Degree and Diploma level.

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर एवं अभ्युदय संस्थान, अछोटी द्वारा,प्रकाशित सार्वभौम मूल्यों के प्रकाश में तकनीकी शिक्षा विषय पर समाधान के रूप में प्रकाशित किया जाने वाला दस्तावेज सर्वसाधारण के और विशेष तौर पर तकनीकी शिक्षा से संबंधित व्यक्तियों के लिए सुलभ किया जा रहा है।

इस प्रयास के लिए मैं इस दस्तावेज के प्रकाशकों को हार्दिक बधाई प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि मानव मूल्यों के संवर्धन एवं विकास हेतु इस प्रकार के प्रयास निरंतर जारी रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

**डॉ. बी. के. स्थापक**
कुलपति
छ.ग. स्वामी विवेकानंद तकनीकी विश्वविद्यालय
फोन: 0788-2261311 www.csvtu.ac.in

**1. BHILAI**
*** Rungta College of Engineering & Technology,**
*** Shri Shankaracharya College of Engineering & Technology,**

**2.BILASPUR**
*** Government Engineering College,**
*** Chouksey Engineering College,**

**3.DURG**
*** Bhilai Institute of Technology,**
*** M.P Christian College of Engineering & Technology,**
*** Chatrapati Shivaji Institute of Technology,**

**4. JAGDALPUR**
*** Government Engineering College,**

**5. RAIGARH**
*** Kirodimal Institute of Technology,**

**6. RAIPUR**
*** Disha Institute of Management & Technology,**
*** G.H Raisoni Institute of Architechure & Interior Designing,**
*** Government Engineering College,**
*** Raipur Institute of Technology,**
*** Shri. Rawatpura Sarkar Institute,**

**7. RAJNANDGAON**
*** Chhattisgarh Institute of Technology,**

CSVTU has introduced "Value Education" as a compulsory subject in the curriculum of all the branches of engineering. A training workshop for teachers of all the engineering colleges of Chhattisgarh teaching this course was organized at Abhyudaya Sansthan from 26 June to 2 July 2006. The syllabus of "Value Education" is-



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Technical Education in the Light of Universal Values

# Chhattisgarh Swami Vivekanand Technical University, Bhilai

Semester : B.E. 3rd Sem.
Subject : Value Education

| | |
|---|---|
| Branch | Common to all Branches |
| Code | 300325(46) |
| No. of Periods | 2 pds/week |
| Tutorial Periods | NIL |
| Total Marks in End Semester Exam. | NIL |
| Teacher's Assessment | 40 Mks |

Minimum number of class test to be conducted : Two

Unit I

STUDY OF BASIC HUMAN OBJECTIVES : Everlasting solution (समाधान), prosperity (समृद्धि), trust in self and others (अभय), and coexistence (सहअस्तित्व) for balance in nature. Need and importance of aforesaid basic human objectives and how to achieve these.

Unit II

CONCEPT AND UNDERSTANDING OF HUMAN HAPPINESS

Meaning and concept of "happiness", incessant happiness, its relationship with gaurantee of physical needs, comforts, physical and sensory pleasures with its transient nature, misery; The only method to minimize incessant happiness : gaining right understanding about oneself, one's body, one's relationship with other human beings, Nature and total existence.

Unit III

PROPER UNDERSTANDING about the order in Nature (व्यवस्था) and co-existence (सहअस्तित्व) at various levels, such as, I and my body, family, society, Nature and existence.

UNDERSTANDING THE SELF: Understanding human reality I and my body, present understanding of the self, physical needs, relation with others and with Nature, gaining proper understanding of the self, discrimination between 'I' and my 'body', characteristics and the needs of 'I', of my 'body' and 'body' & 'I'.

Unit IV

**SYNERGETIC ORDER** (व्यवस्था) **and COEXISTENCE** (सहअस्तित्व) **among HUMAN, IN NATURE & IN EXISTENCE** :

-Conceptual understanding of natural relations and consequent values, of family and relation therein, of society and role of engineers therein,overall excellence' : concept, its universal parameters and total human behaviour

-Inanimate (जड़) and consciousness (चैतन्य) aspects of Nature, Four distinct synergetic orders in Nature -Padaarth Awastha (पदार्थ अवस्था), Pran Awastha (प्राण अवस्था), Jiv Awastha (जीव अवस्था), and Gyan Awastha (ज्ञान अवस्था), complementary supplementary evolutionary connection amongst above orders, identifying and implementing "Appropriate Technology".

- Synergetic order among interacting entities of Nature operating in all pervading changeless Shunya or Satta, Indivisible interconnectedness of Satta and Prakriti and its implications.

Unit V

**IMPLICATIONS OF PROPER UNDERSTANDING**

-Awakening (जागृति), the common goal of all human beings,

-promotion and perseverance of synergetic order and co-existence at all levels leading to incessant happiness.

-Natural manifestation of universal human values and thereby incessant happiness -Undivided Society (अविभाज्य समाज) and Universal Organised System (सार्वभौम व्यवस्था) -Transition from synergetic disorder (अव्यवस्था) to synergetic order (व्यवस्था)

Evaluation of Understanding, work and behaviour.

**REFERENCES**

1. Jeevan Vidya Camp (शिविर) notes 2. An Introduction to Jeevan Vidya by Shri A. Nagaraj



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## Role of Value Education in Technical Institutions of Chhattisgarh State

As the Head of one of the government engineering colleges of the state, I find provision of education in human values in the curricula of technical education institutions essential, meaningful and relevant. After attending the Jeevan-Vidya-Shivir at Abhudya Sansthan, Achhoti, with my colleagues and staff. I was happy to see its relevance and usefulness as a perfect media for inculcation of human values. With support from the Sansthan, we have organized five camps for the students and the staff of my institution, since then.

I am quite convinced that such systematic information about human being, its relations with other humans and nature, the mutual fulfillment in each of the relations, under the philosophy of Madhyastha Darshan exhorting the coexistence based existence, are a great base to the understanding of human consciousness. Till now, the goal of technical institutions has been the materialistic prosperity of human kind and no thought was given to develop the right understanding. Some note worthy points are:

1. The contents of 'Jeevan-Vidya' based on the "Madhyastha Darshan" clearly explore the role of a person at all levels of living; i.e. the person, the family, the society, the nature in a very logical and open way.

2. One comes to know that technology is a systematic way of producing human materialistic needs for the society. Use of technology should be in the light of right understanding resulting in right human behavior. Right human behavior results in happiness; that is the aim of every human being.

3. It defines properly the role of technical education and engineers in the context of global, national and local needs.

4. In the context of human values, the methodology adopted by all the engineering disciplines becomes more efficient and ensures the environmental balance. A student finds himself/herself prepared to use engineering for the betterment of the human kind.

To further propagate and strengthen the various activities leading to development of human consciousness in students and staff, we have established the SAMADHAN CELL.

**Prof. A. K. Gaharwal**
**Principal**
**GEC Bilaspur, C.G.**

यहांआने के बाद सबसे पहले तो मेरा यह भ्रम टूटा है कि आज भी दुनिया में सुशिक्षित वर्ग के ऐसे लोग बचे हैं जिनमें पूरी धरती के लिए कुछ करने की इच्छा है और वे केवल दावे नहीं करते अपितु छोटे-बड़े हर कार्य में लग कर अन्य मनुष्यों का सहयोग कर रहे हैं और मनुष्य को उसकी स्वयं की पहचान करवा कर उनसे ये प्रयत्न करवा रहे हैं कि वे अपने अस्तित्व को सार्थक बना लें।

● रश्मि राजवाडे B.Tech. - ET&T
NIT, Raipur

एक संपूर्णता , सहजता और पूर्ण आयाम जिसकी हर एक को तलाश रहती है। यह दर्शन हमारी इन आकाक्षाओं को पूर्ण कर सकता है। लेकिन फिर भी संदेह था कि पहले इतने प्रयास हुये थे क्या वे सब अपूर्ण है ? पर अब वैचारिक स्तर पर दर्शन के प्रति पूर्ण स्वीकृति है। जो बात स्वयं पूर्ण है उसे समझने के प्रयास में अपनी पूर्ण शक्ति लगाने को तैयार हूँ।

14.5.03

● अभिषेक सिंह BE - Mechanical
G.E.C. Raipur

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



Technical Education in the Light of Universal Values

# मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग

प्रदेश में मूल्य शिक्षा का विस्तार अन्य इंजीनियरिंग महाविद्यालयों में भी हो रहा है इसी क्रम में शा.इं. महाविद्यालय जगदलपुर एवं बिलासपुर के छात्रोंएवं प्राध्यापकों ने भी मूल्य शिक्षा कार्यशालाओं में सहभागिता दी है। इसी क्रम में महाविद्यालय मे आयोजित कार्यशाला में डॉ. रणसिंह आर्य ( जीवन विद्या प्रतिष्ठान, बिजनौर), डॉ. डी.एस. बल (तात्कलीन अति. संचालक तकनीकी शिक्षा, छ.ग. शासन ) सुश्री लीन (लंदन), एवं अभ्युदय संस्थान के सदस्यों ने भागीदारी दी।

मनुष्य अनादिकाल से सुखी होने के रास्ते खोजने का निरन्तर प्रयास करता चला आ रहा है परन्तु जितने भी धर्म या दर्शन प्रचलित है उनमें से कोई भी मनुष्य को निरंतर सुखी रहने के लिए मार्गदर्शन करने में सफल होते नहीं दिखते। आज चारों तरफ भय और आतंक छाया हुआ है। मनुष्य निश्चिंत होकर एक सुनिश्चित जीवन जीना चाहता है। ऐसा जीवन जहाँ चारों तरफ सुख-शांति हो। मनुष्य, मानवता और प्रकृति का दुश्मन न हो। यह बात स्पष्ट तौर पर समझ में आ रही थी कि कोई भी धर्म या दर्शन तार्किक आधार पर संतुष्ट नहीं कर पा रहे थे।

इंजीनियरिंग महाविद्यालय रायपुर, अभ्युदय संस्थान अछोटी दुर्ग एवं राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा संसाधन केन्द्र आई.आई.टी. नई दिल्ली के संयुक्त तत्वाबधान में **"समाज के समग्र विकास हेतु तकनीकी शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश"** विषय पर राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन, 1-2 मार्च 2004 को किया गया। इस कार्यशाला में मैं भी सहभागी बना। वहाँ पर वक्ताओं के व्याख्यान हुए, जिसमें प्रमुख रूप से डॉ. आर.आर. गौड, श्री गणेश बागड़िया एवं श्री सोमदेव त्यागी के व्याख्यान मुझे प्रभावित कर गये। यहीं पर **मध्यस्थ दर्शन** से मेरा परिचय हुआ।

इसके पश्चात् इंजीनियरिंग महाविद्यालय जगदलपुर में अभ्युदय संस्थान के सौजन्य से कई कार्यक्रम हुए। शिक्षकों और छात्र-छात्राओं के लिए कई शिविर संस्था एवं अभ्युदय संस्थान अछोटी, दुर्ग में आयोजित किये गये। परन्तु मैं किन्हीं कारणों से शिविर करने से वंचित रहा।

अंततः जुलाई/अगस्त 2005 में शिविर करने का अवसर प्राप्त हुआ। इस शिविर के वक्ता श्री सोमदेव त्यागी थे। शिविर से कई भ्रम दूर हुए जैसे कि हम मानते थे कि मनुष्य की आवश्यकताएं असीमित है और संसाधन सीमित, परन्तु ऐसा नहीं है, मनुष्य की आवश्यकताएं सीमित हैं और संसाधन असीमित। जरुरत है उसके नियोजित तरीके से उपयोग की। अभी तक सब कुछ जैसा है उसे मानकर चलते थे, शिविर से ज्ञात हुआ कि उसे जांचने की जरूरत है। जांचे हुए को ही माने।

**शिविर के पश्चात् अध्ययन जारी है। आगे एक और शिविर सपत्नीक करने का विचार है।**

जीवन विद्या की शिक्षा, तकनीकी शिक्षा के पाठ्यक्रम में अवश्य जुड़ना चाहिए। इसके अध्ययन से आने वाली पीढ़ी को निश्चित रूप से लाभ मिलेगा। क्योंकि वर्तमान में प्रकृति का विनाश कर जो तथाकथित विकास हो रहा उससे किसी का भला नहीं होने वाला है। सभी को सहअस्तित्व को समझना पड़ेगा। यह तभी कारगर **साबित होगा जब मूल्य शिक्षा पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग होगा। इसके लिए शिक्षक भी तैयार करने होंगे।**

**व्ही.एन. सिंह**
पूर्व प्राचार्य, शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय
जगदलपुर छ.ग.

जब मैं 14 साल का था तब से भगवान, ईश्वर को जानने की इच्छा थी ये इच्छा मेरे अंदर तब आई जब मैं अपनी नानी को इतना पूजा करते देखता था और उन्हें हमेशा खुश पाता था। मगर दूसरी तरफ ऐसे लोगों को देखता था जो पूजा करते हुए भी दुखी लगते थे। मुझे यह जानने की प्रबल इच्छा थी कि इस प्रकृति का नियंत्रण किस प्रकार होता होगा। इसके लिए मेरा परिवार भी कुछ जिम्मेदार था क्योंकि मेरी माता जी को भी इन बातों को जानने की इच्छा है। इसके लिए हम जो भी संस्थान का नाम जानते थे जो हमारे शहर में मौजूद है उनके पास जाकर देखा मगर हमें कोई स्पष्ट उत्तर नहीं मिल पाता था। मेरे अंदर बहुत सी शंकाएं, समस्यायें थी जिसका मैं एक निश्चित हल चाहता था। जब मैने कालेज में प्रवेश लिया तो मुझे पता नहीं था कि ऐसी कोई जगह है जहाँ मुझे अपने सवालों का जवाब मिल सकता है। फिर तो मेरे अन्दर यहांआने की प्रबल इच्छा जाग उठी। शिविर में आने के बाद मेरी सारी शंकायें समाप्त हो गयी। यहाँ आने के बाद मैने सबसे पहले अपने आप को जाना जिससे मेरे अंदर का विश्वास बढ़ गया। मैने यहां समझ, सुख, प्रकृति, व्यवहार, वास्तविकता और परमात्मा के बारे में जाना और पाया कि मेरी लगभग सारी शंकायें दूर हो गयी है।

05.03.2005

● **नीरज बन्छोर** B.Tech. ET&T
NIT, Raipur

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

# Jeevan Vidya as a part of Academic Curriculum at IIIT Hyderabad

IIIT, Hyderabad as a research university not only aims at training students to become engineers and technologists, researchers and innovators but also to inculcate a sense of values.

IIIT Hyderabad is experimenting with various approaches that impart "value-added" education to the students.

The education system should induce an overall development in students - in their self, in their behavior with friends and their family, and in dealing with society and nature. As a part of this endeavor, the institute has started a compulsory course on human values for the students of B Tech first year. The aim is to make the young students ponder over various aspects of day-to-day life, about their behaviour with others, about their goals of life, etc. These issues are important and students discuss them with a great sense of involvement. There are very little opportunities to reflect and discuss these issues in the prevailing educational system in the country and beyond.

The course uses Jeevan Vidya as its basis. Week long jeevan vidya shivirs were conducted for all the first year students during the semester by Prof. Ganesh Bagaria (from Dept. of Electronics & Communication, HBTI, Kanpur). Besides the students, a dozen faculty members, their families & non-teaching staff also participated in the shivirs.

Jeevan Vidya helps one to see things as they are. It does not negate the physical facilities, or the responsibility of fulfilling the primary needs of the body and family in terms of food, clothing and shelter, but differentiates the needs of the body from those of the self. By recognizing and prioritizing the needs of the self or the I, it strikes a balance between the body and the I. There is harmony prevalent in the nature. When human beings realize this harmony, they enjoy a life of happiness and prosperity and co-exist with the fellow human beings and other elements of nature without disturbing the harmony of the nature.

Besides the shivirs, there were also the discussion groups in the human values course. Some of the issues taken up for discussion in the first semester were the following:

1. Clothes and self esteem
2. English - Do you feel embarrassed,
3. Interaction and ragging
4. Power structure
5. Honesty
6. Self-confidence
7. Causes of unhappiness etc.

Students meet every week in small groups together with one faculty-mentor and 2 -3 student-mentors. Everyone in the group sits on

सापेक्षता में छोटे बड़े का बोध होने लगता है। संपूर्णता ओझिल हो जाता है। जबकि संपूर्णता में ही प्रत्येक ईकाई का (वस्तुका) सम्मान हो पाता है, मूल्यांकन और सम्मान करने वाला मानव ही है, इसके विपरीत सापेक्ष विधि से छोटे बड़े की ओर ध्यान जाता है। स्वयं को बड़ा मानना एक आवश्यकता हो जाता है। इसे बरकरार रखने के लिए अन्य को छोटा बनाये रखना भी एक आवश्यकता बन जाती है। इस क्रम में द्रोह, शोषण सारे काम होते हैं। मानव जब संपूर्णता के साथ सह-अस्तित्व में प्रमाणित करता है, इनसे मुक्त हो जाता है।

मध्यस्थ दर्शन

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



the floor in a circle. After every session, faculty mentors meet separately to discuss on the day's response and also decide on the issue for the next session. An email goes to all the students describing the topic. The idea is that students get some time to ponder over the issue before they come for the discussion.

Frequently, the discussion is initiated by describing a situation to the students and initiating a discussion over it. In the process, issues are raised. There are no lectures. Care is taken to avoid any kind of preaching It on the side of the faculty-mentors. Faculty members prefer to speak minimum and encourage students to participate in the discussion while weighing the pros and cons of the issue. The role of the faculty is seen as one of the initiator of the discussion and the provider of the missing links when and where required.

Technical Education in the Light of Universal Values

It is seen that some of the students remain shy in the beginning, however, even those who do not speak much are seen to be listening attentively to the discussions. As the weeks and months proceed they shake off

their hesitation and start participating in the discussion freely. Some students prefer to remain quiet but their body language speaks for their active mental involvement in the discussion.

The whole of the last semester was a learning session for the faculty mentors as well. They improve with every session and they realize their weakness as well. The combination of Jeevan Vidya shivirs along with weekly discussion groups has proved very effective. They raise issues - primary related to inner self, feelings and thoughts - and get students to explore them. Such exploration is new for the students as they have never discussed them in the past In the second semester, under the human values course, various activities are planned. Activities include excursion, tree-plantation, talk, debate, reading, teaching the underpriviledged, and so on. The activities will be held along with the weekly discussion groups.

Through this note, we have shared our experience of running the course on Human Values for last one year in this institute. We expect that this course will benefit students in realizing their self, developing harmonious relationships with their families and friends, living fruitfully in society and at peace with nature. The success of this course will hopefully encourage

Dr. Soma Paul
Dr. Rajeev Sangal
IIIT, Hyderabad
soma@iiit.ac.in
sangal@iiit.ac.in

मै इंजीनियरिंग के माहौल में ढलने लगा और 6 माह में ही गाली न देने वाला गंदी गालियां देना भी सीख गया। शिविर के बाद क्या कहूं दुनिया ही बदल गई मेरी कई धारणायें जो पैसे और पूर्ण व्यक्तित्व के संबंध में थी पूरी तरह गलत साबित हुई। मै विज्ञान का विद्यार्थी था, हर बात का प्रमाण मांगता था। पर कभी संतुष्ट नही हुआ। यहां आकर जब मैने जीवन के बारे में जाना , जांचा , समझा तो लगा कि जो मैं खोज रहा था पर जिसकी आशा थी ही नहीं वो मिल गया।

05.03.2005

● अमित जैन BE.Mechanical
GEC, Jagdalpur

वर्तमान के जो मूल्य -शिक्षा की बात की जा रहीं है वह सच ही है। जीवन विद्या की बात गहरी है अर्थ पूर्ण है। यह करो ऐसा ना करों से मुक्त है इसे स्कुली शिक्षा से ही शुरू किये जाने की आवश्यकता है। मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में उच्च एवं व्यवसायिक शिक्षा होने से बडे स्तर पर निर्णय प्रभावित होगे जो एक बडे जन समूह को प्रभावित करेगें।

● डॉ. निहारिका बोहरा
IIM, Ahamdabad



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## Introducing Value Education in Technical Institutions for Developing Professional Ethics and Sustainable Vision along with Technical Skills

Multifarious global maladies endandered by modern development, all point towards one single factor, viz., the lack of integration of Human Values with Science and Technology. For past many years, there has been a rising concern over fast-eroding values in the modern society and accordingly, the urgency of introducing Value Education in the present education system has been stressed repeatedly. However, no such tangible step was visible in practice.

About five years back, Ministry of Human Resource Development had taken a substantial initiative in this direction and a number of national resource centres for value education had been started in different sectors of education such, as school education, management education, technical education etc. Also, the Ministry had issued directives to various institutions for setting up value education cells to nucleate this activity

The National Resource Centre for Value Education in Engineering had been set up at I.I.T. Delhi in November, 2001 to facilitate introduction of value education in various technical institutions in the country. Since then, this centre has attempted to network with various technical institutions and also some renowned socio-spiritual organizations and experts engaged in the task of value education. We have tried to understand the intricacies and challenges of this task and are trying to develop an effective methodology for present day conditions. Some notions and experiences in this direction are described below.

There appears to be so much variation in the views of people about value education and how it should be introduced particularly in higher technical institutions. Some people also feel that values can only be 'caught' and cannot be 'taught' while others imply that prescribing a few do's and don'ts or the code of conduct itself is the whole value education. For many, values seem to be a matter of faith and are an individual's personal affair.

केवल एक अच्छी नौकरी, समाज में प्रतिष्ठा ही मेरे जीवन का लक्ष्य था। मेरे माता-पिता ने मेरे लालन-पालन में जितना खर्च किया मैं उन्हें लौटा पाऊं यही मेरी इच्छा थी और मेरा यह विचार था कि जिस इंसान के पास कोई प्रतिभा है और वह बुद्धिमान है तो उसका व्यवहार कोई मायने नहीं रखता। मैं यह सोचती थी जब और लोग स्वार्थी हो सकते हैं तो मैं क्यों नहीं। मैंने यह भी सोचा जिन्होने मेरे लिए कुछ नहीं किया, जिन्हें मैं जानती तक नहीं उनके लिए मैं अपने सुखों की कुर्बानी क्यों दूं। मैं किसी और व्यक्ति का इंतजार करती रही जो समाज में और मुझमें क्रांति लाने की पहल करे। मैंने कई दर्शन शास्त्र पढे मैं सहज योग में भी गई मन की शांति के लिए मैंने ईश्वर की पूजा की पर मुझे कहीं भी मन की शांति नहीं मिली। जीवन की असफलताओं में मुझे किसी और का हाथ लगता था शायद इसलिए मैं अपनी गलतियाँ ढूंढ नहीं पाई।

पर पता नहीं इन 6 दिनों क्या हुआ कि मैं और मेरे विचार बिल्कुल बदल गये आज मैं स्वयं तक सीमित नहीं रह गई हूं मेरी सोच का दायरा फैल गया है। हमारे समाज में और खुद में व्याप्त असंतोष को जड से मिटाने की इच्छा को एक नई किरण नहीं बल्कि एक पूरी रौशनी दिखाई पडी है। मुझमें इसके लिए पहल करने की हिम्मत आ गई। जीवन को सही दिशा दिखाने का मैं आपका तहेदिल से शुक्रिया अदा करना चाहती हूं।

05.03.2005

● नेहा मित्तल B.Tech ET&T
NIT, Raipur

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



However, intensive exploration on this issue strengthens our conviction that value education can be systematically taught by **first providing the right understanding about oneself (the human being), about the purpose of life in consonance with Existence, about the interconnected and self-regulated nature of Existence as a whole.** Such a framework provides a holistic world view which naturally forms fountain head of all human values.

Also, it is significant to realize that there is a close interdependence of professional skills with values. Professional excellence can only be achieved by appropriate integration of value competence with skill competence. In the domain of technical education the impact of values on structure of technology, use or misuse of technology and on the developmental vision becomes far reaching and permeates in the totality of technical subjects rather than being an isolated input.

Now, the method for imparting value education to the modern youth well groomed in Science and Technology has to be rational and scientific, universally applicable and verifiable like the various disciplines of modem science. We have found that **Jeevan Vidya** based on **Madhyastha Darshan** provides such a philosophical framework which adequately fulfills the above requirements and can therefore be adopted as a model to introduce value education in technical institutions.

By now, experiments with introducing value education through Jeevan Vidya have been successfully conducted at various technical institutions including IIT Delhi, HBTI Kanpur and more extensively at engineering colleges at Raipur, Jagdalpur and Bilaspur in Chhattisgarh. **Abhuydaya Sansthan,** Raipur has done commendable work with the technical institutions of Chhattisgarh and have developed adequate expertise and infrastructure for training of teachers in this field. It will be very desirable to evaluate the results of these experiments and carry out a concerted effort by further networking to prepare requisite resource material for widespread dissemination.

**Dr. R. R. Gaur,**
(Professor, Mech. Engg. Deptt.)
Head, National Resource Centre for Value Education in Engineering, IIT. Delhi
Tel. : 011-26591908

इस तरह की शिविर की जरूरत सिर्फ हमें ही नहीं बल्कि समाज के हर एक वर्ग को है। इसलिए कृपा कर इस तरह के शिविर सिर्फ स्कूल कालेजों में न कर समाज के हर वर्ग के साथ किये जायें। मैं अपनी भागीदारी इस प्रकार देना चाहता हूँ कि जब इस पूरे अनुसंधान को समझ जाऊँ और जब ऐसा ही आचरण अपने जीवन में उतार पाऊं तब मैं भी इस संस्थान से जुडकर इस तरह की शिविरों में अपनी भागीदारी देना चाहूँगा।

● रवि मोहन अग्रवाल B.Tech. Mining
NIT, Raipur

शुरू से मुझे ऐसा लगता था कि प्रचलित शिक्षा समाज को सही दिशा में नहीं ले जा रही है। मगर सही शिक्षा क्या होगी ये स्पष्ट नहीं था। विद्या को पाकर मैं इस बात से आश्वस्त हो गया हूँ कि अब शिक्षा द्वारा समाज का व्यवस्थित होना निश्चित है और उसमें पूर्णरूपेण भागीदारी करने को तत्पर हो गया हूँ।

● राकेश कुमार मौर्य B.Tech. M.Tech. Chemical
IIT, Kanpur

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## A SELF-EMPOWERING PARADIGM SHIFT

It all began with a long promised visit to SIDH at Mussoorie in 2006 almost this time last August soon after my wife, Sunita and I concluded matters relating to marriage of our youngest daughter at Ludhiana in Punjab. Earlier Sunita had retired from teaching profession in England and after almost a decade of involvement in charitable action specifically targeted at rural India by Deendayal Research Institute, we were ready for expanding our interactions to other projects. This time, we were truly embarking on a journey together and with active support of our three children and their partners. I had often remarked to all that the best years of our lives lie ahead. Just as for many people, so far a greater part of our life journey had been 'family centred'.

So when Som Dev Tyagi in our first Jeevan Vidya Shivir at Abhyudaya Sansthan during last week of August 2005, proposed that there are only two real questions of any significance before mankind: Why live? And How to live? One had to sit up and listen. Pawanji Gupta of SIDH while motivating us to attend that Shivir, had not prepared us for what was to come. A process starting off with explorations of Self, etc and ending with the entire existence, all-leading to unfolding of the power that is 'inherent in each individual'. All very thought provoking with lot of inner churning and comparisons with earlier assumptions, going beyond beliefs / perceptions and becoming aware of conditioning, etc. Above all understanding the clear distinction between one's 'body' and 'Jeevan' and its implications to oneself and in relation to other units in existence resulted in a significant paradigm shift. The implications of self-organisation in order to be in harmony within one's Self and extension of one's harmonised Self to live in harmony with other units in existence being truly self-empowering to live with Samajhdari. We had to attend a couple of additional Shivirs to assimilate all this. Every Shivir gave fresh insights with increasing realisation that the ultimate responsibility is one's own with constant awareness of one's actions in light of the Darshan that brings and paints the entire existence on to one 'canvas' with deeper understanding of human diversity. Such a self-empowering experience had to be shared with other members of the family and others. This resulted all of us participating in a special Shivir at SIDH in April.

Ever since our initial introduction to 'Jeevan Vidya' and our first visit to Amarkantak to meet Ad. Nagaraj Babaji, our Jeevan Yatra has taken a turn that one could not have even imagined earlier. A truly empowering paradigm shift that was not only experienced by two of us but has also been felt by our three children, their respective partners and many others whom we have been able to motivate to do the JV Shivirs meanwhile. All this we consider a good start and just an introduction. A lot more learning has to happen before most of us can truly be in a position to play an effective role in the much needed sharing with the global community of Madhyastha Darshan that has been expounded by Babaji. Sunita and I have now embarked on our personal adhyayan. We are arranging a short three days revision Shivir for the family at Cambridge with Praveenji Singh over the August Bank Holiday i.e. 26, 27 & 28 August'06. This will help us to consolidate the learning to-date. Our priority so far has been to first introduce all members of our immediate Family to Jeevan Vidya. Each of the couples now will have to chalk out their individual program for gaining more understanding of JV through further courses and / or adhyayan.

All of us feel privileged in making our contribution to the Mission of 'shared oneness and eternal happiness in harmonious existence between human, animal, plant and material kingdoms'. A truly exciting journey indeed!

Balbir & Sunita Datta
Rama Foundation, Cambridge, UK.
TeL:-00441233474530

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



## मध्यस्थ दर्शन - वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में

Technical Education in the Light of Universal Values

**उद्देश्य :** मनुष्य में जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमण अर्थात् समुदाय अथवा व्यक्तिवादी चेतना से अखण्ड समाज चेतना में संक्रमण।

यह प्रस्ताव मानव के सर्वतोमुखी विकास के संदर्भ में है, जिसका प्रत्यक्ष रूप प्रतिभा एवं व्यक्तित्व का संतुलित उदय है। मानव चेतना विकास नीति का आधारभूत दर्शन, विकास के क्रम में वास्तविकताओं के आधार पर नि:सृत रहस्यवाद एवं सम्प्रदायवाद से मुक्त जीवन दर्शन है जिसमें -

| | | |
|---|---|---|
| - **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद** | **के स्थान पर** | **समाधानात्मक भौतिकवाद** |
| - **संघर्षात्मक जनवाद** | **के स्थान पर** | **व्यवहारात्मक जनवाद** |
| - **रहस्यात्मक अध्यात्मवाद** | **के स्थान पर** | **अनुभवात्मक अध्यात्मवाद** |
| - **लाभोन्मादी अर्थशास्त्र** | **के स्थान पर** | **आवर्तनशील अर्थशास्त्र** |
| - **कामोन्मादी मनोविज्ञान** | **के स्थान पर** | **मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान** |
| - **भोगोन्मादी समाजशास्त्र** | **के स्थान पर** | **व्यवहारवादी समाजशास्त्र, प्रतिपादित हुआ है।** |

इसे मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद के नाम से प्रस्तुत किया गया है। इसे तर्कपूर्ण विधि से पढ़ा जा सकता है तात्विक रूप में अध्ययन किया जा सकता है। इसमें सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक राज्यनीति का विश्लेषण है। यह हर समझदार परिवार के लिए भौतिक समृद्धि एवं बौद्धिक समाधान को बोधगम्य एवं हृदयंगम कराता है, जिसके लिए मानव में चिर प्रतीक्षा रही है।

### मध्यस्थ दर्शन में प्रचलित अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान एवं समाजशास्त्र का विश्लेषण

किसी समाज में, मानव के आचरण को, उसके विकास या पतन को दिशा देने में शिक्षा का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि शिक्षा से हमें सोचने, समझने का नजरिया मिलता है जिसे हर युवा जाने-अनजाने अंतिम सत्य मान लेता है और उसकी के अनुसार जीने का प्रयास करने लगता है। अत: आवश्यकता है शिक्षा की वस्तु का सूक्ष्म विश्लेषण करने की ताकि समग्र मानव सही अर्थ में विकसित हो सके।

### प्रचलित अर्थशास्त्र

**मूल सिद्धांत : आवश्यकताएँ अनन्त है, साधन सीमित हैं - रॉबिन्सन।**

✘ इस सिद्धान्त के अनुसार धरती पर किसी भी मानव की आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो सकती हैं। फलत: हर मानव का अभावग्रस्त अर्थात् दु:खी रहना निश्चित है। जबकि इस सिद्धांत को पढ़ाने वाला सुखी होने के लिए पढ़ाता है एवं विद्यार्थी सुखी होने के लिए पढ़ता है। हर मानव हर क्षण हर पल सुख पाना चाहता है और प्रचलित अर्थशास्त्र प्रतिपादित करता है कि यह असम्भव है। इसे बड़ा विरोधाभास और क्या हो सकता है?

✘ आवश्यकताएँ अनन्त हैं, साधन सीमित हैं को मानकर हर मानव असुरक्षावश भयभीत रहने के लिए बाध्य है। मानव असुरक्षावश संग्रह तथा संग्रह के लिए शोषण एवं भ्रष्टाचार में लिप्त दिखता है। शोषण के विरोध में द्रोह, विद्रोह, युद्ध, आतंकवाद, नक्सलवाद आदि समस्याएँ परिवार से लेकर विश्व मंच तक व्याप्त हैं। इस प्रकार प्रचलित अर्थशास्त्र **लाभोन्मादी अर्थशास्त्र** हैं। लाभोन्माद का अर्थ कम देकर अधिक पाने की मानसिकता है।

मेरे घर के पास हनुमान मंदिर में एक पंडित जी हैं उन्होंने मुझसे कहा कि "बेटी तुम पर शनि चढ़ा है और तुम्हारा भाग्य भी बहुत नीचे स्थान पर है, बस निराशा के बादल मेरे ईर्द गिर्द छा गये। मैंने कभी नहीं सोचा कि मेरी समस्याओं के पीछे कारण क्या है? मेरा विचार था कि जो होता है भगवान की इच्छा से होता है और अच्छे के लिए होता है इसलिए चलने दो। शिविर के बाद जिंदगी क्या होती है ये जाना है। जिंदगी में समस्याओं का आना तो स्वभाविक है पर उन समस्याओं को समझना और रोना-गाना छोड़कर उनका हल निकालना स्वयं का काम है। अब मैं किसी की कही हुई बातों पर विश्वास नहीं करती अब मैं अपनी समस्याओं को जांचने का और शांतिपूर्वक उनका हल निकालने का हुनर मुझे इस संस्थान से प्राप्त हुआ है ये ही नहीं मेरा ज्योतिष, भूत-प्रेत पर जो अंधविश्वास था वो काफी हद तक कम हो गया।

19.03.2005 • **रसनीत कौर बक्शी** B.Tech. I.T.
NIT, Raipur

शिविर के बाद मेरे विचार पूरी तरह गलत साबित हुए, मुझे पता चला कि यह शिविर हमारे सेशनल मार्क्स के लिए नहीं है। बल्कि यह हमारी जिंदगी को सुधारने का एक प्रयास है।

30.10.2004 • **आशुतोष मेश्राम** B.Tech. Biotech.
NIT. Raipur

### आवर्तनशील अर्थशास्त्र के अनुसार-

मानव का समग्रता में अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सर्वमानव की दो प्रकार की आवश्यकताएँ हैं।

✓ भौतिक समृद्धि जिसके लिए साधन आवश्यक है।

✓ बौद्धिक समाधान अर्थात मूल्यात्मक आवश्यकता जैसे विश्वास, सम्मान, स्नेह आदि।

✓ बौद्धिक समाधान की आवश्यकता मानव का मानव व शेष प्रकृति के साथ शाश्वत अर्न्तसम्बन्धों को समझने से पूरा होता है।

✓ बौद्धिक समाधान (सही समझ) के आधार पर सही व्यवहारपूर्वक मानव विश्वास, सम्मान, स्नेह सहित जी पाता है।

✓ इस प्रकार मानव की मूल्यात्मक (मूल्य ही भाव है) आवश्यकता जो कि निरन्तर है की पूर्ति होती है।

✓ सही समझ के आधार पर मानव पहचान पाता है कि भौतिक आवश्यकताएँ सीमित हैं और प्रकृति में आवश्यकता से अधिक साधन उपलब्ध हैं।



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

- ✓ भ्रमवश मूल्य आधारित (विश्वास, सम्मान, स्नेह) आवश्यकताओं की पूर्ति भौतिक वस्तुओं से करने के प्रयास में भौतिक वस्तुओं की आवश्यकता अनन्त भासने लगती हैं। इसी से मानव द्रोह, विद्रोह, शोषण, संग्रह, लाभोन्माद, भोगोन्मद के लिए प्रवृत होता है।
- ✓ भौतिक आवश्यकताएँ सीमित एवं निश्चित हैं, प्रकृति में आवश्यकता से अधिक साधन उपलब्ध हैं। हर परिवार में आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने की क्षमता है अत: समझदारी से हर मानव परिवार समृद्धि पूर्वक जी सकता है।
- ✓ अत: अर्थशास्त्र के प्रचलित सिद्धांत - आवश्यकताएं अनन्त हैं, साधन सीमित हैं के स्थान पर - आर्वतनशील अर्थशास्त्र के अनुसार भौतिक आवश्यकताएँ निश्चित (सीमित) हैं, साधन पर्याप्त हैं। यह अध्ययनगम्य में है, स्वीकार होता है।

  इस प्रकार **लाभोन्मादी अर्थशास्त्र** के स्थान पर **मध्यस्थदर्शन आधारित आवर्तनशील अर्थशास्त्र** प्रतिपादित हुआ है जिसके आधार पर सभी के समृद्धिपूर्वक जीने का मार्ग प्रशस्त होता है। समाधान समृद्धि सम्पन्न परिवार ही उपकार प्रवृति सम्पन एवं शोषणमुक्त समाज काआधार है।

## प्रचलित मनोविज्ञान के अनुसार-

✘ मानव के समस्त क्रियाकलाप का केन्द्र बिन्दु काम (सेक्स) है - फ्रायड।

वर्तमान शिक्षा में प्रचलित मनोविज्ञान में कामुकता के आधार पर सम्पूर्ण वर्चस्व उभरने की बात कही गई है। क्या इस कामोन्मादी मनोविज्ञान के आधार पर किसी स्वस्थ परिवार एवं भय मुक्त समाज की कल्पना की जा सकती है? वर्तमान समाज में मानवीय मूल्यों का ह्रास चिन्तनीय मुद्दा बना ही हुआ है। जीव चेतना में जीते हुये मानव के लिए यह सिद्धांत स्वीकृत है अत: आवश्यकता है मानव को उसकी संपूर्णता में समझने की ताकि मानव जीव चेतना से मानव चेतना में संक्रमित हो सके।

I felt that this kind of knowledge is an utmost need of each & every person on earth. I could visualise the whole existence & my own & other beings position as well after the 6th day of lectures. I started feeling more confident about myself. I could then easily take "decisions" evaluating each thing on the wonderful concept of distinguishing between "Right" & "wrong" which was given to us by our teacher. I think one should give time to such kind of an effort as this is totally related to ones own life.

16-10-2005 • **Sonal Keswani** B.Tech. - I.T. NIT, Raipur

जीवन विद्या शिविर ने हमारे जीवन में एक आशा की ज्योति जलाई है उसे ज्ञान के प्रकाश के रूप में समाज में फैलाना चाहता हूं।

• आकाश बंसल B.Tech. - C.S. IIT, Delhi

## मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान के अनुसार-

- ✓ हर मानव जन्म से ही जिज्ञासु, न्याय को चाहने वाला होता है।
- ✓ हर मानव समाधान पूर्वक हर परिवार समृद्धि पूर्वक, अभय पूर्वक जीना चाहता है।
- ✓ समाधान का अर्थ मानव-मानव एवं मानव व प्रकृति में निहित शाश्वत अर्न्तसंबंधों को जैसा है वैसा ही समझना है।
- ✓ हर मानव में कल्पनाशीलता एवं कर्मस्वतंत्रता है। कल्पनाशीलता का तृप्तिबिन्दु संबंधोंकी पहचान तथा कर्मस्वतंत्रता का तृप्ति बिन्दु संबंधों में जीने की निरन्तरता है।
- ✓ ऐसा जीने का परिणाम ही सुख है। हर मानव सुख की निरन्तरता चाहता है।
- ✓ **किसी भी भौतिक सुख में निरन्तरता नहीं है, अत: एक भ्रमित मानव के क्रियाकलाप का केन्द्र ही काम ( सेक्स ) हो सकता है।**
- ✓ सर्वमानव का प्रयोजन समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाणित होना है। ऐसा जीकर ही हर मानव की निरन्तर सुखपूर्वक जीने की मूल चाहत साकार हो सकती है।
- ✓ मध्यस्थ दर्शन में सार्वभौम मूल्य-चरित्र एवं नैतिकता का स्वरूप स्पष्ट हुआ है। इसे समझा जा सकता है अध्ययन कराया जा सकता है। इससे सर्वमानव का प्रयोजन साकार होता है।
- ✓ मानव जाति के लिए मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान - स्वयं में विश्वासपूर्वक जीने में, समाधान-समृद्धि पूर्वक जीने, समाज में अभय पूर्वक जीने और समग्र व्यवस्था में सहअस्तित्व प्रमाण सहित परम्परा में जीने हेतु प्रेरणा स्रोत है। **इस प्रकार कामोन्मादी मनोविज्ञान के स्थान पर मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान प्रतिपादित हुआ है।**

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



**प्रचलित समाजशास्त्र**

- ✘ हर मानव सुख की निरन्तरता चाहता है। कामोन्मादी मनोविज्ञान के अनुसार सुख का केन्द्र **काम** है। काम से अधिकाधिक सुख पाने के लिए अधिकाधिक साधन, अधिकाधिक साधन के लिए अधिकाधिक लाभ। इस प्रकार कामोन्माद से लाभोन्माद, लाभोन्माद से भोगोन्माद का चक्र स्थापित है। अत: प्रचलित समाजशास्त्र मूल में भोगोन्मादी समाजशास्त्र है।
- ✘ मानव अपने वर्चस्व को बनाये रखना चाहता है । डार्विन ने कहा – शक्तिशाली जियेगा शेष स्वत: नष्ट हो जाता है।

उपरोक्त विचार के अनुसार मानव ने संघर्ष,विद्रोह,युद्ध को अपनाया तथा सुखी होने का आधार आहार, निद्रा, भय, मैथुन रहा। इन्हीं चार विषयों में अनुकूलता के लिए व्यक्तिवाद बढ़ा, व्यक्तिवाद से समुदायवाद पनपा। इन्हीं सुखों को साधने के लिए परिवार एवं समाज में भय, प्रलोभन का प्रयोग जारी है। भय, प्रलोभन के असफल होने पर आस्था का सहारा और अन्तत: संघर्ष ही मनुष्य के हाथ लगा है। क्या उपरोक्त आधारों पर स्वस्थ परिवार अथवा भयमुक्त व्यवस्थित समाज की कल्पना की जा सकती है ?

**व्यवहारवादी समाजशास्त्र के अनुसार-**

प्रकृति का अध्ययन करें तो स्पष्ट होता है कि :-

- ✓ प्रकृति में कुल चार अवस्थाएँ हैं। मानव के अलावा शेष तीनों परस्पर पूरकता (सह-अस्तित्व) में है।
- ✓ मानव-मानव एवं शेष प्रकृति के साथ अर्न्तसंबंधों को न पहचान पाने के कारण गलती करता है, फलत: दु:खी होता है।
- ✓ अस्तिव में सह-अस्तिव एवं पूरकता है जिसमें सभी इकाईयां अपने त्व सहित व्यवस्था एवं समग्र व्यवस्था में भागीदार है ।
- ✓ मानव को भी स्वयं की उपयोगिता एवं पूरकता मानव एवं प्रकृति के साथ जानने की आवश्यकता है।

मध्यस्थ दर्शन में मानव का समग्र अध्ययन सम्भव हो पाया है। जिसके फलस्वरूप सार्वभौम मानवीय आचरण, सार्वभौम मानवीय शिक्षा, सार्वभौम मानवीय व्यवस्था एवं सार्वभौम मानवीय संविधान का स्वरूप स्पष्ट हुआ है। जिसके विधिवत अध्ययन के फलस्वरूप मानव व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलंबन पूर्वक तृप्ति सहित जीना है।

ऐसे समाधान-समृद्ध पूर्वक जीते हुए परिवार स्वयं-स्फूर्त विधि से समग्र व्यवस्था में उपकार विधि से भागीदार होंगे। यही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था के सफल होने का आधार है। यह मानव कुल की महिमा है।

**इस प्रकार भोगोन्मादी समाजशास्त्र के स्थान पर व्यवहारवादी समाजशास्त्र प्रस्तुत हुआ है।** जिससे व्यवहारिक धरातल पर विश्व के नागरिक (Globel Citizen) बनने का एवं वसुधैव कुटुम्वकम के साकार होने का मार्ग प्रशस्त होता दिखाई देता है।

> स्वयं की अक्षमता का प्रदर्शन क्रोध है।
>
> यदि समस्या है तो समाधान है ही।
>
> मध्यस्थ दर्शन

**सोम देव त्यागी**
**अभ्युदय संस्थान**
**09301700400**



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## अभ्युदय संस्थान,अठोटी (दुर्ग)

पिछले वर्षों से कई परिवारों का एक समूह सार्थक जीवन जीने के प्रयास में सामाजिक उत्थान के लिए पूर्णरूपेण समर्पित रहा। लंबे प्रयासों के बावजूद तृप्तिदायक परिणाम नहीं मिल पा रहे थे और एक सार्वभौम मानवीय परंपरा का सपना साकार नहीं हो पा रहा था। तृप्ति की इसी तलाश में श्रद्धेय श्री राजन शर्मा जी के माध्यम से -मध्यस्थ दर्शन- के प्रणेता श्री ए. नागराज जी से परिचित हुये और मध्यस्थ दर्शन को समझने का मन बना। इस दर्शन को समझने के क्रम में सार्वभौम मानवीय परंपरा का अधूरा सपना साकार करने का संकल्प हुआ। आर्थिक, पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन मे मिले तृप्तिदायक परिणामों से उत्साहित होकर अपना तन-मन-धन लगाकर एक खुशहाल जीवन की नींव रखी, इसी नींव का साकार रूप है **अभ्युदय संस्थान**

### शिक्षा संस्कार योजनाः-

अभ्युदय संस्थान मूल रूप में -मध्यस्थ दर्शन- के प्रकाश में मानवीय शिक्षा को साकार रूप देने का प्रयास है। मानव को समाधानपूर्ण, स्वस्थ स्वावलंबी एवं आत्मविश्वास से परिपूर्ण तथा परिवार ,समाज एवं प्रकृति में न्याय एवं संतुलन सहित जी पाने योग्य बनाना ही मानवीय शिक्षा का मूल उद्देश्य है।

### स्वास्थ्य संयम योजनाः-

शरीर अपने मूल रूप में स्वस्थ ही रहता है। शरीर की व्यवस्था को समझना और उसके अनुरूप जीना ही स्वास्थ्य संयम का अर्थ है। इस केन्द्र में आने वाले लोगों की प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के माध्यम से चिकित्सा एवं प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

### उत्पादन कार्य योजना:-

शरीर की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए जो भी आवश्यक वस्तुयें है उनका उत्पादन कर पाने की सक्षमता, साधन, सामर्थ्य विकसित करना भी एक कार्यक्रम है। संस्थान की दैनिक भोजन में प्रयुक्त अनाज, सब्जियों, मसालों एवं तेल की पूर्ति के लिए जहरीले रसायन से मुक्त गौ आधारित कृषि की जा रही है जिसमें प्रकृति को निरंतर समृद्ध करने वाली तकनीक जैसे गोबर, गोमूत्र खाद, बायो गैस खाद, प्राकृतिक कीटनाशक एवं देशी बीजों का प्रयोग किया जा रहा है। इस केन्द्र की व्यवस्था श्री कल्पेश-अनामिका वरू द्वारा की जा रहा है।

### गौ-पालन केन्द्र:-

गौ-शाला में लगभग 100 देशी नस्ल गौवंशीय पशु हैं, जिनके दूध का विक्रय किया जाता है साथ ही दूध से देशी घी, दही, मठा का भी उत्पादन किया जाता है। गायों के आहार संस्थान में उत्पादित हरा-चारा व ताजा दाना आधारित होता है। गायों को स्वस्थ्य बनाये रखने के लिए देशी पद्धतियों को अपनाया जाता है। इस केन्द्र की व्यवस्था श्री मंजीत सिंह एंव हरजिंदर सिंह (सोनू)द्वारा की जा रहा है।

### बायो गैस संयंत्र:-

ऊर्जा संकट के दौर में संस्थान द्वारा संचालित गौ-शाला से निकलने वाले गोबर एवं गौमूत्र के आधार पर तीन बायो गैस संयंत्रों की स्थापना की गई है। जिनका कुल क्षेत्रफल 36घन मीटर है। संयंत्रों से संस्थान की रसोई गैस की आवश्यकता पूरी की जा रही है।

## प्राकृतिक खाद निर्माण इकाई

केंचुआ पद्धति से खाद निर्माण

नैडेप पद्धति से खाद निर्माण



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## गौमूत्र अर्क निर्माण इकाई

बायो गैस पद्धति से अर्क निर्माण

सूर्य ऊर्जा से अर्क निर्माण

## तकनीकी शोध कार्यक्रम

गोबर गैस (बायो गैस) को सर्वसुलभ कराने की दृष्टि से बायोगैस को एल.पी.जी. गैस सिलेण्डर में भरने का सफल प्रयोग डॉ. संकेत ठाकुर के मार्गदर्शन में हुआ एवं गोबर गैस कंप्रेशन तकनीक से अब डीजल द्वारा संचालित पानी पंप के बजाय बायो गैस संचालित पंप का प्रयोग संस्थान द्वारा किया गया है।

हाल के वर्षों में रतनजोत (जेट्रोफा) को बायो डीजल के सशक्त स्त्रोत के रूप में पहचाना गया है। इसके बीज से तेल निकाला जाता है। यही तेल बायो डीजल के रूप में प्रयोग किया जाता है। संस्थान में इस दिशा में भी शोध कार्यक्रम जारी है।

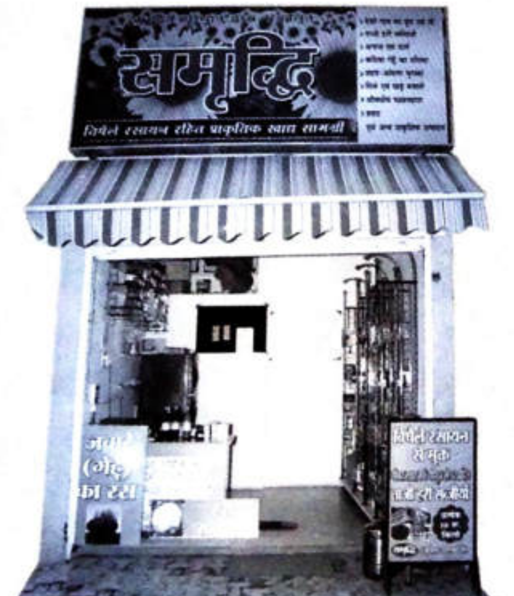


## समृद्धि :

बाजार की विसंगतियों एवं रासायनिक खाद्य और कीटनाशक जहर के अत्यधिक प्रयोग से उपजी परेशानियों से मानव को राहत दिलाने के उद्देश्य से विषैले रसायन रहित प्राकृतिक खाद्य सामग्री के उत्पादन से लेकर वितरण तक एक क्रम निर्धारित किया है। उसी श्रृंखला में समृद्धि नामक एक वितरण केन्द्र समता कालोनी, रायपुर में शुरु किया गया।

श्री राजन शर्मा
अंजनी एवं मीना अग्रवाल
09300205129



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## मानवीय शिक्षा संस्कार संस्थान, कानपुर

IIT कानपुर से स्नातक श्री गणेश बागड़िया लंबे समय से शिक्षा और समाज के लिए एक सार्थक दिशा ढूँढ़नें का प्रयास कर रहे थे। अध्ययनरत रहते हुए आप IIT कानपुर में छात्र संगठन "सैनेट" के अध्यक्ष भी रहे। विज्ञान,पूर्वी और पश्चिमी दर्शनों एवं विचारों के गहन अध्ययन तथा कई आंदोलनों का नेतृत्व कर चुकने के बाद भी समन्वित विकास की अवधारणा स्पष्ट नहीं हो रही थी इसी क्रम में आपका परिचय आदरणीय नागराज शर्मा जी से हुआ और अपने प्रश्नों का समाधान मिला एवं मध्यस्थ दर्शन को समझने के प्रति आश्वस्ति बनी और इससे सर्वोतोमुखी समाधान की संभावना दिखाई पडी,इसी क्रम में करीब 6 वर्ष पहले मानवीय शिक्षा संस्कार संस्थान की स्थापना की गई। इस संस्थान की स्थापना में सामाजिक संस्था "आशा (Asha)" की विशेष भूमिका रही। 'आशा' की शुरूवात श्री संदीप पांडे और दीपक गुप्ता ने की थी जो कि जमीनी स्तर पर सामाजिक कार्यक्रमों को गति देने में प्रयासरत है।

संस्थान के संचालन में IIT Kanpur एवं HBTI Engg. College के छात्रों एवं सामाजिक कार्यो के प्रति निष्ठा रखने वाले कुछ अन्य सदस्यों के पूर्णकालिक भागीदारी रही है। संस्थान का लक्ष्य रखा गया- धरती पर निरंतर सुख समृद्धि पूर्वक जीने की मानवीय परंपरा स्थापित करने के क्रम में मानवीय शिक्षा संस्कार परंपरा स्थापित करना।

संस्थान के कार्यक्रम को तीन भागों में रखा गया -

**- लोक शिक्षा योजना,**

**- शिक्षा संस्कार योजना, तथा**

**- ग्राम स्वराज्य योजना।**

लोक शिक्षा योजना का अर्थ है लोगों तक सही का प्रस्ताव पहुंचाना। लोक शिक्षा योजना के तहत जीवन विद्या के शिविरों का आयोजन किया जाता है। कानपुर में हर महीने कम से कम एक शिविर का आयोजन किया जाता है। शिविर में हर वर्ग एवं संप्रदाय के लोग तथा हर उम्र के पुरूष एवं महिलाओं का आना होता है। कुछ शिविर पूर्ण दिवसीय होते हैं, कुछ सांयकालीन। सायंकालीन शिविरों का आयोजन इस प्रकार किया जाता है कि काम से छुट्टी लिए बिना भी लोग शिविर में भागीदारी कर सकें। पूर्ण दिवसीय शिविर संस्थान में ही रखे जाते हैं। इन शिविरों के माध्यम से कानपुर शहर एवं गाँवों तथा देश के विभिन्न भागों के करीब 1000 व्यक्ति शिविर कर चुके हैं। IIT, HBTI Kanpur के अलावा शहर के दो अन्य इंजीनियरिंग कालेजों UIET, Kanpur University तथा Maharana Pratap Engg. College से भी कई छात्रों का जुड़ना हुआ है, तथा विद्या को पूरी तरह से समझने और जीने का प्रयास कर रहे हैं। शहर में हर हफ्ते शाम एक बैठक आयोजित की जाती है जिससे सभी से एक नियमित जुड़ाव बना रहता है। शहर से करीब 25 परिवार इस अभियान में सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं।

शिक्षा संस्कार योजना के तहत संस्थान में आवासीय शिक्षा के कार्यक्रम चलाये गये। इसके लिए विद्या के आधार पर पाठ्यक्रम भी तैयार किए गए। इस कार्यक्रम में बाँदा, बिजनौर, छत्तीसगढ़ एवं कानपुर से बच्चों को लिया गया तथा दो-दो वर्ष पाठ्यक्रम चलाये गये। अभी संस्थान में पास के गाँवों के बच्चों के लिए शिक्षा का कार्यक्रम चल रहा है। IIT में अध्ययनरत कुछ छात्र ही इसे संचालित करते हैं। भविष्य में एक विद्यालय शुरू करने की योजना है। किशोरों एवं किशोरियों के लिए स्वावलंबन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शुरू करने की योजना है। संस्थान में प्रशिक्षण को ध्यान में रखते हुए कृषि, गोपालन, मधुमक्खी पालन एवंआयुर्वेदिक औषधियों का उत्पादन चल रहा है।

ग्राम स्वराज्य योजना के तहत एक सुखी समृद्ध समाज के हर पक्ष पर काम चल रहा है जिसमें शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य, उत्पादन, विनिमय इत्यादि भी शामिल है। इसमें उत्पादन प्रक्रिया को आर्वतनशील बनाने तथा आवश्यकता आधारित तकनीकी के सदुपयोग से श्रम पूर्वक समृद्धि सुनिश्चित करने के लिए काम चल रहा है। इस क्रम में गंगा के किनारे परिहर नामक क्षेत्र में करीब 70 एकड पर खेती की जा रही है। गोपालन को खेती से जोडकर चलाया जा रहा है। करीब 25 गायों की एक गोशाला चल रही है। मधुमक्खी पालन का भी काम बड़े पैमाने पर चल रहा है। उत्पादों की बिक्री हेतु शहर में एक केन्द्र भी स्थापित किया गया है। पशुबल, मानव बल, सौर ऊर्जा, नदी की प्रवाह ऊर्जा तथा बायोगैस का प्रयोग करते हुए ऊर्जा की कुल आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रयोग चल रहे हैं। बैल से चलने वाले पानी पंप जिससे करीब 25 से 30 हजार लीटर पानी प्रति धंटे निकाला जाता है। अभी नदी की प्रवाह ऊर्जा से विद्युत उत्पादन को सर्वसुलभ बनाने के लिए भी काम चल रहा है। कुछ गाँवों को चयनित कर शिक्षा, स्वास्थ्य जैसे मुद्दों पर भी काम चल रहे हैं। समाचार पत्रों के माध्यम से भी सही समझ को दूसरों तक पहुंचाने का काम हो रहा है। मानवीय मूल्य आधारित इस अभूतपूर्व कार्यक्रम को गति देने में गणेश जी की सहयोगी बनी उनकी पत्नी अर्चना जी, सामाजिक उत्थान के लिए अपना जीवन पहले से ही समर्पित कर चुकी अर्चना जी के साथ यह प्रयास निर्बाध चल रहा है। इस प्रयास में सहयोगियों में विवेक चतुर्वेदी, कुमार संभव, प्रमोद केडिया, संजय सिंह, प्रदीप मिश्रा, संजय पांडे, अशोक भट्ट,बी.बी.एस.तोमर,ओम वीर,मिथुन,जयनारायण का उल्लेखनीय योगदान रहा। कार्यक्रम को गति देने में युवा पीढ़ी के रूप में IIT Kanpur में अध्ययनरत राकेश, श्याम, अभिषेक,बाल मुकुन्दऔर पवन इस मिशन को अंजाम देने में जुटे हैं।

**कुमार संभव**
09935602778



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

# शिक्षा में एक अभिनव प्रयोग

## सत्यम , रायपुर

सत्यम की शुरुआत,व्यवसायी दंपति श्री धीरेन एवं अनिता शाह द्वारा 1996 में की गई। विपश्यना ध्यान विधि के प्रशिक्षण केन्द्र के रुप में शुरु हुये इस केन्द्र में पिछले 7-8 वर्षो में 20,000 से ज्यादा बच्चों ने ध्यान सीखा है। इतने प्रयासों के बाद भी परिणामों की वो निरंतरता नही बन पा रही थी,जितनी अपेक्षा और मेहनत सामाजिक सरोकर के लिये की गई। निष्कर्ष के रुप में कहीं कुछ छूटता सा नजर आ रहा था। श्री राजन जी का सान्निध्य इस दंपति को पहले से ही प्राप्त रहा ,और उन्ही के माध्यम से मध्यस्थ दर्शन से परिचित हुये और इस दर्शन के प्रकाश में प्रकृति एवं मानव के रिश्तों की एक नई परिभाषा समझ में आई। और **जीवन विद्या** को समझना शुरु हुआ। समझने के क्रम में जीवन विद्या शिवरों का आयोजन प्रांरभ हुआ और विशेषकर बच्चों की ओर ध्यान गया। और इसी क्रम में बच्चों को सही मार्ग दर्शन ना मिलने का कारण अभिभावकों में समझ पूर्णताः का अभाव दिखा । बच्चों के लिये माँ की भूमिका जहां बहुत ही महत्वपूर्ण है वहाँ महिला परिवार का भी मुख्य आधार होती है यदि वो समझदार है,तो स्वयं से लेकर पूरे परिवार के बीच सांमजस्य और लयबद्धता कामय कर सकती है।

इसी उद्देश्य से सत्यम में बच्चों के साथ-साथ महिलाओं के शिविरों का भी सिलसिला शुरु हुआ, आज सत्यम ने सैकडों परिवारो से जुडकर किटी पार्टी क्लबों और महिला सोसॅाइटियो को एक सार्थक रुप देने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साथ ही घरों में कैद प्रतिभाओं को चूल्हा और चौखट के संकीर्ण दायरे से बाहर निकालकर उन्हें स्वंय एवं परिवार में सांमजस्य बनाने की समझ और उत्सव पूर्ण जीने की प्रेरणा भी सत्यम ने दी है। शिविरों के संचालन की जिम्मेदारी श्री मति अनीता शाह ने संभाली है ।

समझ पूर्णता : की यह शुरुवात परिवारों से भी आगे-निकल कर बंदी ग्रहों में घुटनभरी जिंदगी जी रही महिलाओं तक भी पहुँची। और जिंदगी से हार गई चुकी इन महिला कैदियों के जीवन में भी सार्थक बदलाव निकल कर सामने आये। वहीं कैसर रोगीयों के साथ शिवरों के दौरान। विश्वास पूर्वक जीने की खुशी भी इस दंपति की प्रेरणा है जो वसुधैव कुटुबम्कम की भावना से संबधों की खुशबू भूल बैठे विदेशियों को भी मानवीय मूल्यों की पहचान कराकर एक उत्सव पूर्ण जिंदगी की संभावना दिखा रही है।

श्री धीरेन एवं अनीता शाह
सत्यम ध्यान योग एवं जीवन विधा केन्द्र
वी.आई.पी.रोड रायपुर (छत्तीसगढ )
0771-2533850 (मो.) 9300616633

मेरा और सरिता का तालमेल पहले से बेहतर हुआ है। जब भी तनाव होता भी है, तो हममें से कोई ना कोई उसे दूर कर ही देता है। अब प्रत्येक मानव अपना संबंधी लगता है और जीवन जीने का नया उत्साह पैदा हुआ है। इस दर्शन को समझने से इच्छायें संतुलित होती सी नजर आती है जिन्हें सहज रूप में पूरा किया जा सकता है इस विश्वास के आधार पर असीम शांति का अनुभव होता है।

23.01.06

● अरूण-सरिता
समता कालोनी, रायपुर

मुझे इस बात से काफी खुशी हुई कि यह संस्थान इस बात को लोगों तक पहुंचाने के लिए अपनी अधिकतम आय का उपयोग कर रहा है जिससे शिविर का एक सकारात्मक संदेश बाहर के लोगों तक पहुंच रहा है। इससे मैं बहुत प्रभावित हुआ।

● सेवियो लारेंस B.Tech. - C.S.
NIT, Raipur



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## सिद्ध (SIDH), मसूरी

### Socity for Integrated Development of Himalays

IIT दिल्ली के स्नातक श्री पवन गुप्ता एवं एक अनुभवी शिक्षिका उनकी पत्नी श्रीमति अनुराधा जोशी ने विपश्यना से प्रेरित होकर जीवन में कुछ सार्थक करने की चाह लेकर सन् 1989 में मसूरी मे आ कर बसे विपश्यना में गहराई से उतरने,जीवन को समझने का लक्ष्य लेकर,विपश्यना से संबंधित एक शोध करने के उद्देश्य से पहाड में अपेक्षाकृत एकान्त में रहकर शोधकार्य में संलग्न रहने का निर्णय लिया। घटनाक्रम में गॉव वालों के आग्रह से मसूरी के निकट टिहरी जिले के एक गॉंव में प्राथमिक स्कूल की शुरूआत हुई और करीब एक वर्ष बाद सिद्ध नामक संस्था की शुरूआत की। उद्देश्य था - विद्यालयी शिक्षा से वंचित ग्रामीण बच्चों के लिए अच्छी प्राथमिक स्तर की शिक्षा उपलब्ध कराना। 1990 और 1995 के बीच सिद्ध ने स्थानीय समुदाय और वहीं के युवाओं की टीम के बलबूते पर प्राथमिक शिक्षा के अलावा महिला सशक्तिकरण,स्वयं सहायता समूह बायोगैस, सौर ऊर्जा के उपयोग जैसे दूसरे क्षेत्रों मे भी कदम रखा और कार्य के प्रति जिम्मेदारी एवं काम की गुणवक्ता की आधार पर एवं बढ़िया स्व सेवी संगठन के रूप में एक पहचान बनाई। इस बीच 'सिद्ध' को प्रचलित शिक्षा,'विकास',और एन.जी.ओ वर्ल्ड को बहुत करीब से देखने समझने का अवसर मिला और संस्थान के अन्दर एक आत्ममंथन की प्रक्रिया चली। इसी आत्ममंथन के परिणामस्वरूप 1996 में 'सिद्ध' ने स्वयं को एक ऐसे शैक्षणिक संस्थान के रुप मे आगे बढ़ाने का निर्णय लिया जो शिक्षा को पूरे जीवन की खुशहाली के संदर्भ में देखता है और बच्चे ही नहीं हर उम्र के लोगों के साथ सही शिक्षा को समझने और उसे क्रियान्वित करने का कार्यक्रम करता है। इस दौरान गांधीवादी इतिहासकार धर्मपालजी के सम्पर्क मे आने से सिद्ध को गांधीजी को समझने का मौका मिला। परिणामस्वरुप -स्वयं में विश्वास 'स्वावलम्बन,' 'स्वराज ' जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर गहराई से ध्यान गया, 'भारतीय' और 'पश्चिमी' सभ्यता के फर्क को समझा और 'आधुनिकता' की समस्याओं से निजात पाने के लिए हम अपने परम्परागत और स्थानीय ज्ञान को टटोलने लगे। इतना तो हमें विश्वास हो गया था कि मुख्य गडबड 'मान्यताओं' का गलत होना सुविधा के सीमित सुख के दायरे से ऊपर उठकर वास्तविक सुख की ओर हम कैसे बढ़ेंगे, इस बारे मे हममें कोई स्पष्टता नहीं थी।

सौभाग्य से इसी क्रम में सन् 2000 में हमारा मध्यस्थ दर्शन से परिचय हुआ और हमारे अनसुलझे प्रश्नो के जवाब हमें मिलने लगे। 'मान्यताओं' मे जीना और 'वास्तविकता' मे जीना में अन्तर समझ आने लगा।

सुख और सुविधा मे भेद का आधार स्पष्ट हुआ। मूल्य शब्द से जुडा रहस्य दूर हुआ। सही शिक्षा की अवधारणा स्पष्ट हुई और व्यक्ति एवं संस्थान के रुप में अपने लक्ष्य एवं कार्यक्रम के प्रति स्पष्टता बनी।

वर्तमान में 'सिद्ध' की पूरी टीम जीवन विद्या शिविरों से गुजर चुकी है। कोर टीम के अधिकांश सदस्य जीवन विद्या को पूर्णता में समझने के लिए अध्ययनरत हैं और इस आधार पर अपना पारिवारिक संस्थागत जीवन सजाने-संवारने के प्रति भी प्रतिबध्द हैं। संस्थान में नियमित रुप से जीवन विद्या शिविरों का आयोजन किया जा रहा है जिनमें देश-विदेश से हर क्षेत्र मे संक्रिय लोग शामिल होते हैं। और उनमे से कई गम्भीरता से जीवन विद्या के अध्ययन के प्रति समर्पित हो रहे हैं।'सिद्ध' की कोर टीम मे लगभग सभी लोग शिक्षण -प्रशिक्षण से जुडे हैं,इसलिए एक छोटे रुप में जीवन विद्या दर्शन को बच्चों एवं शिक्षकों के बीच में रखने का काम भी शुरू हुआ है। भविष्य मे इस दर्शन के आधार पर मूल्य शिक्षा के प्रशिक्षण हेतु मॉड्यूल्स भी विकसित करने की योजना है। देशभर से सार्थकता की तलाश कर रहे लोगों को जीवन विद्या से परिचय कराना,शिक्षकों और बच्चों के बीच इस दर्शन के आधार पर कार्य करना और संस्थान को स्वावलम्बन की दिशा मे ले जाना 'सिद्ध' के निकट भविष्य के मुख्य कार्यक्रम हैं।

क्या पाठ्यपुस्तकें
जानकारियां देने के
साथ-साथ अनजाने में
मान्यतायें नहीं गढ़ती ?

पाठ्यपुस्तकें
माध्यम हैं या लक्ष्य
क्या हम इन दोनों में भेद
करते हैं ?

पवन कुमार गुप्ता एवं अनुराधा जोशी
www.sidh,org,
sidhsri @ sanchamet.in,
0135-2632904,0941



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## वर्तमान संकट और मानवीय व्यवस्था हेतु अभियान

आप हम सब धरती के ज्ञात इतिहास के सबसे बड़े ठहराव के गवाह हैं। धर्म, अध्यात्म, दर्शन, विज्ञान-तकनीकी उपलब्धियों, शिक्षा, विकास, लोकतंत्र आदि के बावजूद भी मानव जाति सुख, शांति एवंआनंद की तलाश में छटपटा रही है। एक तरफ भौतिक साधनों से संपन्न (अमीर) वर्ग में मानसिक शांति के लिए आंतरिक संघर्ष जारी है, तो दूसरी ओर भौतिक साधनों से वंचित वर्ग आर्थिक गुलामी के खिलाफ संघर्ष करता नजर आ रहा है। दुनिया के धनकुबेर भी धन (भौतिक साधनों) के अभाव से पीड़ित है। अब किधर जायें यह सूझ नहीं रहा है। इस ठहराव से उबरने के लिए छटपटाहट भी बढ़ रही है। इस पर दुनिया भर में नई-नई कल्पनायें, चर्चायें, संवाद, विमर्श एवं विचार उभर रहे है। पाश्चात्य (पश्चिमी) देशों (यूरोप, अमेरिका) के प्रतिष्ठित विद्वान, वैज्ञानिक, समाजशास्त्री-अर्थशास्त्री, जो किताबें लिख रहे है उनके प्रमुख बिंदु हैं The end of world (संसार का अंत), Whether the Corporate rule the world (जब कॉर्पोरेट संसार पर शासन करेगा), Globel warming (धरती गर्म होना)। जीवों का जीना भी कठिन हुआ है, बहुत सारी प्रजाति के जीव जानवर नष्ट हो चुके हैं। कुल मिलाकर दुनिया की दशा व दिशा बहुत खराब है, ये सब मानते है, जानते है कि नहीं यह नहीं कहा जा सकता है।

धर्म जिसका जन्म अन्याय के विरूद्ध न्याय की स्थापना आपसी भाईचारे और मुक्ति (मोक्ष) एवं कल्याण के लिए हुआ वह आज लड़ाई-झगड़े का कारण बन चुका है। कुछ लोग कह रहे है कि धरती पर विनाशकारी हथियारों का इतना बड़ा जखीरा बना लिया है कि धरती को छत्तीस से चालीस बार नष्ट किया जा सकता है। जब एक बार में ही पूरी धरती को नष्ट किया जा सकता है तो फिर चालीस बार नष्ट किये जाने की संभावना ही नहीं बनती। परमाणु हथियारों के अलावा भी उपरोक्त कई कारण ऐसे बने हुये हैं जो मानव जाति को नष्ट करने में सक्षम है।

प्रचलित शिक्षा, शिक्षण संस्थान एवं विश्वविद्यालय भी मनुष्यों की आवश्यकता (चाहना) तक का अध्ययन नहीं कर पा रही है। अभी आधुनिकता के नाम पर मनुष्यों का जिस प्रकार से जीना हो रहा है वह मनुष्य को कमजोर, रोगी एवं शोषक बना रहा है, अधिकांश पढ़े-लिखे लोग शारीरिक श्रम से बच रहे हैं, भोजन भी असंतुलित करते है। इसके कारण मोटापा बहुत तेजी से बढ़ रहा है। शारिरीक श्रम के अभाव में मांस पेशियों में कमजोरी, हड्डियों में क्षय एवं डॉयबिटीज जैसी बीमारियांभी तेजी से फैल रही है। इसके बावजूद शारीरिक श्रम करने वालों को पिछड़ा मजबूर एवं अज्ञानी ही मानते हैं और उन्हें अपने कठोर श्रम का भी उचित मूल्य नहीं मिल पाता है, गत 10 वर्षों में भारत में एक लाख दस हजार से ज्यादा किसानों ने आत्महत्या की है।

> जहाँ संबंधों को पहचानते नहीं है वहाँ मूल्यों का कोई बहाव नहीं होता है उदाहरण के लिए रेल के डब्बे में कोई आदमी बैठा है, एक अजनबी आता है तो उनका हाथ पैर अपने आप लंबा हो जाता है इच्छा होती है यहाँ कोई नहीं बैठे। वहीं थोड़ी देर बाद कोई पहचान का आदमी आ जाता है तो अपने आप से उठकर खड़े हो जाते है और उनको बैठा देते है।
>
> मध्यस्थ दर्शन

24 जून 1981 को 53 नोबेल पुरस्कार विजेताओं ने जिनेवा, रोम, ब्रुसेल्स, न्यूयार्क आदि सात महानगरों से एक साथ एक घोषणा पत्र जारी किया कि - सभी जगह केन्द्रीय राजसत्ता अर्थसत्ता मिलकर सामान्य आदमी के खिलाफ साजिश रच रही है। यह केन्द्रीय व्यवस्था करोड़ों आदमियों को कुचल रही है, इसे बदलने में आनाकानी करने में दुनिया के विनाश की संभावना है। आज से लगभग 200 वर्षों पूर्व प्रचलित विज्ञान तकनीकी से दुनियां में एक आशा जागी थी। लेकिन वह मनुष्यों के शोषण एवं धरती के विनाश का जरिया बन गई है। एक तरफ भूमण्डलीकरण के नारे लग रहे है तो दूसरी ओर ज्ञान पर भी कब्जा किया जा रहा है। ज्ञान को साफ्टवेयर में बदलकर उस पर पेटेण्ट (अधिकार) लिए जा रहे हैं। हजारों सालों से विकसित एवं लंबे समय से उपयोग में आ रही नीम, हल्दी, बासमती चावल आदि सैकड़ों वस्तुओं पर कब्जा करने का कुचक्र चल रहा है। दुनिया में एक ऐसा समूह तैयार हो चुका है जो आर्थिक व राजनैतिक साम्राज्यवाद चला रहा है। यह लोग दुनिया भर में कॉर्पोरेट सेक्टर (बहुराष्ट्रीय कंपनीयों) के माध्यम से काम करते है। ये कर्ज देते है उसके लिए जासूसी करते है, खरीद फरोख्त भी करते है। सरकारें बनाते है यदि वे उनके अनुसार काम नहीं करती तो उसे गिराते है, दुनिया की अर्थव्यवस्था पर पूरा नियंत्रण ऐसे ही लोगों का हो चुका है। यदि उनके हिसाब से बदलाव नहीं हो पा रहा है तो उसके प्रमुख की आत्महत्या (हत्या) भी करवा देते है। दक्षिणी अमेरिका के कुछ छोटे देश इनको पहचानने लगे है। 'कॉनफेशन ऑफ द इकॉनामिक टालमेन्ट' के लेखक पॉकिन्स इसी टीम के सदस्य थे। अपनी उपरोक्त पुस्तक में आत्मग्लानी स्वरूप इन ऊँचे धनी लोगों की

करतूत का जिक्र भी किया है। कुल मिलाकर अब दुनिया में राज्य कमजोर हो रहे है।

हरित क्रांति से भारत में जो पाप हुआ, जो हानि हुई उसका हिसाब किताब लगाये बिना दूसरी हरित क्रांति की तैयारी चल रही है। भारतीय खेती विनाश की कगार पर, किसानों के शोषण एवं कर्ज के सहारे चल रही है। हमने विकसित देशी बीज, देशी गायों का नाश किया है। पूरे पर्यावरण तंत्र को बिगाड दिया है। उत्पाद के दोनों आयामों मात्रा एवं गुणवत्ता को देखें तो आज हम मात्रा के झूठे आंकडों में फंसे है तो गुणवत्ता के नाम पर आज जो अन्न, दाले, फल, सब्जियाँ पैदा हो रही है, उनमें पानी की मात्रा बढ़ाने से गुणवत्ता व उनकी उम्र कम हो गई है।

विचारों की दृष्टि से बडे-बडे विचार दुनिया में आये। स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व आदि को लेकर दुनिया में कई क्रांतियाँ हुई। अपने देश में भी सर्वोदय, ग्राम - स्वराज्य, संपूर्ण क्रांति के नाम पर बड़े-बड़े प्रयत्न हुये। अनेक लोग महापुरूष बने, कईयों की पहचान दुनिया भर में हुई। लेकिन स्थिति में बदलाव नहीं आ सका। व्यक्तिगत रूप से मेरा कई विचारधाराओं से गुजरना हुआ, कई जन आंदोलनों को देखा, किसान आंदोलन में कई वर्ष लगाये। शिक्षा भी उच्च शिक्षण संस्थानों में हुई और ग्राम विकास, कृषि क्षेत्र में भी गई गहरे प्रयोग किये। दुनियादारी की दृष्टि से मैं उन दिनों सफल लोगों में से था, लेकिन स्वयं के इन्हीं सब गहरे सवालों से उलझा था, लक्ष्य प्राप्ति हेतु मनोयोग से काफी गंभीर प्रयास करने के बाद भी संतुष्टि नहीं मिल रही थी। इसी क्रम में आई.आई. टी. दिल्ली में ही शोध करते हुये डॉ. यशपाल सत्य जी के माध्यम से आदरणीय ए. नागराज जी से भेंट हुई और 1991 तक मध्यस्थ दर्शन को समझने का मन बना, ऐसा लगा कि मेरे सवालों के तृप्ति दायक उत्तर मिल गये और स्वयंके प्रति, संबंधों के प्रति, व्यवस्था के प्रति विश्वास की असीम गहराईयों को पाया। मध्यस्थ दर्शन की रोशनी में गत 15 वर्षों में जो समझ बनी एवं विविध प्रयत्नों से जो अनुभव आये उसके आधार पर यह निष्ठा हुई और एक बड़े भू-भाग (लगभग 10-12 जनपदों) पर संमग्रता-संपूर्णता के साथ समाज आधारित प्रयत्न शुरू किये हैं। इसी दृष्टि से अपने बहुत सारे मित्रो-शुभचिंतकों के साथ पश्चिमी दो आब क्षेत्र (गंगा-यमुना का मैदानी इलाका) में प्रयत्न किया जाये। गंगा-यमुना की घाटी संसार के सबसे बड़ी समतल एवं प्रचुर मात्रा में जल वाली है। ग्रीस, मिस्र, ईरान, ईराक आदि सभी की नदी घाटियाँ इससे छोटी ही है। यहाँ वर्ष भर बहार रहती है अर्थात हर समय कोई ना कोई फल इस भू-भाग में पैदा हो रहा है।

आज से लगभग 300 वर्ष पहले यह क्षेत्र भौतिक रूप से समृद्ध एवं सामाजिक सांस्कृतिक रूप से संपन्न था। अंग्रेजी शासन में इस क्षेत्र में कई जंग हुई, कई आंदोलन हुये। 1857 के बाद भयंकर दमन हुआ। शोषणकारी नीतियों के चलते यहाँ का कौशल, शिल्पकारी एवं कारीगरी टूटने लगी। इन धंधों में लगे लोगों का भार खेती पर पड़ा उनमें से कुछ मजदूर बने तो कुछ अन्य कामों में लगे। फिर खेती पर भी संकट आया तो अनेक गाँव अंग्रेजी हूकूमत से लड़ने के कारण बागी हो गये। उनमें आग लगा दी गई। आजादी की लड़ाई में बहुत बड़ी संख्या में यहाँ के लोग स्वतंत्रता सेनानी बने। आजादी के बाद भी यहाँ असमान विकास हुआ, सामाजिकता टूटी। परंपरागत पंचायती तंत्र कमजोर हुआ। बीस वर्ष पहले भी किसान आंदोलन के रूप में इस क्षेत्र ने अपनी ताकत दिखाई थी। इस सब के बावजूद बहुत ध्यान देने पर भारतीय संस्कृति के कुछ अवशेष यहाँ जिंदा बचे हुये है, जो सभी को साथ लेकर, सबके शुभ की कामना को लेकर प्रयास कर रहे है। इस क्षेत्र के हरिद्वार, सहारनपुर, मुरादबाद,मुजफ्फरनगर, बिजनौर, मेरठ, बागपत, गॉजियाबाद, बुलंदशहर, ज्योतिवा फूलेनगर, मुरादाबाद को ध्यान में रखकर मानवीय व्यवस्था को साकार करने की दृष्टि से एक सामूहिक प्रयत्न शुरू करने का अनेक साथियों का मन बन रहा है। दिल्ली से यह क्षेत्र जुड़ा ही है, वहां भी बड़ी संख्या में इस कार्य में सहयोगी बनने वाले मित्र है।

हमें लगता है कि मनुष्य जिस ओर ध्यान देता है उसी तरफ परिणाम आने लगता है। इस अभियान में संवाद के द्वारा विकल्प रूप में हम लोग अपनी बात रखगें। इस बात पर लोग विचार करे, बहस करें, ऐसा हमारा प्रयास रहेगा। हमारा विश्वास है कि इस हेतु समाज की जितनी तैयारी होगी उतना-उतना प्रयास बढाया जायेगा। 15-16 वर्ष से अधिक आयु के सभी वर्गों, जातियों एवं धर्म के ऐसे युवाओं एवं

मैं अपने आप को एक बंगले , कार और नोटो की गड्डियों को बैंक में जमा करते हुये देखता था, एक आराम की जिंदगी जी रहा था और बहुत खुश था, अब शिविर के बाद लगता है कि अपनी जिंदगी के एक इतने बड़े भाग को मैने सिर्फ झूठ और भ्रम में बिता दिया, एक झूठे सुख के लिये मै अपने अस्तित्व को कभी खोज ही नही पाया । अब मैं स्वयं में विश्वास करने लगा हूँ ।

8.6.04

● तारण चौधरी B.Tech. - Meta.
NIT, Raipur

मेहनत करके अच्छे कालेज में पहुंचने के बाद भी संतुष्टि नही मिल पा रही थी अपनी मान्यताओं को पूरा होता ना देखकर लगने लगा था कि मुझमें योग्यता की कमी है। शिविर के पहले मैने कभी सोचा भी नही था कि जिंदगी को इतने तार्किक तरीके से समझाया जा सकता है। अब मैं अपने दोस्तों और आने वाले नये छात्रों को इस बात को बताना चाहता हूँ । जिंदगी को सुखी बनाने के लिये मैने अपना पहला कदम बढ़ा लिया है।

5.3.05

● मोहनीश बंछोर B.Tech. - ET&T
NIT, Raipur



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## शिक्षा में एक अभिनव प्रयोग

प्रोढ़ों जिनमें जिज्ञासा है, जो बेहतरीन जिंदगी जीना चाहते है, उनके बीच होनेपन अर्थात अस्तित्व आधारित मूल वस्तुओं, तत्वों एवं वास्तविकताओं का अध्ययन क्रम साथ-साथ चलता रहेगा। शेष लोगों में सूचना के रूप में जिज्ञासा पैदा करने का काम चलता रहेगा। जिंदगी के सभी आयामों में समाधान समृद्धि पूर्वक जीते हुये कुछ लोगों के खड़े होने के बाद छोटे बच्चों के लिये भी कार्यक्रम शुरू किया जायेगा। यदि इस क्षेत्र में देश-विदेश में किसी ने मानवीय व्यवस्था में किसी भी आयाम में कोई मौलिक काम किया है तो उनकों भी इस अभियान से जोड़ने का प्रयास किया जायेगा।

इस सारे अभियान में आदरणीय नागराज जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन मिल रहा है। जीवन विद्या के प्रबोधन कार्य में लगे मित्र श्री साधन भट्टाचार्य (अमरकंटक), श्री गणेश बागड़िया (कानपुर), श्री सोमदेव त्यागी (रायपुर), श्री राम जी भाई (नासिक), श्री पवन गुप्ता (मसूरी) एवं अन्य साथियों के साथ चिंतन-मनन से इस प्रयत्न का स्वरूप उभर रहा है। इस अभियान को प्रयोगों द्वारा प्रमाणित करने की दिशा में कुछ अन्य केन्द्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

परिवार संस्थान, विहटा - बुलंदशहर :

**जीवन विद्या प्रतिष्ठान, बिजनौर :**

1992 में जीवन विद्या प्रतिष्ठा का स्वरूप गति लेने लगा। मानवीय शिक्षा के स्वरूप को लेकर यहाँ एक विद्यालय का संचालन भी किया गया, मूल्य आधारित शिक्षा के इस प्रयोग में विद्यालय में आश्चर्यजनक घटनायें घटी। अधिकांश लोग मानते है कि वातावरण का प्रभाव बच्चों पर पड़ता है लेकिन यहाँ के बच्चों का प्रभाव वातावरण पर पड़ने लगा, बच्चें छुट्टियों में भी विद्यालय आने लगे। अभिभावकों का जुड़ाव भी शुरू हुआ। आई.आई.टी.दिल्ली के छात्रों हेतु भी जीवन विद्या शिवरों का संचालन डॉ.संजीव जैन (मैकेनिकल विभाग) के संयोजन में होता रहा। डॉ. आर.आर. गौड़,डॉ. यशपाल एवं श्रीमति सत्य का सहयोग सतत् मिलता रहा। नवंबर 2004 से केंद्र के रूप में भूमिका बदलकर यह प्रयास समाज आधारित खड़ा हुआ हैं। यहां डॉ. प्रकाश, श्री समरपाल जी, प्रशांत,तेजपाल,महराज सिंह समेत 10-12 साथी प्रमुख रूप से प्रयासरत है। पिछले दो वर्षो में निकटवर्ती शहरों एवं सौ गांवों के बीच इस सार्थक प्रयास के लिये लगातार संपर्क जारी है।

**जीवन जाग्रति केन्द्र, बिलारी- मुरादाबाद :**

इस केंद्र की शुरूवात श्री अशोक सिरोही जी के माध्यम से हुई। श्री अशोक जी इस अभियान में पिछले 10-11 वर्षो से जुड़े है। उन्हीं के प्रयासों से इस क्षेत्र के ग्रामीणों के साथ प्रत्येक सप्ताह नियमित संवाद किया जा रहा है।

**परिवार संस्थान, विहटा - बुलंदशहर :**

इस संस्थान की शुरूवात श्री भारत भूषण त्यागी जी के द्वारा की गई, जो लंबे समय से सामाजिक उत्थान के लिये प्रयासरत रहे। पिछले 9-10 वर्षों से मध्यस्थ दर्शन की रोशनी में स्थानीय युवाओं एवं ग्रामीणों के साथ मानवीय व्यवस्था के लिये प्रयासरत है। इसके साथ संस्थान में जैविक खेती, मधुमक्खी पालन, बागवानी आदि भी गतिविधियांसंचालित है जिनके माध्यम से सैकड़ों युवाओं को स्वावलंबी बनाने का कार्यक्रम भी संचालित किया जाता है।

**मनुष्य संबंध को न समझ पाने के कारण दुखी हो रहा है, न कि साधनों की कमी से**

**जो जितना भ्रम और भय का पात्र है, उसने साधनों को सुखी होने के लिए उतना ही महत्वपूर्ण समझा है।**

**जीने दो और जीओ**

मध्यस्थ दर्शन

NIT Raipur Efforts - Magazine_c


**दिव्य प्रेम सेवा मिशन-हरिद्वार :**

लगभग 9 वर्ष पूर्व समाज से उपेक्षित एवं जिंदगी से जूझ रहे कुष्ठ रोगियों एवं उनके स्वस्थ बच्चों के लिए समर्पित अध्यात्म प्रेरित स्वैच्छिक सेवा संस्थान की भी इस अभियान में सक्रिय भागीदारी है। इस संस्थान के संस्थापक श्री आशीष गौतम एवं संयोजक श्री संजय चतुर्वेदी तथा अन्य साथी गण भी इस सामूहिक प्रयास का हिस्सा है।

**मानवीय शिक्षा संस्थान, बाँदा :**

दिव्य प्रेम सेवा मिशन-हरिद्वार :

इस संस्थान की नीव श्री प्रेम सिंह ने रखी। मानवीय व्यवस्था को साकार करने के इस अभियान में सामाजिक रूढ़ियों के साथ लगातार सही विकल्प को रखने का प्रयास प्रेम भाई ने स्थानीय ग्रामीणों के साथ किया है। जैविक खेती कें गुणवत्ता की पहचान देश-विदेश में प्रतिष्ठित कराने में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वस्थ मानवीय परंपरा को ध्यान में रखकर वर्तमान में संस्थान में विषैले रसायन रहित प्राकृतिक खाद्य सामग्री का उत्पादन किया जा रहा है।

इसके साथ ही अभियान में ऐसे भी कई लोगों की भागीदारी हैं, जो स्वप्रेरणा से अपने आस-पास के वातावरण में सही समझ को लोगों तक पहुँचाने में अपना तन-मन-धन लगाकर, समाज में प्रेरणा बने हुये है। ऐसे ही अहमद भाई एवं इकबाल हिन्दुस्तानी जो मुस्लिम फंड नाजीवाद (बिजनौर) संस्था के माध्यम से अभियान से जुड़े है। श्री कंचनवीर जी, श्री राजवीर जी, सरदार जगजीत जी, डॉ. जगदीश जी का भी एक मजबूत समूह जे.पी. नगर में उभर कर सामने आया है।

सर्वोदय के प्रमुख सदस्यों में श्री अमरनाथ जी (बनारस), श्री गंगा प्रसाद अग्रवाल जी (महाराष्ट्र), डा. सच्चिदानंद जी (हाथरस), श्री प्रसाद जी (हैदराबाद) आदि भी इस अभियान के सहयोगी बने है। गाय, गंगा एवं हिमालय बचाओं आंदोलन के प्रेरक एवं वरिष्ठ पत्रकार श्री अरूण कुमार जी, स्वास्थ्य चिंतन प्रतिरक्षण के परंपरागत विशेषज्ञ एवं जश्न-ए-गदर कमेटी (1857) के प्रमुख डॉ. ओंकार मित्तल जी (दिल्ली) भी इस प्रयास से जुड़कर अपनी भूमिका निभा रहे है। सहजीवन समूह, शहडोल (म.प्र.) एवं चित्रकूट (उ.प्र.) के सामाजिक कार्यकर्ता श्री गोपाल भाई के नेतृत्व में मध्यस्थ दर्शन को समझने एवं समझाने का प्रयास जारी है।

इन सभी साथियों के साथ यह अभियान निंबाध जारी है। जिसका संचालन स्वं स्फूर्त विधि से सभी लोग कर रहे है और इस कारवां को आगे बढ़ा रहे है।

**डॉ. रण सिंह आर्य**
पश्चिमी उत्तर प्रदेश
09412218178

**भोग अतिभोग को लक्ष्य बनाने के कारण मानव सुविधा-संग्रह के अंतहीन सिलसिले की ओर अग्रसर हुए। सबके सुविधा संग्रह के हविश को पूरा करने की सामग्री इस धरती में नहीं है, इसलिए यह हविश इस धरती को मानव के रहने के लायक नहीं छोड़ेगी। अतः सारे सुविधा संग्रह को प्रयोजन सम्मत करना जरूरी है।**

मध्यस्थ दर्शन


www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## विदेशों में भी जीवन विद्या संबधी गतिविधियों का क्रम जारी है।

मेरी शिक्षा ने मुझे किताबी ज्ञान तो दिया परंतु उसका वास्तव में कोई उपयोग नहीं हो पा रहा है। शिक्षण के जिस व्यवसाय से मैं जुड़ी हूँ उससे भी मैं खुश नहीं थी। क्योंकि मेरी खुशी का आधार उन रुपयों से था जो मुझे महीने के अंत में मिलते थे जो कि कम ही लगते थे क्योंकि मेरा सारा सुख उन भौतिक सुविधाओं से जुड़ा हुआ था जिन्हें मैं रूपये देकर पा सकती हूँ। इन मान्यताओं ने मेरी जिंदगी को इतना बनावटी बना दिया कि मैं जो बातें करती थी, वो ज्यादातर दूसरों से संबंधित होती थी, उन निरर्थक बातों से हंसी तो आती थी, पर खुशी नहीं मिलती थी। शिविर के पहले दिन मैंने महसूस किया कि कोई प्रवचन चल रहा है। साधु लोग आत्मा-परमात्मा कहते हैं ये पढ़े लिखे लोग हैं इनके कहने का तरीका अलग है इसलिए ये 'जीवन' के नाम से उपदेश दे रहे हैं लेकिन सही मायने में देखा जाये तो यहाँ आकर मेरा मुझसे परिचय हुआ है और लगा भौतिक सुख उतने महत्वपूर्ण नहीं है जितना कि मैंने मान रखा था। संक्षेप में रद्दी के भाव बेचने चली थी मैं अपनी जिंदगी को, आज महसूस हुआ मेरी जिंदगी ऐसी तो नहीं।

29.06.03

● बी. राधा शिक्षिका
दुर्ग

पिता के देहांत के समय, जाना कि शरीर नाशवान है, और जो कुछ इस शरीर के लिए साधन जुटाते हैं, सब यहीं रह जाता है, तब अपने आप से सवाल होने लगा, क्या यही जीवन है ? हम क्यों जी रहे हैं ? और मेरी जिंदगी असंतुलित होने लगी। जीने के प्रति लगाव कम होने लगा। शिविर के बाद शरीर और जीवन के अलग-अलग अस्तित्व को महसूस किया। साथ ही अपनी नासमझी के कारण हमारे संबंध कहाँ कमजोर हुए, कहाँ हमसे गलतियां हुई, कहाँ हम सुधार कर सकते हैं, अब मुझे ज्ञात हुआ है।

29.06.03

● सुरेश कुमार ठाकुर
दुर्ग

मैं सोचता था ये कोई हिन्दू आश्रम होगा और मैं तो मुसलमान हूँ उन लोगों के बीच मैं कैसे रह पाऊंगा कहीं कोई कुछ बोल न दे। यदि अच्छा नहीं लगा तो वापस आ जाऊंगा। अब यहाँ आकर यहाँकी शिक्षा को मैं अपनी जिंदगी में उतारने कोशिश करूंगा और अब मैं पूरी दुनिया के लोगों का सुख चाहता हूं। मैं इस दिशा में कुछ करना भी चाहता हूँ मैं इस देश और दुनिया से लड़ाई, झगड़ा, गरीबी, भ्रष्टाचार आदि बीमारियों को दूर करना चाहता हूँ। मैं और यहाँ आना चाहता हूँ और ज्यादा से ज्यादा शिक्षा लेना चाहता हूँ।

● मो. शेख जाहिद
रायपुर

सामाजिक कार्य करते रहना ये अभी तक के समय में अपनी तृप्ति का चरण बिन्दु है। पर इस शिविर के बाद लगा कि जब खुद की खुद को पहचान नहीं है तो ऐसे में सामाजिक कार्य इस स्तर पर जारी रहते हैं तो हम अव्यवस्था को बढ़ाने में मदद कर रहे हैं। पहले खुद को जाने पहचाने समझें। हमें पहले खुद को जानना शुरू करना है। अब भविष्य में मध्यस्थ दर्शन के अनुसार शिक्षा को प्रत्यक्ष रूप देने के कार्य में भागीदारी करना चाहूँगी।

● सुवर्णा योगेश सामाजिक कार्यकर्ता
सहजीवन शहडोल (म.प्र.)

गांधी जी के विचारों का प्रभाव साहित्य एवं पिताजी के माध्यम से कुछ-कुछ था। परन्तु व्यवहारिकता के धरातल पर साधनों को सीमित करने का कार्य नहीं हो पाता था। आस-पास का परिवेश प्रभावी हो जाता था। सुविधा से सुख नहीं, यह मूल मंत्र लेकर जा रही हूँ। आस-पास के परिवेश के प्रभाव से मुक्त होने का मार्ग भी दिखा।

● डॉ. वंदना सिन्हा काशी विद्यापीठ
बनारस (उ.प्र.)

किसी का प्रवचन सुना तो यही कि संयमित रहो, क्रोध मत करो, या मंदिर जाओ, प्रभु वंदना एवं ध्यान करो, सद्विचार ...........आदि। यदि नहीं कर पाये तो कुंठा के घेरे में कभी असफल हुये तो निराशा ही मिलती थी। शिविर के बाद ये सारे भ्रम टूटे। कुंठा, निराशा, असफलता जैसी नकारात्मकता को सही विचार मिला। एक सफल आदर्श एवं प्रमाणित जीवन विद्या का ज्ञान जीने के लिए मिला।

● रमेश बरू
रायपुर (छ.ग.)

शिविर के बाद मै अपने मन की भावनाओं को ठीक से पहचानने लगी हूँ। जिससे मेरा गुस्सा वाला भाव कम हुआ है। साथ ही मै अपनी बेटी पर जो संस्कारों का बोझ दे रही थी अब वह गलत साबित हो गया है।

11.9.2004

● श्रीमती ममता वैध
रायपुर (छ.ग.)

NIT Raipur Efforts - Magazine_c

छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में भी जीवन विद्या शिविरों का संचालन लगातार जारी है।इसी क्रम में चारामा(बस्तर) में श्री दिनेश जैन, कंचनपुर ग्राम में योगेश साहू एवं युवा साथियों के द्वारा उत्पादन गतिविधियों एवं ग्रामीण शिक्षा में कार्य किया जा रहा है

हर मां - बाप की तरह हमने भी अपने तीनों बच्चों को सारे साधन और संस्कार उपलब्ध कराने की पूरी कोशिश की जो काफी हद तक सफल रही। पर पहली बार शिविर में लगा बच्चों को साधनों से ज्यादा इस समझ की जरूरत है।

• **बलबीर एवं सुनीता दत्ता**
कैम्ब्रिज लंदन

किसी भी दर्शन का विरोध किये बिना, अस्तित्व की वास्तविकताओं को समझा जा सकता है और पहले से बहुत व्यवस्थित रुप में जिया जा सकता है, ये विश्वास बना।

• **गोपाल भाई** अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान
चित्रकूट

अपना लक्ष्य कुछ ऐसा निर्धारित था कि दूसरों से आगे निकलना है। मगर कितना आगे निकलना है। पहुँचना कहाँ है ? कुछ पता ना था , मुझे अपने शिविर के बाद वो रास्ता दिखा जिसने मुझे मेरे मानव होने का अर्थ बता दिया। अब मैं अपने काम , समाज , परिवार और संपूर्ण अस्तित्व के संदर्भ में अपनी उपयोगिता को समझ पाया हूं। और मुझे इस बात की स्पष्ट संभावना दिखती है कि हम एक स्वस्थ समाज और एक सुव्यवस्था को पुर्नस्थापित कर सकते है।

25.7.2004

• **राघवेन्द्र सिंह ठाकुर** (Lect.)
RIT, Raipur

परिवार में सही तालमेल नहीं होने के कारण अशांति बनी हुई थी। माता-पिता के अच्छे संस्कार की वजह से पूजा-पाठ और संतो की संगत आदि से कुछ शांति मिलती रही पर पूर्ण रूप से तनाव और परेशानी से छुटकारा नही मिला। शिविर के बाद स्वयं के प्रति आत्मविश्वास जागृत हुआ है। मेरी उम्र 49 की हो रही है पर अब लगता है कि पूरी जिदंगी में ये सात दिन सबसे अच्छे गुजरें है। साथ ही जीवन विद्या को शिक्षा में एक कोर्स के रूप में जोड़ने की आवश्यकता है ताकि छात्रों को सुख समृद्वि पूर्वक जीने की दिशा मिल सके।

25.7.2004

• **दिलीप श्रीवास्तव**
Govt. Polytechnic College, Raipur

मैने अपने जीवन काल में कई प्रकार के अनेक शिविरों में भाग लिया है जिन्हें पारंपरिक भाषा में पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, एवंअध्यात्मिक विश्लेषण दिया जा सकता है। लेकिन जीवन के सभी आयामों से जुड़े प्रश्नों का समाधान जैसा मुझे इस शिविर में मिला वैसा कहीं नहीं मिला।

• **डॉ. अन्नपूर्णा गुरू गोस्वामी**
प्राकृतिक चिकित्सालय, रायपुर

जब मैनें नवांजोर परियोजना को समझा तो लगा , सच में एक नई सुबह लाई जा सकती है मुझे लगा कि मैं अपनी अभी तक के संचित ज्ञान को प्रयुक्त कर सच मैं अपनी उपयोगिता सिद्ध कर सकता हूँ। तथा समाज सेवा के द्वारा स्वयं को संतुष्ट कर सकता हूँ। पर सब कुछ वैसा नहीं था, जैसा मैने सोचा था जब समूह कुछ अच्छा करते तो मैं खुश हो जाता , जब कोई विश्वास को आहत करता तो मैं दुखी हो जाता, परंतु कारण स्पष्ट नहीं होता था।
जीवन विद्या शिविर में आकर इस प्रश्न का उत्तर मिला कि लोगों को धन से ज्यादा आवश्यकता उनकी समझ बढ़ाने की है। ताकि उनमें स्वयं के प्रति विश्वास आये और संपूर्ण व्यवस्था में भागीदारी को पहचान पायें। शिविर के माध्यम से किये जा रहे इस प्रयास से विकास की दशा एवं दिशा को समझ के साथ ऊंचाईयों पर ले जाया जा सकता है।

• **सुधांशु पाठक** ग्रामीण गरीबी उन्मूलन परियोजना
महासमुन्द

नवांअंजोर परियोजना में आने के बाद मुझे कई बार लोग कहते हैं कि मैडम सब लोग ऊपरी कमाई कर रहे हैं आप क्यों नहीं ? तो सभी को यह जवाब देती हूं कि मैं रिश्वत इसलिए नहीं लेती कि मुझमें लेने की ताकत नहीं है बल्कि इसलिए कि मुझे लेना नहीं है। मैं इस विचार में बहुत स्पष्ट हूं लेकिन कभी किसी क्षण में आत्मविश्वास थोडा डिग भी जाता है , जब लोग ये कहते हैं कि जिसको खाने को नहीं मिलता वो ही ऐसा कहता है। सार में कहा जाये तो जो मैं चाहती थी अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए इस शिविर के बाद उसको धरातल मिल गया है। और उसे प्रमाणित करने का रास्ता मिल गया है।

• **कु. नंदिनी देशपांडे** ग्रामीण गरीबी उन्मूलन परियोजना
बिलासपुर

गरीबी हटाने के लिए हमने भौतिक सुविधाओं के नाम पर ग्रामीणों को हीन भावना से ग्रस्त किया है। शिविर के बाद समझ में आया कि शिक्षा संस्कार, स्वास्थय संयम , वस्तु विनमय, उत्पादन कार्य, न्याय सुरक्षा योजनाओं के माध्यम से हम वास्तव में नवा अंजोर ला सकते हैं।

• **शीबा राबर्ट** ग्रामीण गरीबी उन्मूलन परियोजना
कोरबा



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

# Technology For Swarajya

We call ***Swarajya*** as the Natural Community or NC in short because it.is the natural way of humans living together as a self organised community. In N C, each and every person lives happily and harmoniously through mutual complimentarity. Complimentary with humans as well as with the entire. nature and with all the future and past generations. It is organised on the basis of the Principle of ***SahaAstitwa*** (SAP in short).

In the context ofNC, the SAP would imply that:

**1. Every human:**

**(a)** is well organised within oneself, that is, enjoys the happiness in ***Jivan*** and the health in the body. Such a person is a Natural Human at the Individual level (NI)

**(b)** lives in the Natural Family (NF) composed of severed NIs of various age groups, both the sexes and varied genetic heritage. Note that NIs could differ from each other only in age, sex, genetic heritage and the level of***Jagriti*** in ***Jivan*** In NF, children are in the transitory state of ***Jagriti*** while the adults are in the state of complete ***Jagriti.*** These differences are called the human diversity. Thus NF contains Complete Human Diversity.

**(c)** complements other NIs in NF both in terms of ***Jivan Jagritias*** as well as body health. Each one participates with enthusiasm and full responsibility in all family affairs according to ones age and sex in such a way so as to keep the family continuously functioning in a natural way for ever.

*As Einstein himself said, 'almost all scientists are economically completely depenent and 'the number of scientists who possess a sense of social responsibility is so small that they cannot determine the direction of research. The latter dictum applies, no doubt, to all specialists, and the task therefore falls to the intelligent layman.*

**2. The NF :**

**(a)** provides ***Nyaya*** to each of its member NI. Nyaya means ***Samadhan*** to the ***Jivan*** and health to the body.

**(b)** provides opportunity, facility and encouragement to each member for the complete unfoldment and deepest satisfaction.

**(c)** the NF lives in a Natural Village (NV). The NV is the natural organisation of several families living together in the mutually complementary fashion.

**(d)** participates in all the five dimensions of NV in order to make the NY continue to function in a natural way for ever.

**3. The Natural Village (NV):**

**(a)** provides opportunity facility and encouragement to each member NI for its complete unfoldment and deepest happiness.

**(b)** has five dimensions:

(i) Educational - Cultural System
(शिक्षा-संस्कार व्यवस्था)

(ii) Health - Discipline system
(स्वास्थ्य-संयम व्यवस्था)

(iii) Production - Work system
(उत्पादन-कार्य व्यवस्था)

(iv) Exchange - Storage system
(विनिमय-कोष व्यवस्था)

(v) Nyaya - Suraksha system
(न्याय-सुरक्षा व्यवस्था)

**(c)** participates meaning fully in the Natural Nation (NN) composed of many NV s organised together through the natural human constitution

**4. The Natural Nation:**

**(a)** Provides opportunity, facility and encouragement to each member NV in order to make it an ever prosperous and happier village.

**(b)** participates with full responsibility in the Natural World in order to make the world continue to function in a natural way forever.

Technical Education in the Light of Universal Values

5. **The Natural World:**

**(a)** provides opportunity, facility and encouragement to each and every Natural Nation to make them function in mutually complimentary fashion.

**(b)** interacts with nature in such a way that it:

(i) protects the entire nature

(ii) makes the nature flourish more and more for ever.

(iii) assures that all orders in nature on this earth continue to flourish in a perfect natural way.

(iv) makes the earth better for the coming generations.

Thus in brief, the Natural Community (Swarajya) is a well organised composition of and for happy people and rich nature all over the earth.

Each level of natural community protects and facilitates its lower level members and participates.meaningfully and responsibly at the higher level. That is, protects naturalness at lower level, complements at its own level and participates in higher level.

This is the SAP in the human context.

SAP provides a Natural Human ***Parampara*** on the entire earth from generation to generation. Each generation is more and more rich and beautiful and expresses its gratitude (कृतज्ञता) to previous generations, offers love ***(mamata)*** and care ***(vatslya)*** to the coming generations to assure ***Jagriti*** in ***Jivan*** and health in body.

NC is free of all the human and natural problems faced so far by the people and full of all the possible human aspirations and fullfilments.

You may wonder that this is too good to believe. Well, believe it or not, this is true as it is defined on the basis of SAP. It turns out that SAP governs not only human community but all orders of nature, infact, entire cosmos. Accordingly, on this earth the Parampara in all other orders of nature is already established, the human order is in transition phase which will be complete in near future, may be a few generations more. The description of the entire comos on the basis of SAP will be presented in some other article.

This clarity of SAP has been revealed to us by Shri Nagraj ji of Amarkantak. Swarajya could not be defined correctly without this principle. SAP not only defines NC but also provides the mechanism to establish it.

Having defined Swarajya (NC) let us come to the Science and Technology for Swarayja.

The Natural Science(NS) is the understanding of the nature on the basis of SAP. Note that conventional science is not aware of SAP. Instead it is based on uncertainity, probability, conflict, struggle and meaninglessness. It is worthless. Most of science is being done because it is an employment which is a modern form of slavery.

The natural science on the basis of SAP, reveals a different, complementary, co-operetive beautiful and meaningful picture of nature. It frees humans not only from ignorance but also shows the path of real freedom full of happiness and enthusiasm for all. It is worthwhile.

Natural Technology (NT) is the responsible and meaningful relationship of humans to the rest of the Nature. The NT provides:

(a) nourishment, protection and work forhuman bodies.

(b) protection and enrichment for nature.

(c) meaningful human-nature interactions.

NT integrates human order into the rest of the nature so as to provide happiness to humans and beautiful richness to the nature.

The conventional technology is for:

(1) victory over the nature

(2) exploitation of nature

(3) robbing the nature

*Direction of research, that the direction should be towards non-violence rather than violence; towards an harmonious co-operation with nature rather than a warfare against nature; towards the noiseless, low-energy, elegant, and economical solutions normally applied in nature rather than the noisy, high-energy, brutal, wasteful, and clumsy solutions of our present-day sciences.*

(4) Isolating the human from nature.

This is not surprising as conventional science interprets nature as conflicting, hazardous, challenging resource. It considers humans as greedy, arrogant and pleasure seeking consumers. The result is obvious. Poverty, sickness, alienation, frustration and wars on the human side and resource depletion, ecodisasters and pollution on the nature's side.

In reaction to it, ecotechnolgy, traditional technology, gaia technology, holistic technology tribal technology, vernacular technology, human technology, sustainable technology; environment friendly technology are being proposed.

With utmost humility and firm conviction we declare all these phrases hollow.

As conventional technology has been supported by and worked for the cruel wars (defence?) and greedy (economic?) trade, so do the proposed phrases. They both suffer from crisis-attitude' crisis of survival, and the fear of suffering.

Many technologies also evolved out of mysticism. The making of worship houses, human and animal sacrifices, dance and music in religious ceremonies, festivals, innumerable styles of worship, idols of gods and pilgrimages are some examples which gave rise to a variety of technologies. In the mystic consideration, one believes in the mysterious, supernatural reality and regards nature as some sort of illusion (less important), a bondage for the humans.

Whatever has been the basis of the conventional and proposed technologies, it has not been SAP. Therefore harmony and happiness could not be assured.

Some support humans against nature, others support nature against humans. Only SAP reveals the beautiful complementarity between humans and nature resulting into a harmonious and happy co-evolution.

Obviously the Natural Technology has yet to be evolved by humans. For this the basis of Natural Science has to be laid down. This can be done only by the Natural Humans ***(Jagrit Manav)*** as only they can understand the SAP. The present day humans are in ***pre-Jagriti*** state characterised by fear, greed and mysticism. They can be brought into the transitory state and then to the state of complete ***Jagriti*** through a well planned educational activity.

The preliminary effort in this direction is encouragein,g. Let us hope, soon the Natural community (Swarajya) will be established through the Natural Technology on the basis of the Natural Science following the cosmic Principle of SahaAstitwa. The humans will be freed from all kinds of miseries and nature will be well protected. All will be conflict free. The world will be naturalised with happy humans and ever fresh and rich nature.

May I invite you all to work for the Swarajya for our own happiness, for our children happines and for our ancestors. dreams to come true.

May only harmony prevail on this Earth.
May all of us be complete
May there be a parampara of completeness.
May we all live in the parampara.
May all be good all around.
May we all be happy
May we all be satisfied deeply.

**Late. Y.S. Satya**
**Centre for Energy Studies, I.I.T.D**

Sex education on basis of difference between I & body as explained by Somji very beautifully in the shivir, could be talked about on a regular basis to make the parents aware of the fact that they need to pass or this education to their children at the right age.

• **Rita Seth**
Gurgoun , Hariyana

Seeing in broad scene it is observed that the outcome of our society are scientists, Doctors, Enginees, Architects and not human beings.
I will provide one vision with a mission to students with them. I will clear the unwanted that is prevailing in the society and country.

• **Lect. Rahul Gedam,** Deptt. of E&C
C.E.C., Bilaspur

2.7.2006

...Kapur Efforts - Magazine_c

## श्री यशपाल सत्य : एक संक्षिप्त परिचय एवं दृष्टि

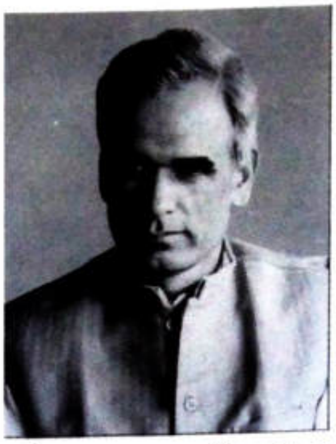

Technical Education in the Light of Universal Values

श्रद्धेय भाई यशपाल सत्य जी ने यह शरीर यात्रा 1949 में उ.प्र. के बिजनौर जिले के एक छोटे से गाँव मोहनपुर से शुरू की।

सत्य जी के एक शिक्षक ने उनके मन में यह बात बैठा दी कि विज्ञान से सत्य को जाना जा सकता है। बस फिर आप विज्ञान के पीछे दीवाने हो गये। हल्दौर (बिजनौर) से इण्टर, इलाहाबाद से बी.एस.सी., एम.एस.सी. तथा फिजिकल रिसर्च लेबोरेटरी, अहमदाबाद से प्रो. पी.के. काव के साथ प्लाज्मा फिजिक्स में पी.एच.डी. की। विज्ञान से सत्य मिलेगा, इस आकर्षण में आप 1976 में अमेरिका चले गये। अमेरिका में विश्व विख्यात वैज्ञानिकों का आपको सान्निध्य मिला। यहाँ आपने पाया कि विज्ञान की खोज युद्ध और व्यापार से प्रेरित है। अतः उनकी यह धारणा कि विज्ञान सत्य की खोज के लिये है टूट गयी। फिर वहाँ आप विभिन्न सामाजिक कार्यों एवं संस्थाओं से जुड़े।

अमेरिका में प्लाज्मा फिजिक्स में आपको नौकरी के अवसर प्राप्त थे। लेकिन आपने स्वदेश लौटकर अध्यापन कार्य के साथ समाज के लिये कार्य करने का मानस बनाया। दिसम्बर 1978 में प्रो. सोढा व प्रो. काव के मार्ग दर्शन में आप ऊर्जा अध्ययन केन्द्र, आई.आई.टी. दिल्ली आ गये।

मई 1988 में डा. एस.डी. शर्मा (प्लानिंग यूनिट, आई.आई.टी.,दिल्ली) ने योग क्लब के माध्यम से श्री ए. नागराज जी, अमरकंटक, को मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्व वाद) का एक सप्ताह का शिविर लगाने के लिये आमंत्रित किया, जिसमें आई.आई.टी. के अन्य साथियों के साथ सत्य जी ने भी हिस्सा लिया। प्रारम्भ में यह काफी दुरूह व शुष्क लगा, आपकी उनके दर्शन में रूचि नहीं बन पायी। अगस्त-सितम्बर 1990 में कुछ ऐसी घटनाएं घटी कि पू. नागराज जी से सुनी बातें आपको याद आने लगी तथा आपकी जांच में खरी उतरने लगी। प्रचलित दर्शनों का अध्ययन करते-करते आप स्वयमेव ही मध्यस्थ दर्शन के प्रति उत्साहित हो उठे। यह दर्शन आपको अधिक तर्कसंगत एवं सही लगने लगा। इस प्रकार जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन एवं मानवीयता पूर्ण आचरण के अध्ययन से स्वयंस्फूर्त उत्साह एवं प्रसन्नता का उदय होने लगा। सरल एवं सामान्य मनुष्य के रूप में जीने का कार्यक्रम आपके अन्दर बहने लगा। आपकी विशेषता रही कि जितना समझा उतना अपनी जिम्मेदारी पर, अपने शब्दों में व्यक्त किया।

मानवीय शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप कैसा हो, इस विषय पर आपने गम्भीरता से विचार विमर्श किया। संस्थान के Academic वातावरण में इस दिशा में चिन्तन एवं विश्लेषण का स्वाभाविक अवसर प्राप्त रहा। शिक्षा के माध्यम से छात्रों में समाज व प्रकृति के प्रति मानवीय दृष्टिकोण कैसे विकसित किया जाये इस ओर आपका निरन्तर शोध चलता रहा। आप अपना शिक्षण कार्य न केवल पूरी निष्ठा व लग्न के साथ करते थे बल्कि उसमें उपरोक्त दृष्टि का भी समावेश करने का भरपूर प्रयत्न करने लगे। लगन यही रही कि किस प्रकार वर्तमान शिक्षा को सार्थक एवंमानवीय बनाया जा सके। आई.आई.टी. दिल्ली में लगभग 18 साल के दौरान आपने अपने विषय से सम्बन्धित अनेक कोर्स पढ़ाने के अलावा कुछ नये समाजोपयोगी विषय जैसे Technology alternative for rural areas, Technology and community development & Energy and Environment, आदि के सृजन एवं पाठन के विशेष भूमिका अदा की। इस नयी अवधारणा को कार्यान्वित करने की सम्भावना के परिप्रेक्ष्य से ग्राम विकास केन्द्र से दो Ph.D. Thesis भी आपके संयुक्त मार्ग दर्शन में पूरी हुई। संस्थान के बाहर भी अन्य शिक्षण संस्थानों में इस प्रकार की गतिविधियों में आपकी सक्रिय भागीदारी रहीं।

विकास एवं जागृति हेतु डा. सत्य जी ने गोविन्दपुर (जिला बिजनौर) उ.प्र. में मित्रों के सहयोग से जीवन विद्याा प्रतिष्ठान की स्थापना की तथा अपने सहयोगी डा. रणसिंह आर्य को इसका कार्य भार सँभालने के लिये तैयार किया।

जीवन विद्या को जन-जन तक पहुँचाने के लिये श्री नागराज जी के जागृति अभियान में सत्य जी का ठोस योगदान रहा। सत्य जी ने देश भर में जगह-जगह अनेक शिविर प्रबोधित किये।

1993 में प्रो. आर.आर. गौड़ (यांत्रिकी विभाग) एवं डा. सत्य ने एक कार्य गोष्ठी का आयोजन आई.आई.टी. में किया। Engg. Curricula में मानवीय मूल्य समावेश करने के लिये जीवन विद्या नामक कोर्स की संरचना भी की।

26 जून 1997 को मालूम हुआ कि आप कैंसर रोग से ग्रस्त हैं। तब से शरीर छोड़ने तक सत्य जी की जो सहज स्थिति रही वह अद्भुत थी। बीमारी की गम्भीरता के अवस्था में आप लेखन कार्य में पूर्णतया रमे रहे। आपकी दिनचर्या 27 अगस्त दोपहर तक भी पूर्ण नियमित रही। उनकी इस सबल इच्छा शक्ति के कारण ही परिवार व मित्रजनों का मनोबल ऊँचा रहा। उनका शरीर पूरा होने पर उनकी भावानुसार उनके नेत्रों को दान कर दिया गया। जन्म-मरण को आप शुभ घटना मानते थे। आप कोई दिखावा नहीं रखते थे। कोई भेद-भाव, छोटा-बड़ा किसी को नहीं मानते थे। आपका व्यवहार सरल, मृदुल, सौम्य व स्नेह से भरपूर था। बच्चों व युवाओं के प्रति विशेष स्नेह रखते थे।

सत्य जी ने अमरकंटक (म.प्र.) में 22 मई से 28 मई 1997 का अपना अंतिम शिविर प्रबोधित किया जो अपने आप में एक ऐतिहासिक शिविर रहा जिसमें आपने स्वतन्त्रता एवं स्वराज रूपी मानवीय व्यवस्था को साकार करने के लिए शिविरार्थियों को प्रेरित किया। सत्य जी सत्यान्वेषी थे, क्योकि सत्य के लिये ही उन्होने अपना पूरा जीवन व्यतीत कर दिया।

आज जब सत्य जी सशरीर हमारे बीच नहीं रहे तो उनकी शुभ कामना, शुभ इच्छा व शुभ प्रेरणा ही याद आती है। उनके कार्यक्रमों को पूरा करना व आगे बढ़ाना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजली होगी।

डॉ.(श्रीमती) संतोष सत्य
विभागाध्यक्ष ग्रामीण विकास केन्द्र
आई.आई.टी.(दिल्ली)
फोन : 011-26591691



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

# शिक्षा में मानवीय मूल्यों की जरूरत अब पहले से अधिक

नवभारत समाचार

रायपुर. मानवीय मूल्यों में निरंतर ह्रास के कारण व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और धरती में बढ़ रहे संघर्ष को देखते हुए शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश की आवश्यकता गंभीरता से महसूस की जा रही है. इंजीनियर विकास रूपी गाड़ी के इंजन होते हैं. इस आशय के विचार अभ्युदय संस्थान अछोटी के प्रमुख राजन शर्मा ने प्रदेश के इंजीनियरिंग कालेज के प्राध्यापकों के सात दिवसीय जीवन विद्या शिविर के समापन के अवसर पर व्यक्त किये.

## इंजीनियरिंग शिक्षकों का प्रथम शिविर संपन्न

संसाधन केन्द्र की स्थापना की है. छत्तीसगढ़ इंजीनियरिंग कालेज रायपुर में इस राष्ट्रीय केन्द्र के मार्गदर्शन में मानवीय मूल्यों की शिक्षा का कार्य चल रहा है. इसी कड़ी में विगत 19 से 25 ... को इंजीनियरिंग शिक्षा से जुड़े प्राध्यापकों का मूल्य शिक्षा पर शिविर अभ्युदय संस्थान अछोटी में आयोजित किया गया. इस शिविर का उद्घाटन ... शिक्षा एवं पंचायत व ग्रामीण विकास मंत्री अजय चंद्राकर ने किया. शिविर का ... संचालन अभ्युदय संस्थान के प्रबंधक ... इंजीनियर सोमदेव त्यागी ने की.

# 21वीं सदी की सबसे बड़ी समस्या मानवीय मूल्यों का ह्रास

2/3/04

# Inclusion of basic e... alternative model: G...

## AYUSH to promote the same thr...

By Our Staff Reporter

THE former Head of the Department Mechanical Engineering IIT Delhi and presently founder member of the National Human Research Centre (NHRC) New Delhi Dr. R.R. Gaur informed that the HRD Ministry has accepted the need for including basic education in the existing education ...

# हरिभूमि

# भावी इंजीनियर सीख रहे हैं जीने का फलसफा

कॉलेजों व स्कूलों में भी पढ़ाया जाएगा मध्यस्थ...

# इंजीनियरिंग के छात्रों ने समझा गांव को

16.2.03 नवभारत

# प्राकृतिक वातावरण में स्वनिर्मित संसाधन सही जीवन की राह दें

## अभ्युदय संस्थान की स्वावलम्बन से जुड़ी अनोखी योजना- 'आयुष'

नई सोच

## अमरकंटक के ए. नागराज का चिंतन लेगा रेग्यूलर कोर्स का रूप

# भावी इंजीनियर अब पढ़ेंगे 'जीवन दर्शन'

## एनआईटी रायपुर के छात्रों का दल ग्राम मुरमुंदा आया

# छात्रों ने जाना गांव के बारे में

भास्कर न्यूज़•भिलाई, 10 मार्च। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (इंजीनियरिंग) कालेज रायपुर के ...

# छात्रों को जीवन जीने की कला बताई

स्टाफ रिपोर्टर

बिजनौर, 8 मई

ग्राम गोविंदपुर स्थित जीवन विद्या प्रतिष्ठान में आयोजित जीवन विद्या शिविर में आई. आई. टी. के छात्रों को जीवन जीने की कला की बारे में बताया गया।

शिविर में वक्ताओं ने कहा है कि ... आदमी धरती पर कहीं भी रहे समस्याओं से मुक्ति चाहता है, वह ... व समृद्धि से जीना चाहता है, यह वह पड़ोसी ... पास क्या-क्या हो, ... उसके पास पड़ोसी से ... सीखता है।

पहुंचाया। मानव ने प्रकृति, पर्यावरण, धरती आदि का सर्वाधिक शोषण किया ... उन्होंने कहा है कि समस्या तो आम ... के भीतर है। समस्या निवारण के लिए ...

# 'रैगिंग' ना बाबा ना

## इंजीनियरिंग के छात्रों के लिए उपयोगी साबित हो रही है 'जीवन विद्या'

रैगिंग के प्रकरणों में किया मजबूर

जीवन विद्या है अनिवार्य विषय

मुरमुंदा स्कूल में एनआईटी के छात्र।



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

# जीवन जीने का ढंग अपना

प्रकृति से मानव को मिले उपहार की भरपाई का माध्यम है अभ्युदय केंद्र. इससे जुड़कर जीवन का नया ढंग तलाशने वालों में छात्रों, देसी वैज्ञानिकों के अलावा विदेशी भी शामिल

विदेशी भी इस राह में

# साइंस व इंजीनियरिंग में दर्शन को शामिल करने की तैयारी

...र संवाददाता

...पुर, 15 फरवरी। साइंस और ...नीकी जैसे जटिल विषयों में ...पच्ची करने वाले विद्यार्थियों को ...न दर्शन से जोड़ने के लिए आयूष ...क्रम चलाया जाएगा। कार्यक्रम में ...कंटक के प्रसिद्ध दार्शनिक ए ...ाज के शिक्षा केंद्रित सिद्धांतों पर ...ारित शिविर ग्राम अछोटी (दुर्ग) ... अभ्युदय संस्थान में आयोजित ... जाएगा।

आईआईटी, नई दिल्ली में ...निकल विभाग के विभागाध्यक्ष डा. ...आर गौड़ ने बताया कि देश के ...कतर इंजीनियर विदेश चले जाते ...और डाक्टर निजी अस्पतालों के ...म से कमाई करने में जुट जाते हैं। ...वाकांक्षाओं की पूर्ति और पैसे के ...भागते-भागते डाक्टर-इंजीनियरों ... कि उनकी नौकरियों की कमी और बीई-एमई या एमबीबीएस जैसी डिग्रियों वालों की भरमार की वजह से युवा परेशान हैं। उन्होंने कहा कि 'आयूष' कार्यक्रम इन स्थितियों से निकालने का काम करेगा। कार्यक्रम में बताया जाएगा कि उनकी विशेषज्ञता का लाभ समाज को कैसे दिया जा सकता है। प्रयोग के तौर पर ग्राम अछोटी (दुर्ग) स्थित अभ्युदय संस्थान में तकनीकी और विज्ञान विषयों से जुड़े लोगों को बसाया गया।

इंजीनियरिंग कालेज के प्राचार्य राजेश पाठक ने कहा कि पाठ्यक्रम में ऐसा जीवन दर्शन शामिल किया जाए, जिसे विद्यार्थी सहज स्वीकार करें। छत्तीसगढ़ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान के डायरेक्टर एमएल नायक ने कहा कि जीवन दर्शन को लागू करने में कठिनाई आएगी लेकिन इसके परिणाम अच्छे मिलेंगे।

पत्रवार्ता में अभ्युदय संस्थान के ...

# तकनीकी के छात्रों को उद्यमी बनाएगा संस्थान अभ्युदय की भागीदारी

रायपुर, 15 फरवरी। पिछले छह ...से स्थापित अभ्युदय संस्थान द्वारा ...न एवं तकनीकी शिक्षा प्राप्त ...ों के लिए आयुष की स्थापना ...ई है जिसके माध्यम से तकनीकी ...से छात्रों में उद्यमी बनाने ...खास और आवश्यक ...की सख्त जरूरत है। ...व्यक्त करते हुए दिल्ली के ...जीवन विद्या के संबंध में ...र वार्ता में विस्तृत ...

...ने कहा कि अभ्युदय ...में अपनाई जा रही जीवन ...मान शिक्षा ...

एक ऐसे सार्वभौम शिक्षा प्रणाली को स्पष्ट करती है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के समृद्धिपूर्वक जीने ... होता है।

संस्थान द्वारा दर्श... नागराज (अमरकंटक) में नियमित रूप से शिविरों का संचालन हो ... किशोर, युवा दंपत्ति और ... सफल और सुखमय जीव... विज्ञान का अध्ययन करने ... हुए हैं। उन्होंने बताया कि ... कि रायपुर से ...

6-1-99 नवभारत

# सात विदेशियों ने जीवन विद्या का अध्ययन किया

रायपुर. जीवन विद्या, आयुर्वेद, योग एवं ज्योतिष के अध्ययन के लिये इंग्लैंड से आए सात ब्रिटिश नागरिक अपना अध्ययन संपन्न कर इंग्लैंड रवाना हो गये.

विगत 29 दिसंबर को 'जया पाठ्यक्रम' के अध्ययन के लिये इंग्लैंड से जूली हाकिंस, श्रीमती मारिया, श्रीमती मरियम मेलोनी, के. ... शाह, श्रीमती उषा शाह और डा. ... आये थे. इनका सर्वप्रथम संस्थान व्ही. आई. पी., रोड ...गा. जहां गायत्री शक्ति पीठ ... राजन शर्मा, सोमदेव त्यागी, कुमारी अर्चना दास ने जीवन विद्या, डा. ओम तिवारी, डा. पूर्णिमा बाजपेयी ने आयुर्वेद क्रियायोग के विशेषज्ञ कटक के श्री किशोरी बाबा एवं श्रवण दास ने योग एवं पार्थ राहा ने ज्योतिष के विभिन पक्षों पर प्रकाश डाला. भारतीय धर्म और संस्कृति के भी विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालते हुये राजन शर्मा ने सभी विदेशी नागरिकों से विधि विधान से कामनाओं की पूर्ति हेतु पूर्णिमा की रात्रि में यज्ञ भी संपन्न कराया.

इससे पूर्व अभ्युदय केन्द्र भटगांव में ... विदेशी मेहमानों को मानवीय प्रबंधन ... की योजना की जानकारी दी गई एवं ... पर्यावरण ऊर्जा टाइम्स के संपादक ... सिंघानिया के निवास पर तंत्र विशेषज्ञ ... से आये मनोरंजन मिश्रा ने तंत्र के चमत्कार दिखाकर सभी को चमत्कृ... दिया.

ब्रिटिश नागरिकों के इस दल का ... डा. दिवाकर सुकुल ने किया था ... लंदन के अति विशिष्ट क्षेत्र हारले ...

# अज्ञानता मनुष्य की एकमात्र स...

जीवन विद्या शिविर में बताए गए सार्थक जीवन जीने के गुर

# शिक्षा से मानवीय मूल्यों की वापसी हो

कल्याण महाविद्यालय में तीन दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में कुलपति डॉ. चन्द्रा के उद्गार

## Summary of the Meeting with the President at Hyderabad

A meeting was held with the President of India Shri APJ Abdul Kalam on 10th June 2006 at Hyderabad for about one and a half hours with Sri Rajeev Sangal, Sri Ganesh Bagaria, Sri Pawan Gupta, Sri R R Gaur, Sri Sadhan Bhattacharya, Sri Som Dev Tyagi, Maj. General Bagga(Retd.). This meeting was in continuation of the earlier meeting held in Delhi in 19 April 2006, at the end of which the President had expressed an interest in listening to Jeevan Vidya.

The meeting started by relating with concerns the President has for crime, violence, corruption and exploitation in society, strife in family, lack of satisfaction in self and imbalance in nature. President asked whether Jeevan Vidya can bring back joint family system. This was answered with yes. It was said that Jeevan Vidya addresses the self and draws attention to what is innate and intact in each one of us - need for human relationships, desire to seek knowledge and reach Tripti in self. It was also described how Jeevan Vidya has influenced people from all walks of life young children, students in engineering colleges, urban people, business men, social workers from NGOs, farmers and rural folk, criminals in jails, and people from spiritual background.

In the presentation on Jeevan Vidya, Ganeshji said that the source of societal and other problems is the lack of definiteness of Human Conduct. When the President asked what human conduct is, Ganeshji replied that it is what you really want to be, what is naturally acceptable to you i.e. your ***sahaj svikriti***. As it stands today, there is a struggle between what you are and what you really want to be. This we can see in each one of us.

President asked whether it is also true for criminals. Ganeshji replied in affirmative that it is the same for every human being. President asked how the human conduct can be same for all human beings. The answer given was that it is based on Sahaj Svikriti (or natural acceptance). This Sahaj Svikriti is same in all of us, it is something innate, intact in all of us, unaffected by all our pre-conditioning. **This led to discussion about the Self (I). Ganeshji explained it through several examples and said that under-evaluation of self (or I) leads to depression and over-evaluation leads to so called "ego".**

मैं पहले ऐसा सोचती थी मैंने अपने पति के कारण ऐसा कदम उठाया, और उसी कारण आज जेल में सजा काट रही हूँ और जब छूट के जाऊँगी तो बदला लूँगी। अब जीवन विद्या शिविर करने के बाद ऐसा लगता है कि हम स्वयं कहीं ना कहीं गलती किये हुए रहते हैं जिनकी ओर हमारा ध्यान नहीं रहता और हम अपने आप को हमेशा अच्छा ही समझते रहते हैं और गलती होने पर दूसरों को दोष देते रहते हैं। अब लगता है मैंने नासमझी में ही गलत कदम उठाये हैं।

● श्रीमती शैल कुमारी खरे उम्र-24
केन्द्रीय जेल, रायपुर

मुझे ऐसा लगता था कि जिन लोगों ने बेवजह मुझे झूठे आरोप से यहां पहुंचा दिया है, मेरी जिंदगी बरबाद कर दी है। उनसे बदला जरूर लूंगी। शिविर करने के बाद अब मन में किसी भी इंसान के प्रति बदले की भावना नहीं है। अब किसी बात पर गुस्सा भी नहीं आ रहा है। कभी-कभी जब मानव अमानव बनकर जानवरों जैसा व्यवहार करता है तभी क्रूरता, हीनता, दीनता पर उतर आता है और उससे लालच, अत्याचार, बुरे विचार आने लगते हैं, जिनका परिणाम शंका, दुख और अशांति ही मिलता है। मुझसे जाने-अनजाने, नामसमझी में कोई गलती हो गई हो तो भविष्य में अब कभी गलती नहीं करूँगी और अपने मानव जीवन को सफल बनाऊँगी। मैं चाहती हूँ जब तक समाज में हमारी तरह के लोग है तब तक जीवन विद्या शिविर चलते रहे।

● श्रीमती मिथलेश साहू उम्र-23
केन्द्रीय जेल, रायपुर

NIT Raipur Efforts - Magazine_c

President asked whether criminals would also be interested in knowing about it. Ganeshji talked about how the desire to know is innate in every human being irrespective of age, gender, cast or creed. He gave an example of a three year old child, who on being given the right inputs, became more definite than his elders.

President also touched upon the need for physical facilities. Ganeshji said that it is important to determine or work out the need for physical facilities. He gave an example from UP IAS officers where estimated average wealth (o f 300 of them)is eighty crores per person. It is important to ask whether they need this much money to fulfill their physical needs.

President asked as to how an individual can determine how much physical facilities he needs. Ganeshji replied that when the individual knows about self and the body completely, he will be able to fix his needs-of self (I) as well as body. President further asked what is meant by "completely", to which the answer given was that every human being has finite requirements (in terms of quantity) at the level of the body. However, the requirement of I (or self) for example, for respect is continuous in time and qualitative in nature. To understand the human conduct better, Ganeshji explained that there is a definite role every human being has at different levels - at the levels of self, family, society, nature and existence. Existence consisting of units and space appealed to the President.

President understood the core issues and concurred that this can be given to every individual through education-sanskar.

President was keen to know how we would deal with prisoners in a shivir. He was told that the basic material of shivir is the same for all audiences, and the process is that of self- investigation (self exploration) on the basis of sahaj svikriti which is innate and intact in every human being. President expressed desire that a shivir be conducted for prisoners so that he can observe the changes taking place in them. He asked whether we would be able to conduct a shivir for prisoners in Delhi, which he would witness. This was accepted by Ganeshji and Sadhan Bhaiya.

मुझे गाँजे के अपराध में जेल की सजा हुई है और लगता है जब यहां से बाहर जायेंगे तो समाज हमें घृणा की दृष्टि से देखेगा। शिविर करने के बाद यह जेल ज्ञान की पवित्र जगह बन गई है। अब अपनी गलती समझ में आई और लगता है, इतना सुंदर जीवन हमने व्यर्थ ही गंवा दिया पर अब बांकी जीवन को अच्छा व्यतीत कर दूसरों के लिये भी प्रेरणा बनना चाहती हूँ और में अपने वचन पर अडिग रहूँगी।

● मंजू शर्मा उम्र-36
केन्द्रीय जेल, रायपुर

मैं शम्भू दयाल भास्कर अपराधी धारा 302 का मुल्जिम हूँ और बिलासपुर जेल में हूँ। जीवन विद्या का जेल में प्रथम शिविर श्री साधन जी द्वारा 15.2.97 से 22.2.97 तक मैंने भी किया। उसके बाद श्री गणेश बागड़िया जी का शिविर 27.3.97 से भी किया। मेरा भाई जब मुलाकात में आया तो मैंने उससे एक रजिस्टर मंगवाया मानव व्यवहार दर्शन और परिवार मानव के सभी विषयों को रजिस्टर में उतार कर मैं नित्य अध्ययन करता हूँ और करण जी के साथ जेल के सभी बैरकों में नंबरवार निरंतर शिविर लगाता हूँ। मैं अकेला भी शिविर लगाता हूँ मैं जीवन विद्या में जुड़ा हूँ, मैं जेल में रहूँ या बाहर मैं जीवन विद्या अभियान का नियमित सदस्य बनना चाहता हूँ मैं जीवन विद्या को इस शरीर के रहने तक निरंतर समझता और समझाता रहूंगा। मेरा फैसला शीघ्र होने वाला है मैं अपने लड़के कमलेश कुमार के द्वारा 500 रूपये का मनी आर्डर करवा कर परिवार मानव का 20 वर्षीय सदस्य बनना चाहता हूँ।

● शम्भू दयाल भास्कर
केन्द्रीय जेल, बिलासपुर

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## चेतना विकास का अध्ययन तथा कार्यक्रम

गलती, अपराध, युद्ध कोई नहीं चाहता है। क्योंकि ये किसी को स्वीकार नहीं है। फिर भी भ्रम में मानव ये सब करता रहता है। जिस की स्वीकृति नहीं है, उसको करने के लिए मन परिस्थिति, मजबूरी, दूसरे भी करते है आदि के रूप में तर्क जुटाता है, किन्तु विचारों में द्वन्द्व बना ही रहता है, जो पीड़ा, क्लेश एवं दुख का कारण है। हम ध्यान से देखते है तो सारी गल्तियों, अपराधों का मूल कारण, अज्ञान एवं अभाव ही है। इससे मुक्त होना ही एक मात्र शरण है। और हर व्यक्ति मुक्त होना ही चाहता है। इसके लिए उपाय क्या है ? उपाय भी ऐसे होने चाहिए जो सर्व मानव के लिए हर देश काल परिस्थिति में व्यवहारिक हों। ऐसा उपाय है, जीवन विद्या, मध्यस्थ दर्शन की रौशनी में चेतना विकास का अध्ययन तथा कार्यक्रम। इनके प्रणेता आदरणीय ए.नागराज जी ने उद्घोष दिया स्वयंका मूल्यांकन कर लो अपराध गलती नहीं करोगें फलतः दुखी प्रताड़ित दरिद्र नहीं होगें।

उद्घोषों से तो हमारा पूरा साहित्य भरा है। लाखों करोड़ों ग्रंथ और किताबे उपदेशों से भरी है किन्तु आज तक मानव क्लेश कष्टों से मुक्त नहीं हो पाया फिर इस दर्शन में इस उद्घोष में विशेषता क्या है। विशेषता है इस दर्शन में समग्र अस्तित्व का विधिवत अध्ययन है शिक्षा विधि है, अभ्यास है, कार्यक्रम है, तथा फल परिणामों का मूल्यांकन है। जो किसी भी तर्क प्रश्न एवं समस्या का समाधान प्रस्तुत करता है। पूर्ववर्ती वादों में दो तरह के वाद प्रचलित रहे (1) ईश्वर केन्द्रित चिंतन, (2) भौतिकतावादी चिंतन। इन दोनों ही चिंतन धाराओं के मूल से मानव ओझिल है। किन्तु मध्यस्थ दर्शन मानव केन्द्रित अस्तित्व मूलक चिंतन है जिसके मूल में मानव है उसका अध्ययन है उसके लिए कार्यक्रम है तथा प्रमाण भी ग्रंथ या यंत्र न होकर स्वयंमानव ही है।

जब तक हमें समस्या की जड़ का पता नहीं लगता उससे मुक्त नहीं हो सकते वे रूप बदल-बदल कर सामने आते ही रहते है। समस्या की समझ नहीं होती, उसका अध्ययन नहीं होता। अध्ययन वास्तविकता का सत्य का होता है जिसकी रौशनी में भ्रम की समस्या की समीक्षा व्यक्तिवाद और समूदयवाद के रूप में होती है और वह स्वमेय समाप्त हो जाती है। अतः मानव से लेकर अस्तित्व तक की वास्तविकताओं का अध्ययन करना होगा, बोध होना, अनुभव होना होगा तभी हम क्लेशों, कष्टों से मुक्त होकर सुख, शांति, संतोष आनंद पूर्वक जी पायेंगे जो हम सबकी चाहत है। जो हर इंसान के लिए वरेण्य है। तभी यह धरती स्वर्ग होगी और नित्य शुभ, सुखद वातावरण का उदय होगा।

अंजनी अग्रवाल
अभ्युदय संस्थान
मो.: 93002-05120

भविष्य के लिए हम पूरे Electrical Students ने आज एक संगठन बनाया है जिसमें हम सभी activety participate करते हुए हर हफ्ते अपनी Branch के scope को जानेंगे और different projects पर practically विचार करते हुए काम करेंगे और इन सभी को एक magazine के जरिये सभी College Students और Teachers तक पहुंचायेंगे।

● तनु श्रीवास्तव B Tech.- Electrical
NIT, Raipur

मुझसे जो जुड़े हुए लोग है वो कहते थे कि मैं जैसा सोचती हूँ वैसा होना बहुत मुश्किल है। तेरी जैसी सोच किसी की हो ही नहीं सकती पर यहाँ आकर देखा तो लगा कि मेरी जैसी सोच रखने वाले और भी लोग हैं। मेरा सपना है कि मैं समाज की सोच को बदलते हुए देखना चाहती हूँ और इसमें अपनी भूमिका निभाना चाहती हूँ और शुरूवात अपने आस-पास के लोगों से करना चाहती हूँ। अपने गाँव को ही पहली सीढ़ी के तौर पर लेना चाहूँगी।

● हर्षिका नाग B Tech - CS
NIT, Raipur

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



## सह-अस्तित्व नित्य प्रभावी

मुझे पूज्य बाबाजी के सम्पर्क में आए हुए छः माह बीत चुके थे। बाबाजी दावा करते थे कि उन्हें सम्पूर्ण अस्तित्व सत्य ज्ञात है, सभी प्रश्नों के उत्तर उनके पास है। इसे सुनकर मैं अचम्भित हो गया। यह भी सुना कि उन्होने स्कूली शिक्षा बिल्कुल भी नहीं ली है। एक दिन मैने उनके विज्ञान के समझ को जानने के लिए पूछा कि बाबा जी पेड़ से फल नीचे (धरती) पर क्यों गिरता है ? उन्होने प्रति प्रश्न किया तो क्या फल को उपर जाना चाहिए ? मैंने कहा- हाँ फल उपर क्यों नहीं जाता ? नीचे ही क्यों आता है ?

उन्होंने उत्तर दिया- फल नीचे आकर उसका उपयोग होता है। मनुष्य, जीव जन्तु एवं कीटों का भोजन होता है। पेड़ के लिए खाद बनता है। फल का बीज पौधे के रूप में विकसित होता है, इससे फल वृक्ष की परम्परा बनी रहती है। यही कारण है।

इस उत्तर से मैं सन्तुष्ट नहीं हुआ। इसमें विज्ञान का भाग नहीं था। अतः मैंने पुनः स्पष्ट किया कि हम लोग विज्ञान में इस तरह समझे हैं कि पृथ्वी फल को खींचती है। इस कारण फल पृथ्वी में गिरता है।

उन्होंने पूछा कि फल को पृथ्वी खींचता है या फल खुद ही पृथ्वी की ओर दौड़ता है ? इसमें कौन सा ठीक है ? मैने कहा कि हम लोग समझते हैं कि दोनों एक दूसरे को खीचते हैं। बाबाजी ने पूछा- फिर फल पृथ्वी की ओर क्यों दौड़ता है ? पृथ्वी फल की ओर क्यों नहीं दौड़ती है ?

मुझे उत्तर नहीं सूझा तो उन्होंने पुनः पूछा कि हवा को पानी के भीतर डालने पर उपर क्यों आता है (बुलबुले के रूप में) ? नीचे क्यों नहीं जाता ? तुम्हारा गुरूत्वाकर्षण क्या करता है उस समय ? मैं गुरूत्वाकर्षण के द्वारा इसका सन्तोषजनक उत्तर दे नहीं सका। मुझे गुरूत्वाकर्षण में 'अपनी समझ पर' अविश्वास हो चुका था।

पू. बाबाजी ने उस समय एक सिद्धांत बताया- 'सह-अस्तित्व'। इस सिद्धांत के तहत प्रत्येक वस्तु किसी अन्य वस्तु के साथ रहती है। यह हर जगह प्रभावी है। हर समय प्रभावी है। सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति को स्पष्ट किया। इसी क्रम में स्पष्ट किया कि ठोस, ठोस के साथ रहना चाहता है। द्रव, द्रव के साथ रहना चाहता है एवं गैस, गैस के साथ रहना चाहता है। इसी कारण किसी ठोस वस्तु को ऊपर फेंकें तो वह पुनः पृथ्वी (ठोस) के साथ आ जाता है। ठोस वस्तु को यदि पानी में फेंके तो डूबकर तल (ठोस) के साथ स्थित हो जाता है। यदि यही ठोस लकड़ी जैसी हल्की वस्तु हो तो किनारे (ठोस) आ जाता है।

इसी प्रकार यदि पानी को धरती पर डाला जाय तो वह बहने लगता है। बहते हुए यह समुद्र तक पहुँचता है। समुद्र द्रव का विशालतम भण्डार है। यदि पानी धरती में गिरकर भीतर चला जाए (धरती सोख ले) तो भी यह भीतरी स्रोतों व रास्तों से समुद्र तक पहुँचता है। समुद्र ही गन्तव्य है। यही सभी नदियों एवंभूमिगत जल स्रोतों का कारण है। द्रव-द्रव के साथ रहने का प्रभाव है। यही बात पूरी तरह वायु (गैस) के लिये भी ठीक बैठती है। इसमें भी, एक प्रजाति की वायु, अपने प्रजाति के साथ रहती है। इसलिए यदि हाइड्रोजन जैसी गैस उपर उठकर अपनी जाति के पास पहुँचती है, कार्बनडाइ ऑक्साइड जैसी वस्तु (गैस) धरती की सतह पर रहती है। इस तरह से मैं चमत्कृत हो गया, परन्तु तब मुझे यही लगता रहा कि यह वैज्ञानिक उत्तर जैसा नहीं है। ठीक तो है ही। ठोस, द्रव, विरल जैसी वस्तु के साथ 'चाहने' जैसा शब्द ठीक नहीं है। तब पूज्य ने कहा कि "चाहने" माने प्रवृत्ति। धीरे-धीरे इस प्रकाश में मैं अन्य घटनाओं को देखने लगा। ऐसा लगता रहा कि कोई पुस्तक पढ़ रहा हूँ, जिसमें शब्द नहीं है, प्रकृति की पुस्तक सीधी पढ़ पा रहा हूँ।

**इस वार्तालाप के कई वर्ष हो गये, अब ऐसा लगता है कि फल गिरने का पहला उत्तर जो बाबा जी ने दिया था, वह प्रयोजन को व्यक्त करता है। फल का चारों अवस्थाओं के साथ सतत सम्बन्ध को व्यक्त करता है। इस मध्यस्थ दर्शन के प्रकाश में अर्थशास्त्र, समाज शास्त्र, मनोविज्ञान, संस्कृति, कला, इतिहास, विकास जैसे गुण शास्त्र, सहज हो गये। यह विश्वास हो गया है कि प्रत्येक व्यक्ति समाधान को पा सकता है। सही उत्तर सहित जी सकता है।**

**साधन भट्टाचार्य**
**अमरकंटक**
**09425544128**

जीवन विद्या शिविर संपूर्ण अस्तित्व को समरसता में व्यवस्थित कर पाता है। संपूर्ण अस्तित्व इतना व्यवस्थित है इसका एहसास ही खुशियाँ देता है।

● **अशरफ पाल सिंह** B.Tech.- Electrical
IIT, Delhi

पहले हम भ्रम में जीते थे कि हमारे लिए पैसा ही सब कुछ है, हम सोचते थे कि जनसंख्या और बेरोजगारी सबसे बडी समस्या है लेकिन शिविर के बाद पता चला कि सही समझ होने पर वर्तमान जनसंख्या दुगनी भी हो जाए तो भी बेरोजगारी और जनसंख्या जैसी कोई समस्या नहीं होगी।

● **सुमीत कुमार पंडा** B.E.-IT
G.E.C. Jagdalpur

**प्रतियोगिता का अर्थ स्वयं में , स्वयं से, स्वयं के विकास के लिए प्रक्रिया है , स्पष्ट हुआ। यह सूत्र व्यक्ति जीवन में अधिकांश तनाव दूर कर सकता है।**

● **अमित कुमार** B.Tech.- Electrical
IIT, Delhi

## Centre for Education in Universal Values

**It is now proposed to formally open a Centre for Education in Universal Values at NIT Raipur. The cell will coordinate the activities for imparting value education to engineering students under the guidance of MHRD and close coordination with NRCVEE, IIT Delhi.**

### The objectives of this cell will be:

- To organize value education courses on the basis of recommendations of NRCVEE.
- To make efforts for the development of resource materials for value education.
- To make efforts for the preparation of value education teachers..
- To undertake research projects in the area of rural technology and sustainable development involving the faculty mambers, students and rural community.
- To make efforts for the integration of education in human values in the mainstream curricula.

### Present Course of General Proficiency Classes

In continuation with these efforts National institute Technology organizing classes on General Proficiency in collaboration with Abhyudaya Sansthan Achhoti, aiming to improve the interpersonal skills of the students. To understand the issues all the students interact with the expert faculty in 100 minutes weekly class schedule and attend a residential workshop of one-week duration at Abhyudaya Sansthan. The course has been designed in consultation with, and on the basis of the course content developed by NRCVEE for conduction of value education classes. The content is based on unique philosophy of 'Madhyastha Darshan'. The course has been designed strictly according to the MHRD directive that such a course should be:

- A science, in the sense that it accepts only those facts and theories which are capable of being experimented upon and verified.
- Free from dogmas and rituals.
- Free from religious doctrine, mysticism.
- Having a sound logical and philosophical base
- Universally acceptable

अब मै कोई छोटे पैमाने का उद्योग खोलना चाहता हुँ, जिससे ना तो प्रकृति को कोई प्रदूषण होता हो और न ही समाज में किसी को अस्वीकार्य हो अर्थात कोई ऐसा उद्योग जिसमें प्रदूषण फैलाने वाले जो तत्व है उनका पुर्नचक्रण हो सके तथा दूसरों को भी रोजगार मिल सकें।

4.7.2004 — अजय कुमार नायक B.E-ET&T, G.E.C, Jagdalpur

शिक्षा के रूप में 20 सालों में क्या पाया तो लगा कि कुछ भी नहीं। अब किसकों दोष दें? लेकिन जीवन विद्या एक ऐसी विद्या है जिसमें सात सौ करोड लोगों के सभी प्रश्नों का उत्तर है। बस इसे सभी तक पहुँचने की देर है।

19.8.2004 — बृजेश अतरिया B.E-Elex, G.E.C, Jagdalpur

ऐसा लगा मानों कि मै अभी तक एक अंधेरी गुफा में चल रहा था। जिसका कोई अंत नहीं होता अगर इस शिविर में नहीं आता, इस शिविर में आने के बाद मुझें उस कहावत कि आँएखें खुल गई का मतलब समझ में आया।

4.7.2004 — अजीजुर रहमान कुरैशी B.E-ET&T, G.E.C, Jagdalpur

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

NIT Raipur Efforts - Magazine_c

Technical Education in the Light of Universal Values

## Course Objective

- Arousing awareness about essentiality of universal values for human happiness, prosperity, and balance in nature.
- Appreciation of complementarity of values and skills in all the pursuits.
- Providing a scientific and universally acceptable framework for human values by correct understanding of human reality and its inherent interconnectedness with the whole existence. The natural course of human evolution leading to sustainable peace, harmony, happiness and prosperity.
- Understanding the inherent harmony and mutual complementarity at various levels in existence, thereby engendering universal human values.
- To indicate ways and means of gaining a correct perception of life which becomes the prime goal of all human endeavor.

## Activities of the Centre

**To achieve the objectives of the Centre it will perform the following activities :**

1. Regular classes, seminars, workshops, lectures, counseling etc. on Human values.
2. Conduction of One month and Fifteen Days Course in Human Values and Holistic Development
3. Conduction of One year residential Post Graduate Course in Human Values and Eco Technology.
4. Publication of newsletter, journal, booklets etc on Human Values.
5. Research and Development projects in collaboration with like minded institutions.
6. To undertake research projects in the area of rural technology and sustainable to the and sustainable development involving the faculty members, students and rural community.

**Heena Chawda**
09300879601
**Nitin Tomar**
09329877858

सारी गतिविधियों को देख कर लगता है कि संस्कार एवं वातावरणवश विद्यार्थियों की समझने की तीव्रता में, अध्ययन विधि में भिन्नता दिखाई देती है। इतने बडे महाविद्यालय में हमारा प्रयोग आंशिक है फिर भी इन सारी परिस्थितियों के बावजूद परिणाम संभावना से अधिक ही नजर आता है। रैगिंग गतिविधियों में कमी, हर समस्या को जाँचने समझने का प्रयास, हमसे अपनी व्यक्तिगत समस्या की खुली चर्चा, एवं महाविद्यालय में उचित वातावरण निर्मित हो पाये इसके लिए सहयोगी होने की भावना को इनके बीच पाया जा रहा है। जिन विद्यार्थियों ने शिविर के दौरान इस दर्शन को सुनने में ध्यान कम एवं मस्ती में ज्यादा समय लगाया उन्हें क्लास में इसे ठीक से समझने के लिए प्रयास करते भी देखा है।

आज की युवा पीढी के पास ऐसा वातावरण एवं मंच उपलब्ध नहीं है जहाँ वे अपने मन की हर बात को जाँच सकें या कह सकें, जिससे वे स्वयं का सही मूल्यांकन कर सके (वास्तविक पैमाने में जाँच सके ) विद्यार्थियों को राहत लगती है जब उन्हें सफलता - असफलता , जीवन और जीने का लक्ष्य, विश्वास, सम्मान, स्नेह, न्याय, विकास , सुख-दुख,अमीरी - गरीबी जैसे अन्य कई शब्दों के वास्तविक अर्थ से उनका परिचय होता है।

• हिना चावडा EUV-Centre
NIT, Raipur

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## Activities of EUV-Centre

- CEUV has been coordinating the efforts for inculcation of universal humane values in the engineering students in the form of classes of 100 minutes duration for the third semester students of all the engineering branches. The Center also arranges one-week residential shivirs (workshop) for these students at Abhyudaya Sansthan. Apart from these, seminars and shivirs are organized for interested students from different semesters and disciplines.

- Orientation and refresher courses are conducted for faculty members of engineering colleges of the state.

- Seminar on "Present Crisis and Need for Humane Order" was delivered by Dr. Ran Singh Arya, Jeevan Vidya Pratishthan, Bijnaur, on 24 September 2006..

- A seminar on "Values and Journalism" at Kushabhai Thakre University of Journalism and Mass Communication was organized on 14 Ocotber 2006 under the presence of students, faculty members, Shri Shahid ali, Registrar Dr. A. K. Shukla and Vice Chanceller Shri S. Joshi.

- A seminar on sources of sustainable and renewable energy was organized in collaboration with Ujjwal Gaushala on 15 October 2006 to explore the methodology of sustainable living, use of sustainable energy sources, and to orient the engineering students for entrepreneurship in this area. Apart from engineering students and faculty members Shri Shailendra Shukla, MD, CREDA, Dr. Ashok Mishra, Agriculture Scientist, Govt. of India, Shri U. S. Ojha, MD, Cosmopower a manufacturing unit of alternate enegy sources, participated and shared their experiences.

## http://www.samadhan.org.in

**Purpose:** To introduce the concept of 'Samadhan'.
To make the sharing of experiences possible of people worldwide.
To make available the information which could lead to 'Samadhan'
To strengthen communication the among the 'Samadhan' community.

**Features:**
As a registered user you can avail the following benefits
1) Read and share life experiences of people,practicing Jeevan Vidya
2) Discuss with people theirs or yours own topic of discussion.
3) View Complete profile of all the users.
4) Establish a contact regarding 'shivir' dates and participation.
5) News regarding current events and development of the program.
6) Instantly send messages to other members of the community.
7) Image gallery section, where you can see the images of the events being held.
8) Blog section , Where you can maintain your personal and public journal.

For more information contact ......
**Shobhit Shrivastava,** 98261-22007,
**Saurabh Tiwari, 98272-73342**
**email : shobhit@samadhan.org.in**



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## A Journey to Sidh

A group of 22 members from the 'Samadhan' group under the EUV-Centre of NIT raipur, made a 17 day visit to an NGO called 'SIDH' located at mussoorrie, as a part of their learning program . The Visit lasted for 18 days i.e. from 10th may '06 to 27 may '06. SIDH is an NGO devoted exclusively to education , This quote from the SIDH website summarizes their direction of work **"Education is NOT just literacy... Textbooks are a MEANS, not an end... Education is NOT only about getting a job... It is about being able to lead a HAPPY and MEANINGFUL life."**

A few messages from group members would briefly explain the achievements of this visit.

A journey to sidh - 10th june to 27th june '06

**List of participants -**

Shobhit Shrivastava, Shubhankar Banerjee, Jyoti Sawar, Saurabh agrawal, Ankita Khilani, Pratishtha Thakur, Arunabh verma, Hitvallabh shukla, Sourabh tiwari, Richa mishra, Anant chaube, Abhay nath singh, Tanu Shrivastava, Rajvinder singh sidhu, K. Jagannath Rao, Harsha kashyap, Sonal keswani, Wali Mohammad, Vasu pandey, Neha Mittal, Randhir Pathak, Vibha Chandrakar, Mr. Kapil K Nagwanshi, (Lect. computer science), Miss Heena chawda , Sandeep Sharma EUV center

The visit of sidh was one of the most enriching experiences of my life .It gave new dimensions to look at the educational systems and Indian history.The pragmatic approach and meaningfulness missing in our present education system was beautifully shown to us by pawan sir.

• **Shubhankar** B.Tech C.S.
NIT, Raipur

Personally , This visit was a grand success for me , I found courage and 'AatmaVishwas' in myself after the camp .I am sure that this confidence in myself is eternal. Mr Pawan kumar gupta ji is a spring of inspiration and his talks are a pool of motivation. The visit to a village called 'dwargarh' was an experience of a life time which, I believe was more fascinating than anything I ever did.

My Acheivements:-

· I achieved a sense of self-belief and confidence within myself during the visit which is now a source of self motivation

· I saw a model of 'complete' school education in the light of human values which was acceptable for me .

• **Shobhit** B.Tech C.S
NIT, Raipur

NIT Raipur Efforts - Magazine_c



# शिक्षा में एक अभिनव प्रयोग

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला मुरुमुंदा , जिला दुर्ग में राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान रायपुर के सिविल ब्रांच के विद्यार्थियों ने जीवन विद्या शिविर के उपरांत स्वप्रेरणा से विद्यालय मे आर्थिक रुप से अपना योगदान देकर, सराहनीय प्रयास किया। दिनांक 8 मार्च 2006 को विद्यालय में उपस्थित सिविल ब्रांच के विद्यार्थी, विद्यालय के प्राचार्य श्री केशवराम साहू एवं अभ्युदय संस्थान के सदस्य ।

शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला मुरुमुंदा , जिला दुर्ग में राष्ट्रीय प्रौद्योकी संस्थान रायपुर के सिविल ब्रांच के विद्यार्थी।

मैं किसी को यह हक कभी नहीं देती कि मुझे इतने घंटे जबर्दस्ती बिठाकर अपने विचार मेरे सामने रखे इसके लिए एक ही उपाय सोचा था कि शिविर में सोऊंगी चाहे कोई कुछ भी कहे पर 6 दिन का यह शिविर पलक झपकते गुजर गया। अनुभव किया तो ऐसा लगा कि सोच का एक नया आयाम खुल गया। अपने आपके एक नए रूप से परिचय हुआ।

● फरहीन चिश्ती B.Tech.-E.T. & T
NIT, Raipur

स्कूल की बात मुझे याद आई, एक बार मेरी एक Friend ने मुझसे Slam book भरवाया उसके एक प्रश्न में था What is your aim in life ? तो मैने उसमें लिखा कि I want to be a good human being . मेरे दोस्तों ने उसे पढा और वे जोर से हसनेलगे और फिर मैने पूछा क्या हुआ ? तो उन्होने कहा क्या तू human being नही है ? ऐसा लगता है वह एक प्रश्न शिविर में आने के पहले तक घूमता रहा। यहाँ आकर जब मानव के स्वभाव और आचरण के आधार पर अलग - अलग रुपों में देखा तब मुझे अपनी लिखी बात बिलकुल सटीक लगी। मैं इस सही समझ को सभी लोगों को समझाना चाहती हूँ और यदि संभव हो सके तो मैं इस संस्थान से जरूर जुडना चाहती हूँ ।

12.3.05

● सुष्मिता दास B.Tech.-Comp. Science
NIT, Raipur

शिविर में आने के पहले मन में सवाल उठते थे कि "कोई कितना अच्छा दिखता है, उसके कपडे कितने अच्छे हैं, वो कितने अच्छे से सबसे बात कर लेता है मैं क्यों नहीं कर पाती, वो क्लास में कितना अच्छा जवाब देता है मुझे भी सब आता है पर मैं क्यों नहीं दे पाती। ऐसे मेरे मन में बहुत सारे सवाल उठते रहते थे। कभी-कभी मुझमें जलन (ईर्ष्या) की भावना आ जाती थी ऐसी बहुत सारी कमियां, बहुत सारे विचार मेरे मन में रहते थे। मैं हमेशा दूसरों को देखती थी कभी स्वयं को जानने की कोशिश नहीं करती थी। शिविर करने के बाद मेरे अन्दर आत्मविश्वास बढ गया है। अब लगता है कि मैं भी लोगों के सामने बोल सकती हूँ।

● नेहा जैन B.Tech.-I.T.
NIT, Raipur

मैं पहले दुनिया के कुछ बेमतलब रीति-रिवाज और गलत चीजों को ठीक करने की बातें और समाज को सुधारने के बारे में सोचती थी मैं ये सोचती थी कि मैं जो स्वयं कर रही हूँ सही है, मुझे बदलने की जरूरत नहीं है पर अब मुझे पता चला की मैं खुद ही सही नहीं हूँ मैं अब हर पल, हर परिस्थिति में खुद को जांचने की कोशिश कर रही हूँ।

● रश्मि पाठक B.Tech.-Mech.
NIT, Raipur

शिविर में आने के पहले आज तक मैंने मंच में आकर अपने विचार प्रकट नहीं किये मुझमें इतना साहस नहीं था कि मैं सबके सामने खडे होकर अपने विचार व्यक्त कर सकूं, मगर अब इस शिविर के करने के बाद मुझमें इतना विश्वास आ गया है कि अब मैं बाहर जाकर बेझिझक अपने विचार सबके सामने प्रकट कर सकता हूं, मैं इस संस्थान का अहसान हमेशा मानूंगा कि उसने मुझमें इतना साहस दिया, यदि मैं इस शिविर को नहीं करता तो मैं हमेशा लोगों के सामने बोलने से डरता ये बात मुझे पूरे जीवन भर खलती, मैं कहूँगा कि ये छः दिन मेरे जीवन के लिए अहम हिस्सा है।

● नरेश कुमार यादव B.Tech. C.S.
NIT, Raipur



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

Technical Education in the Light of Universal Values

शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय, जगदलपुर के छात्रों ने सामाजिक जागरुकता के कार्यक्रमों में भागीदारी देकर सराहनीय प्रयास किया ।

शासकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय, जगदलपुर के छात्र श्रमदान करते हुए ।

मुझे भय रहता था कि परीक्षा में नंबर दूसरों से कम ना मिल जाये । शरीर की संवेदनाओं को ही मैं प्रेम समझता था । यदि कोई समस्या आती तो समाधान के लिये दूसरों का मुँह ताकना, कभी स्वयं पर भरोसा ही नही किया । यही सोचता था कि मुझमें आत्मविश्वास की कमी है इसे बढाना चाहिये शिविर के बाद जिंदगी को देखने का नजरिया यह हुआ कि उनका समाधान मेरे भीतर ही मिल गया है ।

• **सरोज पति सिंधा** B.Tech.- ELECT.
NIT, Raipur

विचारों में सकारात्मक भाव, स्वयंके प्रति विश्वास और जीवन के प्रति जितनी जिज्ञासायें मन में थी उनमें से लगभग सभी जिज्ञासाओं के उत्तर को मैंने स्वयंकी जिम्मेदारी पर जांच कर जाना जिनसे मैं पूरे मन से तृप्त हूँ । मैं समाज के लिए कुछ करने का प्रयत्न करूँगी तभी मुझे मेरा जीवन एक सफल जीवन का अनुभव दिलायेगा ।

• **स्वाती के.एस.** B.Tech.- Biotech
NIT, Raipur

मेरा भविष्य के प्रति एक सकारात्मक नजरिया बना है । अब मैं हर वस्तु को सही - सही विश्लेषित करके देख पाती हूँ और आने वाली समस्याओं को स्वयं ही समझकर उनका समाधान कर सकती हूँ । मैं पूरी कोशिश करुंगी कि जब मैं Final Year में आँऊ तो इस बात को अपने Juniors तक भी पहुचाँऊ ।.
16.10.05

• **अंकिता खिलानी** B.Tech. C.S.
NIT, Raipur

कम से कम स्वयं को समझने के लिए एक जगह तो मिल गई है क्योंकि जब मैं यहां आया था तब आने की इच्छा ही नहीं थी पर इन 6 दिनों के बाद यहां से जाने का बिल्कुल भी मन नहीं कर रहा है । इस शिविर के 6 दिनों में मुझे जो दोस्त दिये हैं उन्हें मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा ।

• **डालेन्द्र चन्द्रवंशी** B.Tech.- C.S.
NIT, Raipur

यहां आने के बाद मुझे समझ में आया कि जो हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है मैं उसे ही छोड़ने जा रही थी अब मैं यह सोचती हूँ कि हम कितने भाग्यशाली हैं कि हमें इतनी बड़ी चीज को समझने जा रहे हैं । वो भी अभी जबकि कितने ही लोग जो हमसे काफी बडे हैं वो इसे समझ नहीं पाये हैं ।

• **स्मिता डडसेना** B.Tech. - Chemical
NIT, Raipur

यह एक ऐसा मंच है, जहां आप अपने आप और अपने विचारों को वैसा ही प्रस्तुत कर सकते हैं कि वो है । और यह हमारे वास्तविक व्यक्तित्व से परिचित कराता है । मैंने तीन शिविर किये हैं और हर बार अपने आप को स्वयं के ज्यादा नजदीक पाया है ।

• **रश्मि सिंह** B.Tech.- ELECT.
NIT, Raipur



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

NIT Raipur Efforts - Magazine_c

## ए. नागराज शर्मा - एक परिचय

आपकी शरीर यात्रा कर्नाटक प्रांत के अग्रहार ग्राम में 14 जनवरी सन् 1920 में घोर सेवाभावी, घोर परिश्रमी तथा उच्च कोटि के विद्वान परिवार में प्रारम्भ हुई। परिवार परम्परा में से अथक परिश्रम तथा सेवा भाव आपको स्वीकार हुआ। विद्वता के क्षेत्र में कुछ प्रश्न पैदा हए। जिनका उत्तर तत्कालीन विद्वानों, वेदज्ञों, ऋषियों एवंचिंतकों से नहीं मिला। इसी बीच देश को स्वतंत्रता मिली और संविधान बनने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। आपको उम्मीद थी कि संविधान में मानवीय आचरण सूत्र एवंव्याख्या होगी। किन्तु संविधान में भी ऐसी कोई व्याख्या नहीं थी। आपके प्रश्नों की पीड़ा इतनी धनीभूत होती गई और **मेरे प्रश्नों के समाधान प्राप्त करना मेरी जिम्मेदारी है** यह निर्णय कर समाधान ढूंढने सन् 1950 में अमरकण्टक आकर आपने विधिवत् समाधि के लिए साधना प्रारम्भ कर दी। साधना में प्रतिदिन 12 से 18 घंटे लगाते रहे। आपको बताया गया था कि समाधि में प्रश्नों के उत्तर मिलेंगे। 20 वर्षोंकी गहन साधना के पश्चात् समाधि की स्थिति प्राप्त हई। किन्तु प्रश्नों के उत्तर नहीं मिले। अब शंका हुई कि समाधि हुई है या नहीं। इसको जांचने के लिए संयम की स्थिति के लिए प्रयास प्रारम्भ किए। चूंकि संयम की स्थिति समाधि के बाद ही होती है। लगभग दो वर्ष पश्चात् आपको संयम हुआ संयम की स्थिति में समग्र अस्तित्व में व्यवस्था समझ में आयी। अस्तित्व सह अस्तित्व के रूप में समझ में आया

परमाणु में विकास, विकास क्रम, जागृति क्रम, जागृति, मानवीयता पूर्ण आचरण समझ में आया। गठनशील परमाणु से रचित जड़ प्रकृति तथा गठनपूर्ण परमाणु के रूप में जीवन एवंजीवन और शरीर के संयुक्त रूप में मानव का होना समझ में आया। शरीर को जीवन मानने के भ्रमवश मानव समस्त गलती, अपराध, शोषण, द्रोह, विद्रोह, युद्ध में प्रवृत्त होता है। जीवन बोध होने अस्तित्व की समझ होने पर मानव समाधानित होता है और मानवीय आचरण पूर्वक सुख की निरंतरता, परिवार में समृद्धि और समाज में अभय पूर्वक जी पाता है। इसको मध्यस्थ दर्शन मानव केन्द्रित सह अस्तित्ववाद नाम दिया है। इसको समझने वाला मानव है, समझकर प्रमाणित करने वाला मानव है। कुछ लोगों ने इसको समझने के पश्चात् जीवन विद्या शिविरों के माध्यम से इसको समझाना प्रारम्भ किया। जिसके परिणाम उत्साह जनक है।

**राजन शर्मा,**
अभ्युदय संस्थान
09301341425

ShriA Nagraj Sharma was born in Karnataka in 1920 and spent his early adult life as a successful industrialist. Certain questions regarding the purpose of human life and a meaningful way of living emerged in his mind from a young age; questions for which he did not find satisfactory answers from existing philosophical traditions. he spent 20 years persuing these questions.

Madhyastha Darshan emerged as a consequence of this quest and efforts, as an attempt to understand the truth of man, of nature, of existence.

Madhyastha Darshan offers a holistic perspective into the nature of reality and from that emerges an outline of a meaningful life for all human beings. Nagraj Sharma claims to have found solutions to all human questions and conflicts. On the one hand he offers answers to some unsolved issues in science and on the other hand he offers explaination for human consciousness, psychology and behavior.

Madhyastha Darshan is a teleological philosophy which profounds all of existence as being purposeful and harmoniously ordered. The nature of existence is that it is co-existential. Each entity within Existence (Matter, plants or animals) is organized in a harmonious order/arrangement and has a purpose (role to play) in the larger harmony of existence. Human beings are intrinsically such that they need to recognise their role in the larger order in order to fulfill it. Madhyastha Darshan seeks to provide an answer to their role/purpose in the larger Existential order. And human fulfillment will come out of recognizing that purpose and living in accordance with it. Nagraj Sharma a profound human consciousness to be a constitutionally saturated atom, which has the capability of understanding all of Existence, as well as the purpose of human life within it.

In the course of this quest he has come across a wide gamut of people ranging from renowned scientists to the Common Indian Villagers. This Philosophy 'Madhyastha Darshan' has been understood by some people who attempt to further communicate it via camps called 'Jeevan Vidya Shivir'. Nagraj Sharma himself now resides in Amarkantak (M.P.) with his family and spends his time writing books on Madhyastha Darshan and explaining his philosophical ideas with those who wish to understand them.



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

## संपर्क सूत्र

**रायपुर (छत्तीसगढ)**

| | | |
|---|---|---|
| रंजीत गाडोदिया | - | 09300255176 |
| बी.आर. अग्रवाल | - | 09425202989 |
| संकेत ठाकुर | - | 09300202642 |
| मंजीत सिंह | - | 09300204777 |
| कल्पेश बरू | - | 09300668538 |
| राजा गाडोदिया | - | 09827176540 |
| अनिल राठौर | - | 09300484677 |
| दिनेश राठौर | - | 09827147458 |
| दिनेश उपाध्याय | - | 09329493224 |
| **आंवरी, बस्तर (छत्तीसगढ)** | | |
| दिनेश कुमार | - | 07868-263650 |
| **बुलंदशहर (उ.प्र.)** | | |
| भारत भूषण त्यागी | - | 0941252825 |
| **मुरादाबाद ( उ.प्र.)** | | |
| अशोक सिरोही | - | 09927040232 |
| **कानपुर ( उ.प्र.)** | | |
| कुमार संभव | - | 09935602778 |
| विवेक चतुर्वेदी | - | 09312896737 |
| **बांदा (उ.प्र.)** | | |
| प्रेम सिंह | - | 09415557444 |
| **गजियाबाद (उ.प्र.)** | | |
| अमिताभ शुक्ल | - | 09810006150 |
| **बिजनौर (उ.प्र.)** | | |
| डा. प्रकाश | - | 09837033451 |
| **हरिद्वार (उ.प्र.)** | | |
| आशीष गौतम | - | 09837077677 |
| संजय चतुर्वेदी | - | 09837088910 |
| **बनारस (उ.प्र.)** | | |
| प्रवीण सिंह | - | 0542-2369146 |
| तेनजिंग रिंगजिंग | - | 09839115353 |
| **चित्रकूट (उ.प्र.)** | | |
| श्री गोपाल भाई | - | 09450221331 |
| **दिल्ली** | | |
| डॉ. संतोष सत्या | - | 011-26591691 |
| डॉ. संजीव जैन | - | 011-265591593 |
| **नासिक (महाराष्ट्र)** | | |
| रामजी भाई | - | 0253-2494417 |
| **मुम्बई (महाराष्ट्र)** | | |
| रेनू भाटिया | - | 09819176577 |
| **पूना (महाराष्ट्र)** | | |
| श्री राम | - | 09225528624 |
| **जयपुर (राजस्थान)** | | |
| इस्माइल टांक | - | 09414775134 |
| **भोपाल (म.प्र.)** | | |
| सुरेन्द्र पाठक | - | 09893403679 |
| **विदिशा (म.प्र.)** | | |
| सतीश सक्सेना | - | 09827440046 |
| **शहडोल (म.प्र.)** | | |
| सहजीवन समूह | - | 09425180901 |
| **बैंगलोर (कर्नाटक)** | | |
| राकेश गुप्ता | - | 98886346074 |

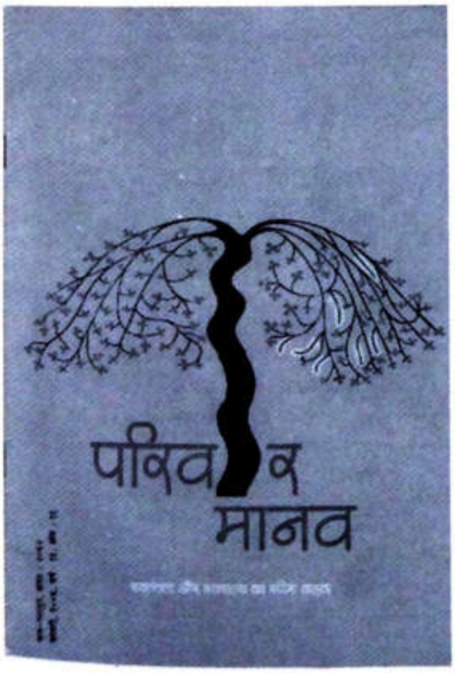


**परिवार मानव**
मध्यस्थ दर्शन आधारित मासिक पत्रिका

**संपादकीय कार्यालय**
परिवार मानव, 'सिद्ध'
हेजलवुड, लंढौर कैंट,
मसूरी - 248 179
फोन - 0135-2631304
Email: sidhshri@vsnl.net
sidhsri@sancharnet.in

**सदस्यता शुल्क**
भारत, नेपाल व भूटान में
वार्षिक - 100.00
आजीवन - 1000.00
आजीवन सहयोगी - 2000.00



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

# सर्वशुभ के अर्थ में आह्वान्

सर्वशुभ का अर्थ व्यक्ति में समाधान, परिवार में समाधान एवं समृद्धि, समाज में परस्पर अभय एवं प्रकृति के साथ सह-अस्तिव (तालमेल) पूर्वक जीने से है। यही हर मानव का लक्ष्य है। इसी लक्ष्य को साकार करना शिक्षा का दायित्व है। हर युवा, हर परिवार को शिक्षा से यही अपेक्षा भी है। लेकिन प्रचलित आधुनिक शिक्षा का फल सभी आयामों में तेज़ी से बढ़ती हुई समस्याओं के रूप में शिक्षा में परिवर्तन की बात समय-समय पर सुनाई देती रहती है। लेकिन शिक्षा का कोई सार्वभौम स्वरूप जो वर्तमान युग की सभी समस्याओं का व्यवहारिक समाधान प्रस्तुत कर सके, अभी भी प्रतिक्षित है।

मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद से सर्वशुभ को साकार करने हेतु मानवीय शिक्षा का स्वरूप स्पष्ट हुआ है। इसमें उपरोक्त सभी तथ्यों को अध्ययन करने की व्यवस्था तर्कसंगत, अर्थ संगत, शब्द संगत, अनुभव संगत एवं व्यवहार संगत विधि से प्रस्तावित हैं। हमने देश के विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में इसे भली प्रकार जांचा है। यह एक विकल्पात्मक घटना है।

सभी विश्वविद्यालय एवं विद्यालयों के मुख्य कर्णधारों से इसे अवगाहन करने की अपेक्षा और प्रमाणित करने की आवश्यकता के साथ यह आह्वान् है। मानवीय शिक्षा के स्वरूप को समझने के लिए सात दिवसीय जीवन विद्या शिविरों का आयोजन समय-समय पर होता रहता है।

## जीवन विद्या शिविर हेतु संपर्क सूत्र :

- **सोम देव त्यागी**-अभ्युदय संस्थान, रायपुर (छ.ग.) 093017-00400
- **समीर वाजपेयी**- एन.आई.टी. रायपुर (छ.ग.) 098261-67065
- **गणेश बागड़िया**- एच.बी.टी.आई. कानपुर (उ.प्र.) 09935-602778
- **डॉ. राजीव सांगल**- आई.आई.आई.टी. हैदराबाद (आ.प्र.) 040-23001412
- **पवन गुप्ता**- सिद्ध मसूरी (उत्तरांचल) 094111-44018
- **साधन भट्टाचार्य**- दिव्य पद संस्थान अमरकंटक (म.प्र.) 094255-44128
- **रणसिंह आर्य**- पश्चिम उ.प्र. 094122-18178
- **डॉ. आर.आर. गौड़**- आई.आई.टी. दिल्ली 011-26591054



www.madhyasth-darshan.info - Information Portal

# मध्यस्थ दर्शन आधारित वांग्ङमय

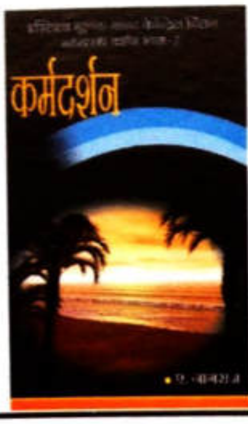


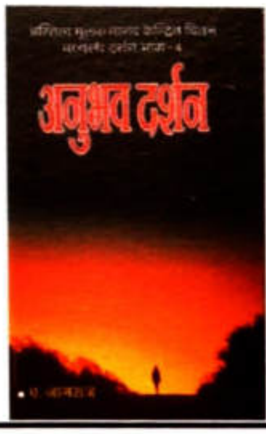


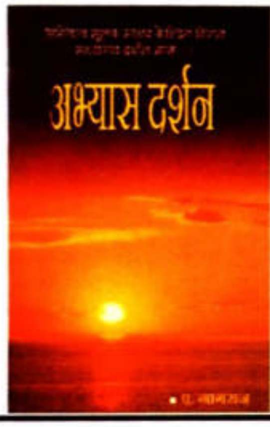

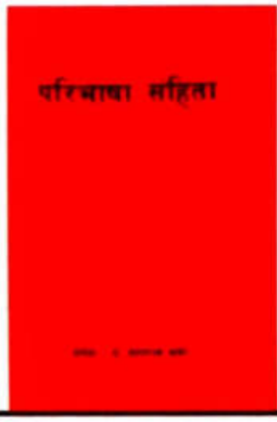

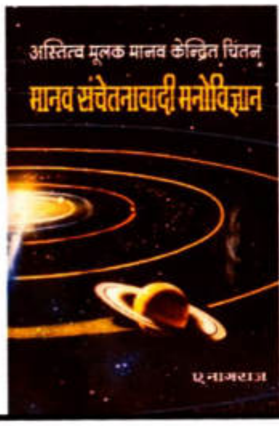


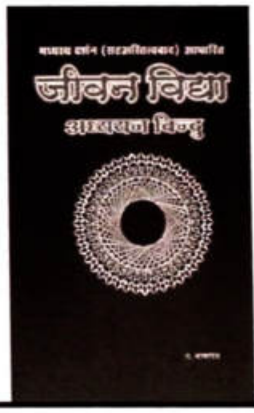


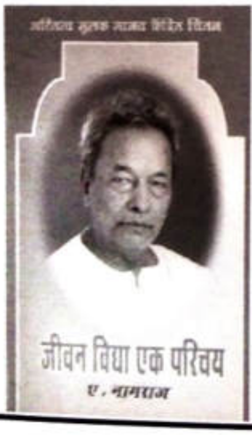


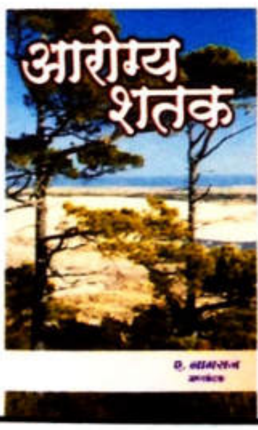


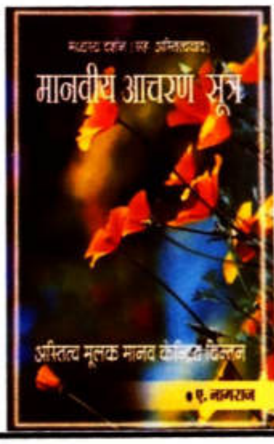

प्राप्ति स्थान- एन.एस.पौराणिक,रायपुर (छ.ग.)-0771-2428391

मैं निरंतर प्रसन्नता-उत्साह
का अनुभव करूं
मेरे शरीर में स्फूर्ति ताजगी हो
मेरी परस्परता तृप्त, समाधानित हो
अर्थात् मेरे साथी, सहयोगी, संबंधी
मुझसे आश्वस्त हों
धरती स्वस्थ समृद्ध हो,

•

मध्यस्थ दर्शन आधारित
चेतना विकास सम्मत्
मूल्य शिक्षा का तकनीकी शिक्षा में
समावेश हेतु यह अभिनव प्रयोग
उपरोक्त शुभकामनाओं को साकार
करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

•

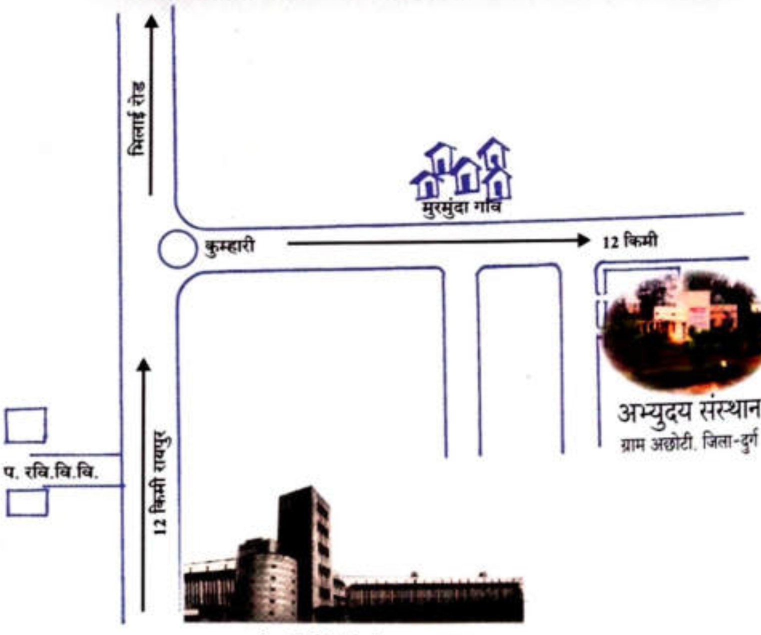


राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रायपुर

समाधान

Centre for Education in Universal Values
National Institute of Technology, Raipur
samadhan.org.in
0771-2255261,09826167065

www.madhyasth-darshan.info - Information Portal